

Unit	Topics	No. of Lectures
I	Psychology: Nature, Scope and Applications; Approaches: Psychodynamic, Behaviouristic, Cognitive, Humanistic & Indigenous Indian Psychology (with special reference to Shrimad Bhagwad Gita, Sankhya Darshan and Buddhism); Methods: Experimental, Correlational, and Observational.	45

अध्याय

1

मनोविज्ञान का परिचय

[INTRODUCTION TO PSYCHOLOGY]

**परिभाषा, प्रकृति/ स्वरूप, क्षेत्र एवं उपयोगिता/अनुप्रयोग
(Definition, Nature, Scope and Applications of Psychology)**

मनोविज्ञान का परिचय

(INTRODUCTION TO PSYCHOLOGY)

कोई भी विज्ञान आकस्मिक रूप में विकसित नहीं होता है। इसके विकास में अनगिनत विद्वानों, दार्शनिकों तथा वैज्ञानिकों का समरणीय योगदान होता है। वास्तव में, विकास की रोचक, विस्मयकारी और पठनीय कथा होती है। पुनर्जागरण काल में भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित, खगोलशास्त्र इत्यादि में तीव्र गति से विकास हो रहा था तथा वैज्ञानिक भू (पृथ्वी), भू-गर्भ (पृथ्वी के नीचे), समुद्र की गहराइयों तथा अनन्त आकाश की ऊँचाई को महत्वपूर्ण मानते हुए इनके विभिन्न आयामों पर अनुसन्धान करते रहे। तत्समय दर्शनशास्त्र के गर्भ में मनोविज्ञान रूपी शिशु शयन कर रहा था। धीरे-धीरे विद्वान मन की गहराइयों को महत्वपूर्ण समझने लगे एवं आत्मा तथा मन के विषय में चिन्तन प्रारम्भ किया।

डिमोक्रिटस (Democritus : 460-370 B.C.)
प्लेटो (Plato : 427-347 B.C.)
देकार्टे (Descartes : 1596-1650)
स्पिनोजा (Spinoza : 1632-1677)
लॉक (Locke : 1632-1704)
जेम्स मिल (James Mill : 1773-1835)
कान्ट (Kant : 1724-1804)
वेबर (Weber : 1795-1878)
गाल्टन (Galton : 1822-1911)

हिप्पोक्रेट्स (Hippocrates : 460-380 B.C.)
अरस्तू (Aristotle : 384-322 B.C.)
लाइबनिज (Liebnitz : 1646-1716)
हॉब्स (Hobbes : 1588-1679)
बर्कले (Berkeley : 1685-1753)
स्पेन्सर (Spencer : 1820-1903)
लॉज (Lotze : 1817-1881)
फेकनर (Fechner : 1801-1887)

इत्यादि दार्शनिकों, जीव वैज्ञानिकों, भौतिकविदों तथा अन्य विद्या के विद्वानों का मनोविज्ञान के विकास में योगदान रहा है। आधुनिक मनोविज्ञान का औपचारिक शुभारम्भ 1879 ई. में हुआ, जब शरीर क्रिया विज्ञानियों तथा अन्य वैज्ञानिक विधाओं से दीर्घकालिक यात्रा तय करता हुआ मनोविज्ञान उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त (1879 ई.) में विल्हेम मैक्सिमिलियन वुण्ट (Wilhelm Maximilian Wundt : 1832-1920) के पास जर्मनी पहुँचा, जहाँ लिपजिग विश्वविद्यालय (Leipzig University) में वुण्ट ने प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला (First Laboratory of Psychology) स्थापित की, जिसके कारण उन्हें प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के जनक/पिता (Father of Experimental Psychology) की संज्ञा से विभूषित किया गया। वुण्ट ने चेतन अनुभव के अवयवों (Components) अथवा संरचना

(Structure) को मनोविज्ञान की विषय-वस्तु स्वीकार करने पर बल-दिया। चेतना की संरचना के अध्ययन पर बल देने के कारण इस विचारधारा को संरचनावाद (Structuralism) कहा गया। प्रस्तुत सम्प्रदाय/स्कूल के विकास में टिच्नर का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, इसलिए इसे 'टिच्नरवाद' के नाम से भी सम्बोधित किया गया। अन्तर्दर्शन विधि के उपयोग के कारण मनोवैज्ञानिकों ने इसकी आलोचना करते हुए कालान्तर में इसे अस्वीकार कर दिया तथा नवीन विचारधारा को विकसित करने लगे।

नवीन सम्प्रदाय के समर्थकों के अनुसार मनोविज्ञान की विषय-वस्तु चेतना की क्रियाओं/कार्य (Function) तथा उपयोगिता का अध्ययन करना है। प्रकार्य पर बल देने के कारण इस विचारधारा को प्रकार्यवाद (Functionalism) कहा गया। प्रस्तुत सम्प्रदाय के व्यवस्थित संस्थापक तथा विकासकर्ता डेवी (Dewey : 1859-1952) तथा एंजेल (Angell : 1867-1949) रहे हैं। चेतन अनुभव के प्रकार्य अध्ययन के साथ समायोजन एवं व्यवहार पर बल देते हुए इस विचारधारा के मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान के क्षेत्र को विस्तृत किया।

वुण्ट के संरचनावाद के विरुद्ध, बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जर्मनी में एक नवीन विचारधारा को लेकर एक स्कूल की स्थापना की गयी, जिसे गेस्टाल्टवाद (Gestalt¹ School) के नाम से सम्बोधित किया गया। इसके प्रवर्तक मैक्स वर्दार्डमर (Max Wertheimer : 1880-1943) के अनुसार मानसिक क्रियाओं अथवा घटनाओं का पूर्ण (whole) रूप में अध्ययन करना चाहिए, न कि अंश (parts) के रूप में। गेस्टाल्टवादियों ने उल्लेख किया है कि सम्पूर्ण अनुभव/व्यवहार अपने अंशों (parts) के योग मात्र से अधिक होता है। वास्तव में, अनुभव समग्रतावादी अथवा पूर्ण/गेस्टाल्ट (Whole/Gestalt) होता है।

संरचनावाद की प्रतिक्रिया में एक और विचारधारा का उदय हुआ, जिसे व्यवहारवाद (Behaviourism) की संज्ञा दी गयी। इस स्कूल/सम्प्रदाय के व्यवस्थित संस्थापक जॉन ब्रॉडस वाट्सन (John Broadus Watson : 1878-1958) माने जाते हैं। व्यवहारवादियों ने चेतन अनुभव को मनोविज्ञान की विषय-वस्तु मानने पर आपत्ति करते हुए कहा कि चेतना का अध्ययन वस्तुनिष्ठ (Objective) रूप से सम्भव नहीं है, अतः चेतन अनुभव मनोविज्ञान की विषय-वस्तु नहीं हो सकता। मनोविज्ञान की विषय-वस्तु निरीक्षणीय (Observable) तथा मापनीय (Measurable) होनी चाहिए। प्राणी की अनुक्रियाओं (Responses) व्यवहार का मापन किया जा सकता है तथा वस्तुनिष्ठ (Objective) रूप में अध्ययन किया जा सकता है, अतः मनोविज्ञान को व्यवहार के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाना चाहिए। वाट्सन के व्यवहारवाद का गथरी (Guthrie : 1886-1959), हल (Hull : 1885-1952), टॉल्मैन (Tolman : 1886-1959), स्किनर (Skinner : 1904-1989) इत्यादि ने महत्वपूर्ण विकास किया।

प्रारम्भिक व्यवहारवाद के विकास के समय ही एक अपूर्व विचारधारा, जिसे मनोविश्लेषण (Psychoanalysis) की संज्ञा दी गयी, ने मानव चिन्तन को झकझोर कर रख दिया। चेतन के स्थान पर अचेतन (Unconscious) के अध्ययन को मनोविज्ञान की विषय-वस्तु मानने पर इस विचारधारा द्वारा बल दिया गया। सिगमण्ड फ्रायड (Sigmund Freud : 1856-1939) मनोविश्लेषणवाद के प्रवर्तक के रूप में जाने जाते हैं। इनके अनुसार अपूर्ति अथवा दमित इच्छाएँ अचेतन में चली जाती हैं तथा भविष्य में व्यक्ति के व्यवहार को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। कालान्तर में एल्फ्रेड एडलर (Alfred Adler : 1870-1937) ने वैयक्तिक मनोविज्ञान (Individual Psychology) तथा कार्ल जुंग (Carl Jung : 1875-1961) ने विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान (Analytical Psychology) का विकास किया।

मनोविश्लेषण की मूलप्रवृत्ति, द्वन्द्व, असामान्य एवं अचेतन व्यवहार पर बल दिये जाने सन्दर्भित विचारों तथा व्यवहारवाद के यान्त्रिक दृष्टिकोण (Mechanical Approach) का विरोध करते हुए मनोविज्ञान के 'तृतीय बल' (Third Force) का विकास हुआ, जिसे मानवतावादी मनोविज्ञान (Humanistic Psychology) कहा गया। यह विभिन्न स्कूलों के विचार का नवीन समन्वित प्रारूप है। प्रस्तुत विचार के समर्थकों में अब्राहम मैस्लो (Abraham Maslow : 1908-1970), कार्ल रोजर्स (Carl Rogers : 1902-1987) इत्यादि का नाम उल्लेखनीय है। मानवतावादी मनोविज्ञान मानव के

¹ Gestalt जर्मन भाषा का शब्द है, जिसका तात्पर्य पूर्ण/समग्र (Whole) है।

सकारात्मक/विधेयात्मक पक्ष (Positive Aspect), आत्म-सिद्धि (Self-actualization) तथा समग्रता के रूप में व्यक्ति के अध्ययन पर बल देता है।

* मानव को मशीन मानने की व्यवहारवादी विचारधारा की आलोचना करते हुए एक और आन्दोलन (Movement) उभरकर आया, जिसे अस्तित्ववादी मनोविज्ञान (Existential Psychology) की संज्ञा दी गयी। इसका मूल उद्देश्य मानव का एक ऐसे व्यक्ति के रूप में अध्ययन करना है, जो संसार में एक जीवित प्राणी के रूप में अपना अस्तित्व (Existence) बनाये रखने में सक्षम होता है। लुडविंग बिन्स्वैनर (Ludwig Binswanger : 1881-1966), मेडार्ड बॉस (Medard Boss : 1903—), रोलो मे (Rollo May : 1909—) इत्यादि मनोवैज्ञानिकों का अस्तित्ववादी मनोविज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है।

मानव व्यवहार को मात्र उद्दीपक तथा अनुक्रिया के रूप में व्याख्या करने के व्यवहारवादी दृष्टिकोण की आलोचना करते हुए मनोवैज्ञानिकों ने एक नवीन दृष्टिकोण को विकसित किया, जिसे संज्ञानात्मक मनोविज्ञान (Cognitive Psychology) की संज्ञा दी गयी। इसके अनुसार जटिल व्यवहार की व्याख्या हेतु उद्दीपक एवं अनुक्रिया के मध्य घटित संज्ञानात्मक अथवा मानसिक प्रक्रमों (Cognitive as Mental Processes) का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। जीन पियाजे (Jean Piaget : 1896-1980), नोम चोमस्की (Noam Chomsky), न्यूवेल एवं साइमन (Newell and Simon, 1956), सेलफ्रिज एवं निसर (Selfridge and Neisser, 1969) इत्यादि ने संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

मनोविज्ञान की परिभाषा

(DEFINITION OF PSYCHOLOGY)

मनोविज्ञान को अँग्रेजी भाषा में 'Psychology' कहते हैं, जो यूनानी (Greek) भाषा के दो शब्दों—**Psyche** (साइकी/साइके) तथा **Logos** (लोगस/लॉगोस) से मिलकर बना है। 'Psyche' का अर्थ आत्मा (Soul) तथा 'Logos' का अर्थ ज्ञान अथवा विज्ञान से है। इस प्रकार **Psychology** का तात्पर्य 'आत्मा का विज्ञान' (Science of Soul) है। आत्मा को देखा नहीं जा सकता है। आत्मा का वैज्ञानिक अस्तित्व न होने के कारण मनोविज्ञान को 'मन का विज्ञान' (Science of Mind) कहा गया। इस परिभाषा की भी पूर्व की भाँति आलोचना के फलस्वरूप मनोविज्ञान को 'चेतना का विज्ञान' (Science of Consciousness) कहा गया परन्तु इस परिभाषा को भी आलोचित करते हुए मनोविज्ञान को 'व्यवहार का विज्ञान' (Science of Behaviour) अथवा 'व्यवहार एवं अनुभव का विज्ञान', 'व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं का विज्ञान' (Science of Behaviour and Mental Processes), अभियोजन/समायोजन का विज्ञान (Science of Adjustment) इत्यादि कहा गया। मनोविज्ञान की परिभाषाओं का संक्षेप में निम्नांकित सारणी में अवलोकन किया जा सकता है—

मनोविज्ञान—एक दृष्टि

(PSYCHOLOGY: AT A GLANCE)

Psychology = Psyche (Soul) + Logos (Science)

मनोविज्ञान = साइकी (आत्मा) + लोगस (विज्ञान)

मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान है

♦ Psychology is the Science of Soul.

मनोविज्ञान मन का विज्ञान है

♦ Psychology is the Science of Mind.

मनोविज्ञान चेतना का विज्ञान है

♦ Psychology is the Science of Consciousness.

मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान है

♦ Psychology is the Science of Behaviour.

मनोविज्ञान व्यवहार एवं अनुभव का विज्ञान है

♦ Psychology is the Science of Behaviour and Experience.

मनोविज्ञान व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रम/

♦ Psychology is the Science of Behaviour and Mental Process/Cognitive Processes.

संज्ञानात्मक प्रक्रम का विज्ञान है

♦ Psychology is the Science of Adjustment.

मनोविज्ञान समायोजन का विज्ञान है

मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान (Science of Soul)—दर्शनशास्त्र से उद्भव के कारण मनोविज्ञान को सर्वप्रथम 'आत्मा' का विज्ञान कहा गया परन्तु मूर्त स्वरूप न होने की स्थिति में आत्मा का वैज्ञानिक अध्ययन सम्भव नहीं था, परिणामतः इस परिभाषा की आलोचना की गयी एवं इसका परित्याग कर दिया गया।

मन का विज्ञान (Science of Mind)—मनोविज्ञान को 'मन' का विज्ञान कहा गया। इस परिभाषा की भी उपर्युक्त परिभाषा की तरह आलोचना करते हुए उल्लेख किया गया कि 'मन' का वैज्ञानिक अध्ययन नहीं किया जा सकता है, अतः मन एक वैज्ञानिक विषय की अन्तर्वस्तु नहीं हो सकता है।

चेतना का विज्ञान (Science of Consciousness)—आत्मा एवं मन का अध्ययन करने वाले विज्ञान के रूप में आलोचना के पश्चात् मनोविज्ञान को चेतना अथवा चेतन अनुभव (Consciousness or Conscious Experience) का विज्ञान कहा गया। विश्व की प्रथम प्रयोगशाला के वास्तविक उद्घाटक, प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के जनक विल्हेम वुण्ट (Wilhelm Wundt) ने मनोविज्ञान को चेतन अनुभव (Conscious Experience) का विज्ञान माना। इन्होंने अनुभव को दो भागों—1. तात्कालिक अनुभव (Immediate Experience), 2. मध्यवर्ती अनुभव (Mediate Experience) में विभक्त किया है। वुण्ट के अनुसार मनोविज्ञान की विषय-वस्तु तात्कालिक अनुभव (Immediate Experience) है। तात्कालिक अनुभव का आशय स्वयं के अनुभव से था। वुण्ट ने चेतन अनुभव को दो मनोवैज्ञानिक तत्त्वों—1. संवेदना (Sensation), 2. अनुभूति/भाव (Feeling) में विश्लेषित किया है। संवेदना को वुण्ट ने चेतना का वस्तुनिष्ठ तत्त्व तथा अनुभूति को आत्मनिष्ठ तत्त्व माना।

उपरोक्त परिभाषा की अधोलिखित आलोचना की गयी—

- (i) चेतना का वैज्ञानिक स्वरूप नहीं है, अतः मनोविज्ञान की विषय-वस्तु नहीं हो सकती है।
- (ii) चेतना आत्मनिष्ठ/आत्मपरक (Subjective) है।
- (iii) दो व्यक्तियों के चेतन अनुभवों की तुलना नहीं की जा सकती है।
- (iv) पशु-अध्ययन उपेक्षित कर दिया गया है।

व्यवहार का विज्ञान (Science of Behaviour)—आत्मा, मन तथा चेतना का वैज्ञानिक स्वरूप न होने के कारण इन परिभाषाओं का परित्याग करते हुए कहा गया कि मनोविज्ञान की विषय-वस्तु प्रेक्षणीय/निरीक्षणीय (Observable) एवं मापनीय (Measurable) होनी चाहिए। प्राणी की क्रियाओं को देखा जा सकता है तथा मापा भी जा सकता है, अतः प्राणी की क्रिया अथवा व्यवहार को मनोविज्ञान की विषय-वस्तु माना जा सकता है। इस विचारधारा के प्रबल प्रवर्तक के रूप में जे. बी. वाटसन (J. B. Watson) का नाम उल्लेखनीय है। इनके द्वारा व्यक्त विचारधारा, पद्धति अथवा सम्प्रदाय या स्कूल को 'व्यवहारवाद' (Behaviourism) कहा गया।

वाटसन के अनुसार, "मनोविज्ञान व्यवहार का विधायक विज्ञान है।" इनके द्वारा व्यवहार की व्याख्या उद्दीपक (Stimulus : S) एवं अनुक्रिया (Response : R) के परिप्रेक्ष्य में की गयी है। अनुक्रिया से वाटसन का तात्पर्य उन सभी क्रियाओं से है, जिसे प्राणी करता है। इसके अन्तर्गत अर्जित/सीखी गयी (Learned), अनर्जित/जन्मजात (Unlearned), स्पष्ट/व्यक्त (Overt) तथा अव्यक्त/छिपी हुई (Covert) अनुक्रियाएँ सम्मिलित हैं।

वाटसन द्वारा मनोविज्ञान को 'व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान' कहते हुए 'व्यवहारवाद' की स्थापना की गयी। इनकी विचारधारा/परिभाषा की भी निम्नांकित आलोचनाएँ की गयीं—

(i) मनोविज्ञान के क्षेत्र को संकुचित करना—आलोचकों ने उल्लेख किया है कि चेतन तथा अन्तर्दर्शन विधि को अस्वीकृत करके वाटसन ने कई महत्वपूर्ण सूचनाओं को बाहर करते हुए मनोविज्ञान के क्षेत्र को सीमित कर दिया है। वुडवर्थ का विचार है कि वाटसन ने चेतन के अस्तित्व की उपेक्षा एवं वस्तुपरक (Objective) व्यवहार के अध्ययन पर आवश्यकता से अधिक जोर दिया है, जिससे संवेदना एवं प्रत्यक्षीकरण पर किये जाने वाले अनुसन्धान कार्य बाधित हो सकते हैं।

(ii) शाब्दिक प्रतिवेदन/रिपोर्ट (Verbal Report) विधि पर टिप्पणी—वाटसन ने अन्तर्दर्शन विधि की तो आलोचना की थी, परन्तु उसके स्थान पर शाब्दिक रिपोर्ट विधि का उपयोग किया था।

इसकी आलोचना करते हुए कहा गया कि यह एक प्रकार का अन्तर्दर्शन ही है। आर. एस. वुडवर्थ (Woodworth, 1948)¹ ने उल्लेख किया है कि "हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शाब्दिक रिपोर्ट एक व्यवहारवादी विधि नहीं है तथा वाट्सन द्वारा इसका उपयोग विधितन्त्रात्मक व्यवहारवाद हेतु पराजय की व्यावहारिक स्वीकृति है।"

(iii) आत्मनिष्ठ सम्प्रत्ययों (Subjective Concepts) का उपयोग करते हुए वस्तुनिष्ठता का समर्थन करने की आलोचना।

(iv) व्यवहार की व्याख्या में उद्देश्य (Purpose) की उपेक्षा की आलोचना।

वाट्सन की परिभाषा की अपूर्णता का उल्लेख करते हुए कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इंगित किया है कि इसमें अनुभूतियों (Feelings), अभिवृत्तियों (Attitudes) इत्यादि का समावेश नहीं हो पाता है, जबकि समर्थकों का कथन है कि 'व्यवहार' का व्यापक रूप में प्रयोग किया गया है। इनके अनुसार व्यवहार में आन्तरिक (Internal)/अव्यक्त पक्ष (अनुभव इत्यादि) भी सम्मिलित हैं, परन्तु आलोचकों के अनुसार स्पष्ट रूप से परिभाषा में इसका सम्मिलन किया जाना चाहिए। इसको ध्यानगत करते हुए मनोविज्ञान को निम्नलिखित रूप में परिभाषित किया गया—

व्यवहार एवं अनुभव का विज्ञान (Science of Behaviour and Experience)—मनोविज्ञान बाह्य/व्यक्त (Overt) व्यवहार के साथ ही अनुभव/भाव (Experience/Feeling) का अध्ययन है।

मनोविज्ञान की विषय-वस्तु के अन्तर्गत व्यवहार के अध्ययन के साथ मानसिक प्रक्रियाओं (Mental Processes) के समावेश पर बल देते हुए मनोविज्ञान को परिभाषित किया गया।

एटकिन्सन, एटकिन्सन एवं हिलगार्ड (Atkinson, Atkinson and Hilgard, 1983) के अनुसार, "मनोविज्ञान को व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में परिभाषित किया गया है।"²

मनोविज्ञान के व्यवहारवादी दृष्टिकोण की आलोचना करते हुए कहा गया कि उद्दीपक एवं अनुक्रिया के मध्य विद्यमान मानसिक क्रियाओं/संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का अध्ययन भी व्यवहार के साथ किया जाना चाहिए।

बैरन (Baron, 2001) ने उल्लेख किया है कि यदि 50 मनोवैज्ञानिकों से मनोविज्ञान के क्षेत्र को परिभाषित करने के लिए कहा जाए, तो सम्भवतः सर्वाधिक सहमत इस कथन पर होंगे कि "मनोविज्ञान व्यवहार एवं संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के विज्ञान के रूप में सर्वोत्तम रूप में परिभाषित किया गया है।"³

प्राणी के सकारात्मक पक्ष, समग्रता एवं समायोजन का विज्ञान (Science of Positive Aspect, Totality and Adjustment)—व्यवहारवाद के मशीनी दृष्टिकोण की आलोचना करते हुए मनोवैज्ञानिकों ने मानव के सकारात्मक पक्ष, आत्म-सिद्धि एवं सर्वांगीण रूप में अध्ययन को मनोविज्ञान की विषय-वस्तु माना है। मनोविज्ञान के वृहद् उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मनोवैज्ञानिकों ने उल्लेख किया है कि मनोविज्ञान व्यवहार का अध्ययन इस ध्येय से करता है कि प्राणी पर्यावरण (Environment) तथा स्वयं अपने (Self) साथ समायोजन कर सके। इस तथ्य के आधार पर मनोविज्ञान की परिभाषा 'समायोजन' (Adjustment) स्थापित करने वाले व्यवहार के विज्ञान के रूप में की गयी है।

एटकिन्सन, बर्ने एवं वुडवर्थ (Atkinson, Berne and Woodworth, 1988) के अनुसार मनोविज्ञान "मानव एवं पशु व्यवहार का विज्ञान, प्राणी का उसकी समस्त भिन्नता तथा जटिलता के रूप में भौतिक एवं सामाजिक घटनाओं की निरन्तर गति एवं परिवर्तन तथा प्रवाह के प्रति अनुक्रिया, जो पर्यावरण को निर्मित करती है, अध्ययन है।"⁴

1 "We may conclude that verbal report is not a behaviouristic method and that Watson's use of it is practically a confession of defeat for methodological behaviourism." —Woodworth, 1948

2 "Psychology is defined as the scientific study of behaviour and mental processes." —Atkinson, Atkinson and Hilgard, 1983.

3 "..... Psychology is best defined as the science of behaviour and cognitive processes." —Baron, 2001.

4 "The science of human and animal behaviour, the study of the organism in all its variety and complexity as it responds to the flux and flow of the physical and social events that make up the environment." —Atkinson, Berne and Woodworth, 1988.

उपर्युक्त विभिन्न परिभाषाओं एवं विवरण के आधार पर सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि मनोविज्ञान प्राणी के व्यवहार तथा संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का विधायक विज्ञान है, जो समग्र समायोजन में सहायक है।

मनोविज्ञान की प्रकृति अथवा मनोविज्ञान का स्वरूप *not रो लिखें हैं (NATURE OF PSYCHOLOGY)*

मनोविज्ञान की पूर्व प्रस्तुत परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि मनोविज्ञान प्राणियों के व्यवहार (आन्तरिक/अप्रत्यक्ष पक्षः अनुभव सहित) का विधायक (Positive) विज्ञान है।

उपर्युक्त कथन से मनोविज्ञान का निमांकित स्वरूप प्रतिबिम्बित होता है—

- (1) मनोविज्ञान एक विज्ञान (Science) है।
- (2) मनोविज्ञान विधायक (Positive) विज्ञान है।
- (3) मनोविज्ञान व्यवहार (Behaviour) का विज्ञान है।
- (4) मनोविज्ञान प्राणी अर्थात् मानव एवं पशु व्यवहार का अध्ययन करता है।

(1) मनोविज्ञान एक विज्ञान है (Psychology is a Science)—मनोविज्ञान का स्वरूप वैज्ञानिक है। विज्ञान की पद्धति प्रयुक्त करने के कारण यह वैज्ञानिक अध्ययन करता है। इसकी विस्तृत व्याख्या से पूर्व विज्ञान को संक्षेप में परिभाषित करना प्रासंगिक है। वास्तव में, व्यवस्थित (Systematic) ज्ञान ही विज्ञान है। विज्ञान वैज्ञानिक विधि पर आधारित होता है।

मैक्ग्यूगन/मैक्ग्यून¹ (Mc Guigan, 1969) ने समुचित ही लिखा है कि विज्ञान अर्थपूर्ण समस्याओं हेतु वैज्ञानिक विधि का उपयोग है।

किसी भी विषय को विज्ञान तभी कहा जा सकता है, जबकि उसमें विज्ञान के आवश्यक तत्व/विशेषताएँ विद्यमान हों।

विज्ञान के आवश्यक तत्व/विज्ञान की कसौटियाँ (Necessary Elements of Science/Criteria of Science)—विज्ञान के आवश्यक तत्व निम्नलिखित हैं—

वैज्ञानिक विधियाँ (Scientific Methods)—किसी भी विषय को विज्ञान की संज्ञा तभी प्रदान की जा सकती है, जबकि उसके द्वारा प्रयुक्त अध्ययन विधियाँ वैज्ञानिक हों। इस दृष्टि से अवलोकन करने पर विदित होता है कि मनोविज्ञान में प्रयोगात्मक, वैज्ञानिक निरीक्षण, सांख्यिकीय विधियों का अधिकाधिक उपयोग किया जाता है, इन विधियों में वैज्ञानिकता विद्यमान है, अतः मनोविज्ञान एक विज्ञान है।

वस्तुनिष्ठता/निष्पक्षता (Objectivity)—वस्तुनिष्ठता विज्ञान की अत्यावश्यक विशेषता है। वस्तुनिष्ठता का तात्पर्य है—वैयक्तिकता का कम-से-कम प्रभाव अर्थात् अध्ययनकर्ता की भावनाओं, रुचियों इत्यादि का प्रभाव न पड़ना, वस्तुनिष्ठता को सूचित करता है। मनोविज्ञान में अध्ययनकर्ता वैज्ञानिक विधि का उपयोग करता है, इसलिए उसमें वस्तुनिष्ठता की पर्याप्त सम्भावना होती है। बाह्य चरों पर नियन्त्रण करके स्वतन्त्र चर के प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। इसके आधार पर कहा जा सकता है कि वस्तुनिष्ठता की विशेषता से युक्त मनोविज्ञान एक विज्ञान है।

सत्यापनीयता/प्रमाणिकता (Verifiability)—किसी भी विषय को विज्ञान की संज्ञा प्रदान किये जाने के लिए उसमें सत्यापनीयता की विशेषता आवश्यक है अर्थात् अध्ययन को पुनः प्रतिपादित करके सत्यापन किया जा सकता है कि परिणाम-प्रवृत्ति पूर्ववत् है। मनोविज्ञान के सिद्धान्तों की बारम्बार प्रयोग करके पुष्टि की जाती है, अतः कहा जा सकता है कि मनोविज्ञान एक विज्ञान है।

सार्वभौमिकता/यत्र-तत्र सर्वत्रता (Universality)—विज्ञान के सिद्धान्त सर्वत्र (सभी जगह) सिद्ध होते हैं। इस दृष्टि से अवलोकन किया जाए तो विदित होता है कि मनोविज्ञान के विभिन्न सिद्धान्त, यथा—प्रयत्न एवं त्रुटि सिद्धान्त हर जगह (किसी भी जनपद, प्रदेश या देश में) लागू होते हैं। अतः मनोविज्ञान एक विज्ञान है।

¹ "Science is the application of the scientific method to meaningful problems."

पूर्व कथन/भविष्यवाणी की सामर्थ्य (Power of Prediction)—विज्ञान में पूर्व कथन की भी योग्यता अपेक्षित है। मनोविज्ञान में विभिन्न मानकीकृत परीक्षणों द्वारा व्यक्ति का मापन करके उसकी वर्तमान योग्यता, रुचि एवं व्यक्तित्व की जानकारी प्राप्त की जाती है एवं इसके आधार पर भविष्यवाणी की जाती है कि भविष्य में व्यक्ति किस क्षेत्र में सफल हो सकता है, किस परिस्थिति में कैसा व्यवहार कर सकता है। निर्देशन एवं परामर्शन इसका प्रमाण है। इस प्रकार मनोविज्ञान में पूर्व कथन की योग्यता विद्यमान है।

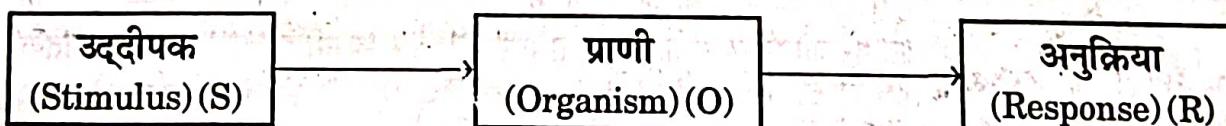
उपर्युक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि मनोविज्ञान में विज्ञान की आवश्यक विशेषताएँ हैं, अतः मनोविज्ञान एक विज्ञान है।

(2) **मनोविज्ञान एक विधायक विज्ञान है (Psychology is Positive Science)**—विज्ञान को विधायक (Positive) एवं नियामक (Normative), दो प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है। विधायक विज्ञान 'क्या है ?' पर बल देता है। इसके अनुसार ज्ञान अनुभव (Experience) एवं निरीक्षणपरक तथ्यों (Observable Facts) पर आधारित होता है। नियामक विज्ञान 'क्या होना चाहिए ?' पर बल देता है। यह व्यवहार के शुद्ध प्रतिरूपों (Correct Patterns) की खोज का प्रयास करता है, यथा—नीतिशास्त्र, तर्कशास्त्र इत्यादि। मनोविज्ञान निरीक्षणपरक तथ्यों पर बल देते हुए 'क्या है ?' की खोज करता है, अतः यह विधायक विज्ञान है।

(3) **मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान है (Psychology is the science of behaviour)**—मनोविज्ञान व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। व्यवहार अत्यन्त व्यापक है। व्यवहार का तात्पर्य प्राणी की किसी भी क्रिया (Activity) अथवा कार्य (Act) से है। तकनीकी रूप में 'प्राणी द्वारा की गयी कोई अनुक्रिया' ही व्यवहार है। एटकिंसन, बर्ने एवं वुडवर्थ (1988) ने मनोविज्ञान के शब्द कोष में व्यवहार की व्याख्या 'any response (s) made by an organism' अर्थात् प्राणी द्वारा की गयी किसी भी अनुक्रिया या अनुक्रियाओं के रूप में की है।

प्राणी के समक्ष उद्दीपक (Stimulus) प्रस्तुत होता है, सम्बन्धित ज्ञानेन्द्रिय (Sense Organ) उसे ग्रहण करती है, स्नायु आवेग (Nerve Impulse) की उत्पत्ति होती है, संवेदी स्नायु (Sensory Nerves) इसे मस्तिष्क (Brain) में ले जाती हैं। प्राणी के मस्तिष्क में इसकी व्याख्या (Interpretation) की जाती है तथा प्रभावक (Effectors) अर्थात् माँसपेशियों/ग्रन्थियों द्वारा प्रतिक्रिया की जाती है, इस प्रतिक्रिया अथवा अनुक्रिया को ही 'व्यवहार' कहा जाता है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि प्राणी की अनुक्रिया; उद्दीपक एवं प्राणी की विशेषताओं की अन्तर्क्रिया (Interaction) से प्रभावित होती है। सरलता एवं स्पष्टता हेतु निम्नलिखित आरेख अवलोकनीय है—



प्राणी की अनुक्रिया उद्दीपक की विभिन्न विशेषताओं के साथ ही प्राणी की संज्ञानात्मक, भावात्मक विशेषताओं तथा व्यक्तित्व से भी प्रभावित होती है। इस प्रकार कहा जा सकता है—

$$\text{अनुक्रिया} = \text{प्रकार्य} (\text{उद्दीपक}, \text{प्राणी})$$

$$R = f(S, O)$$

मनोविज्ञान 'उद्दीपक – प्राणी – अनुक्रिया' (Stimulus – S, Organism – O, Response – R) अर्थात् प्रचलित एवं संक्षिप्त रूप में मनोविज्ञान 'S – O – R' का अध्ययन है।

(4) **मनोविज्ञान प्राणियों के व्यवहार का अध्ययन है (Psychology is the Study of Behaviour of Organism/Living Things)**—मनोविज्ञान प्राणी अर्थात् मानव एवं पशु के व्यवहार का अध्ययन है। पशुओं (विशेषतः बन्दर, चूहा, कुत्ता, कबूतर इत्यादि) के व्यवहार का विशद अध्ययन मनोविज्ञान के अन्तर्गत किया गया है। पशुओं पर अध्ययन करके विभिन्न सिद्धान्तों का विकास किया गया। अनेक औषधियों/रसायनों का पशुओं पर ही सर्वप्रथम अध्ययन किया गया। सकारात्मक परिणामों का अवलोकन करने के पश्चात् मानव पर सम्बन्धित अध्ययन प्रतिपादित किये गये।

मनोविज्ञान का क्षेत्र (SCOPE OF PSYCHOLOGY)

पूर्व में विस्तारपूर्वक वर्णन किया जा चुका है कि मनोविज्ञान प्राणियों (मानव/पशु) के व्यवहार, अनुभव, मानसिक प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन है। इस प्रकार व्यवहार जिन सन्दर्भों में घटित होता है, उन्हें मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है। दूसरे शब्दों में, जहाँ-जहाँ व्यवहार है, वहाँ-वहाँ मनोविज्ञान का क्षेत्र है। इससे मनोविज्ञान की व्यापकता प्रतिबिम्बित होती है। प्राणी परिवार (समाज का सबसे छोटा रूप) में गर्भकाल, जन्म, बचपन एवं बाल्यावस्था में प्रवेश करते हुए पास-पड़ोस (समाज), विद्यालय, महाविद्यालय एवं विभिन्न संगठनों/संस्थाओं के सम्पर्क में आता है, व्यवहार करता है, समाज के सन्दर्भ में घटित होने के कारण इस व्यवहार के अध्ययन को 'सामाजिक मनोविज्ञान' के अन्तर्गत समाविष्ट किया जाता है। प्राणी के व्यवहार का आधार दैहिक/शारीरिक होता है। संग्राहक (Receptors), स्नायु-तन्त्र (Nervous System) तथा प्रभावक (Effectors) अर्थात् माँसपेशियों एवं ग्रन्थियों द्वारा प्राणी व्यवहार (अनुक्रिया) करता है। इनका विस्तृत अध्ययन 'शारीरिक मनोविज्ञान' (Physiological Psychology) के अन्तर्गत किया जाता है। पशु-व्यवहार का अध्ययन 'तुलनात्मक मनोविज्ञान'/'पशु मनोविज्ञान' (Comparative Psychology) के अन्तर्गत समाविष्ट है। मानव की मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन, मनोविज्ञान के जिस क्षेत्र के अन्तर्गत किया जाता है, उसे 'संज्ञानात्मक मनोविज्ञान' (Cognitive Psychology) की संज्ञा दी जाती है। मानव के विकास का अध्ययन 'विकासात्मक मनोविज्ञान', वैयक्तिक भिन्नता का अध्ययन 'भिन्नतापरक मनोविज्ञान' (Differential Psychology) अथवा परिमाणात्मक मनोविज्ञान' (Quantitative Psychology) के अन्तर्गत किया जाता है। असामान्य व्यवहार का अध्ययन करने वाला मनोविज्ञान का क्षेत्र 'असामान्य मनोविज्ञान' (Abnormal Psychology) के नाम से जाना जाता है।

मानव के जीवन में जहाँ-जहाँ व्यवहार है, वहाँ-वहाँ मनोविज्ञान है तथा उस क्षेत्र को उसी नाम से सम्बोधित किया जाता है, यथा—उद्योग-जीवन में व्यवहार का अध्ययन करने वाले मनोविज्ञान के क्षेत्र को 'औद्योगिक मनोविज्ञान', व्यापक रूप में विभिन्न संगठनों के अध्ययन के कारण 'संगठनात्मक मनोविज्ञान' तथा विशेषतः मानव-मशीन सम्बन्ध को समाहित करने वाले क्षेत्र को 'अभियान्त्रिक मनोविज्ञान' (Engineering Psychology) कहा जाता है। मनोविकारों के निदान एवं उपचार से सम्बद्ध क्षेत्र को 'नैदानिक मनोविज्ञान' (Clinical Psychology), शिक्षा सम्बन्धी व्यवहार-अध्ययन को 'शिक्षा मनोविज्ञान', 'परिवेशीय व्यवहार के अध्ययन को 'पर्यावरण मनोविज्ञान', खेल व्यवहार को 'क्रीड़ा मनोविज्ञान', सैन्य व्यवहार को 'सैन्य मनोविज्ञान, तथा राजनीति सम्बन्धी व्यवहार को 'राजनैतिक मनोविज्ञान' के अन्तर्गत समाविष्ट किया गया है। विभिन्न सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन करने वाला मनोविज्ञान का क्षेत्र 'अन्तर सांस्कृतिक मनोविज्ञान' (Cross-Cultural Psychology) के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

मनोविज्ञान के क्षेत्रों को मुख्यतः दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

1. **सैद्धान्तिक क्षेत्र (Theoretical Scope of Psychology),**
2. **व्यावहारिक क्षेत्र (Applied Scope of Psychology)।**

उपर्युक्त क्षेत्रों के अन्तर्गत सम्मिलित प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित सारणी में अवलोकनीय हैं—

सैद्धान्तिक क्षेत्र (Theoretical Scope)

- | | |
|----|--|
| 1. | दैहिक मनोविज्ञान (Physiological Psychology) |
| 2. | तुलनात्मक मनोविज्ञान (Comparative Psychology) |
| 3. | संज्ञानात्मक मनोविज्ञान (Cognitive Psychology) |
| 4. | सामाजिक मनोविज्ञान (Social Psychology) |
| 5. | विकासात्मक मनोविज्ञान (Developmental Psychology) |

6. व्यक्तित्व मनोविज्ञान (Psychology of Personality)
7. भिन्नताप्रक मनोविज्ञान (Differential Psychology)
8. असामान्य मनोविज्ञान (Abnormal Psychology)

व्यावहारिक क्षेत्र (Applied Scope)

1. नैदानिक मनोविज्ञान (Clinical Psychology)
2. औद्योगिक मनोविज्ञान (Industrial Psychology)
3. शैक्षिक मनोविज्ञान (Educational Psychology)
4. पर्यावरणीय मनोविज्ञान (Environmental Psychology)
5. क्रीड़ा मनोविज्ञान (Sports Psychology)
6. सैन्य मनोविज्ञान (Military Psychology)
7. राजनैतिक मनोविज्ञान (Political Psychology)

1. दैहिक/शारीरिक मनोविज्ञान (Physiological Psychology)—प्राणी के व्यवहार का आधार शारीरिक है। ज्ञानेन्द्रियों (Sense Organs), स्नायु तन्त्र अर्थात् विशेषतः मस्तिष्क एवं सुषुमा (Brain and Spinal Cord) तथा माँसपेशियों (Muscles) एवं ग्रन्थियों (Glands) की प्राणी के व्यवहार (अनुक्रिया) में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्राणी की विभिन्न मानसिक प्रक्रियाओं, यथा—ध्यान, प्रत्यक्षीकरण, अधिगम, स्मृति, चिन्तन, समस्या-समाधान इत्यादि के शारीरिक आधारों का अध्ययन मनोविज्ञान की इस शाखा के अन्तर्गत किया जाता है। विभिन्न प्रकार के जैविक/जन्मजात प्रेरकों, यथा—भूख, प्यास, निद्रा इत्यादि; संवेगों के शारीरिक आधारों इत्यादि का अध्ययन भी मनोविज्ञान की इस शाखा में किया जाता है।

2. तुलनात्मक मनोविज्ञान (Comparative Psychology)—मनोविज्ञान मानव एवं पशु दोनों के व्यवहार का अध्ययन करता है। कुछ प्रायोगिक अध्ययन खर्चाले एवं खतरनाक (Risky) होने के कारण मानव पर प्रतिपादित करने के पूर्व पशुओं पर किये जाते हैं तथा कालान्तर में समुचित सावधानियों को ध्यान में रखते हुए करते हुए मानव पर किये जाते हैं। पशुओं पर अध्ययन किये जाने के कारण इस क्षेत्र को 'पशु मनोविज्ञान' (Animal Psychology) भी कहा गया है। पशुओं, विशेषतः चूहे, बिल्ली, कुत्ते, कबूतर इत्यादि को प्रयोज्य के रूप में प्रयुक्त करके अधिगम, स्मृति, चिन्तन, समस्या-समाधान इत्यादि व्यवहारों को समझने का प्रयास किया गया है।

3. संज्ञानात्मक मनोविज्ञान (Cognitive Psychology)—पर्यावरण से प्राप्त सूचना/ज्ञान का ग्रहण, संचयन तथा पुनःप्रस्तुतीकरण का अध्ययन संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है। सूचनाओं के रूपान्तरण, उपयोग तथा सम्प्रेषण का भी इसमें समावेश है। प्रमुख संज्ञानात्मक प्रतिक्रियाएँ, यथा—ध्यान, प्रत्यक्षीकरण, अधिगम, स्मृति, तर्कना (Reasoning), समस्या-समाधान इत्यादि का विस्तृत अध्ययन मनोविज्ञान के इस क्षेत्र के अन्तर्गत किया जाता है।

4. सामाजिक मनोविज्ञान (Social Psychology)—सामाजिक सन्दर्भ (परिवेश) में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करने वाला मनोविज्ञान का क्षेत्र 'सामाजिक मनोविज्ञान' के नाम से जाना जाता है। सामाजिक अन्तर्क्रिया (Social Interaction) अर्थात् व्यक्ति (P)-व्यक्ति (P), व्यक्ति-समूह (P-G), तथा समूह-समूह (G-G) के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन इस शाखा के अन्तर्गत किया जाता है। इसके साथ ही, सामाजिक प्रत्यक्षीकरण (Social Perception), पूर्वाग्रह (Prejudice), अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण (Interpersonal Attraction), नेतृत्व (Leadership), सामूहिक मनोबल (Group Morale), सामाजिक अभिवृत्ति (Attitude), विभिन्न समाज-विचलित व्यवहारों (Socially Deviated Behaviour) तथा सामाजिक समस्याओं (Social Problems) का मनोवैज्ञानिक अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है।

5. विकासात्मक मनोविज्ञान (Developmental Psychology)—गर्भाधान से लेकर शैशवावस्था, बचपनावस्था (Babyhood), बाल्यावस्था (Childhood), किशोरावस्था (Adolescence), प्रौढ़ावस्था (Adulthood) तथा वृद्धावस्था में होने वाले विभिन्न विकास (शारीरिक, मानसिक, सामाजिक इत्यादि) को प्रभावित करने वाले कारकों तथा विकास के प्रभावों का अध्ययन विकासात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है। मानव की विभिन्न अवस्थाओं की समस्याओं का अध्ययन भी इसमें समाविष्ट है। (गर्भाधान से किशोरावस्था तक होने वाले विकास का अध्ययन करने वाले मनोविज्ञान की शाखा को 'बाल मनोविज्ञान' (Child Psychology) के नाम से सम्बोधित किया जाता है।)

6. व्यक्तित्व मनोविज्ञान (Psychology of Personality)—मनोविज्ञान की इस शाखा के अन्तर्गत व्यक्तित्व के स्वरूप, विभिन्न शीलगुणों (Traits), व्यक्तित्व के निर्धारकों (Determinants) तथा व्यक्तित्व-मापन का अध्ययन किया जाता है। सामान्य एवं विचलित, दोनों प्रकार के व्यक्तित्व का अध्ययन इसमें सम्मिलित है। व्यक्तित्व के वर्गीकरण (Classification) एवं सिद्धान्तों (Theories) का भी इसमें समावेश है।

7. भिन्नतापरक/परिमाणात्मक मनोविज्ञान (Differential/Quantitative Psychology)—व्यक्तित्व भिन्नता (Individual Difference), इसके विभिन्न रूपों/प्रकारों, कारणों (Causes) तथा प्रभाव (Effects) का विस्तृत अध्ययन मनोविज्ञान की इस शाखा के अन्तर्गत किया जाता है। वैयक्तिक भिन्नता के अध्ययन हेतु विभिन्न सांख्यिकीय/परिमाणात्मक विधियों का उपयोग किया जाता है; अतः इस क्षेत्र को भिन्नतापरक मनोविज्ञान अथवा परिमाणात्मक मनोविज्ञान की संज्ञा प्रदान की गयी है।

8. असामान्य मनोविज्ञान (Abnormal Psychology)—मनोविज्ञान की इस शाखा के अन्तर्गत असामान्य (सामान्य से विचलित) व्यवहार के स्वरूप, लक्षणों, प्रकारों तथा उपचार इत्यादि का सैद्धान्तिक अध्ययन किया जाता है, अतः इसे 'असामान्य/अपसामान्य मनोविज्ञान' कहा जाता है।

मनोविज्ञान के व्यावहारिक क्षेत्र

(APPLIED SCOPE OF PSYCHOLOGY)

1. नैदानिक मनोविज्ञान (Clinical Psychology)—यह मनोविज्ञान का विशिष्ट एवं अत्यन्त उपयोगी क्षेत्र है। इसमें वर्णित किया गया है कि मानसिक बीमारियों का कारण जादू-टोना, भूत-प्रेत इत्यादि न होकर आनुवांशिक तथा परिस्थितिजन्य (Hereditary and Situational) है, अतः इनका व्यवस्थित अध्ययन करके इन्हें दूर किया जा सकता है। मानसिक विकारों के निदान अर्थात् कारण एवं उपचार से विशेषतः सम्बन्धित होने के कारण ही मनोविज्ञान के इस क्षेत्र को 'नैदानिक मनोविज्ञान' कहा गया है। मानसिक बीमारियों के कारणों को ज्ञात करने के लिए विभिन्न निदानपरक विधियों का उपयोग किया जाता है तथा निदान के पश्चात् प्रासांगिक मनोचिकित्सा (Psycho-therapy) प्रयुक्त करके मनोरोगों को दूर करने का प्रयास किया जाता है।

2. औद्योगिक मनोविज्ञान (Industrial Psychology)—मनोविज्ञान की इस शाखा के अन्तर्गत उद्योग में कार्यरत व्यक्तियों के व्यवहार का विशेषतः अध्ययन किया जाता है, अतः इसे 'औद्योगिक मनोविज्ञान' की संज्ञा प्रदान की जाती है। वास्तव में, प्रस्तुत क्षेत्र के अन्तर्गत मनोविज्ञान के तथ्यों एवं सिद्धान्तों का औद्योगिक व्यवहार के अध्ययन में उपयोग किया जाता है। कार्य के विभिन्न आयामों (Dimensions), कर्मचारी के विभिन्न पक्षों/व्यवहारों, यथा-चयन (Selection), प्रशिक्षण (Training), प्रोलंति (Promotion), कार्य-सन्तोष, मनोबल, कार्य-प्रतिबल, दुर्घटना, हड्डताल इत्यादि; कार्य-दशाओं तथा उत्पादकता (Productivity) इत्यादि का विस्तृत अध्ययन मनोविज्ञान के इस क्षेत्र के अन्तर्गत किया जाता है। संक्षेप में, कार्य, कर्मचारी (श्रमिक, पर्यवेक्षक एवं प्रबन्धक) तथा उत्पादकता-सम्बन्धी व्यवहार का अध्ययन औद्योगिक मनोविज्ञान में समाविष्ट है।

3. शैक्षिक मनोविज्ञान (Educational Psychology)—शैक्षिक प्रक्रिया के अन्तर्गत सम्मिलित सभी प्रमुख इकाइयों (विद्यार्थी, शिक्षक, प्रधानाचार्य आदि) के शैक्षिक व्यवहार का विस्तृत अध्ययन

इसमें किया जाता है। विद्यार्थी-शिक्षक सम्बन्ध, शिक्षण-विधि, शिक्षण-प्रक्रिया सन्दर्भित समस्या; अधिगम, स्मृति, चिन्तन इत्यादि को प्रभावी बनाने के उपायों/कारकों का अध्ययन शिक्षा मनोविज्ञान में किया जाता है।

4. पर्यावरणीय मनोविज्ञान (Environmental Psychology)—मनोविज्ञान की इस शाखा में पर्यावरण के परिप्रेक्ष्य में किये गये मानव व्यवहार का अध्ययन किया जाता है, अतः इसे पर्यावरणीय मनोविज्ञान कहा जाता है। पर्यावरण के विभिन्न प्रमुख पक्षों, यथा—प्रदूषण, मौसम, भीड़-भाड़ इत्यादि तथा व्यवहार पर पड़ने वाले उनके प्रभावों का अध्ययन इसमें समाविष्ट है।

5. क्रीड़ा/खेल मनोविज्ञान (Sports Psychology)—मनोविज्ञान का यह क्षेत्र खेलकूद में मनोविज्ञान के तथ्यों एवं सिद्धान्तों के उपयोग से सम्बन्धित है। खिलाड़ी के निष्पादन (Performance) तथा मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health) को सम्बद्धित एवं संरक्षित करने हेतु मनोवैज्ञानिक कारकों की भूमिका के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जाता है।

6. सैन्य मनोविज्ञान (Military Psychology)—सैन्य अर्थात् थल, जल, एवं वायु सेना में मनोविज्ञान के तथ्यों, नियमों एवं सिद्धान्तों के उपयोग के अध्ययन से सम्बन्धित होने के कारण इस क्षेत्र को 'सैन्य मनोविज्ञान' की संज्ञा प्रदान की गयी है। सैन्य व्यवहार को समुन्नत बनाने के लिए मनोवैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है।

7. राजनैतिक मनोविज्ञान (Political Psychology)—मनोविज्ञान के इस क्षेत्र में राजनैतिक व्यवहारों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। विभिन्न राजनैतिक व्यवहारों में निहित मनोवैज्ञानिक कारकों को जानने का प्रयास किया जाता है। राजनैतिक नेतृत्व, दलबन्दी तथा दल-बदल इत्यादि का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण इसमें समाविष्ट है।

मनोविज्ञान के उपर्युक्त क्षेत्रों के अतिरिक्त अपराध मनोविज्ञान, अभियान्त्रिक मनोविज्ञान, सामुदायिक मनोविज्ञान, सांस्कृतिक मनोविज्ञान इत्यादि विभिन्न क्षेत्र हैं तथा उत्तरोत्तर इसके क्षेत्र में वृद्धि हो रही है। योग मनोविज्ञान, वायुदिक् मनोविज्ञान (Aero-space Psychology) इत्यादि मनोविज्ञान के अभिनव क्षेत्र हैं।

मनोविज्ञान की प्रयोजनता/उपादेयता (APPLICABILITY OF PSYCHOLOGY)

मनोविज्ञान की विभिन्न शाखाओं/क्षेत्रों के उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मनोविज्ञान की उपयोगिता है। व्यक्ति के गर्भाधान से लेकर जीवन-पर्यन्त जिन-जिन क्षेत्रों में 'व्यवहार' घटित होता है, उन सभी क्षेत्रों में मनोविज्ञान के तथ्यों एवं सिद्धान्तों का उपयोग है।

हिलगार्ड इत्यादि (Hilgard et. al., 1975) ने उल्लेख किया है कि मनोविज्ञान हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू (facet) को प्रभावित करता है। जैसे-जैसे समाज प्रगतिशील एवं जटिल होता गया, मानव की समस्याओं के समाधान में मनोविज्ञान की भूमिका भी बढ़ती गयी।¹

उपर्युक्त कथन तथा सामान्य अवलोकन के आधार पर कहा जा सकता है कि मनोविज्ञान की उपयोगिता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन को सम्बद्धित करते हुए जीवन को शान्तिमय एवं प्रभावी बनाना मनोविज्ञान का मूलभूत उद्देश्य है। इसकी उपादेयता को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है—

1. मानसिक चिकित्सा के क्षेत्र में मनोविज्ञान की उपादेयता—मानसिक रोगों की चिकित्सा के सन्दर्भ में मनोविज्ञान ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्राचीन मान्यता रही है कि मनोरोगों का कारण भूत-प्रेत अथवा अन्य अलौकिक शक्तियाँ हैं। मनोविज्ञान ने इस धारणा को खण्डित करते हुए यह विचारधारा स्थापित करने का प्रयास किया है कि मानसिक रोगों के आनुवांशिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक अथवा परिस्थितिजन्य कारण होते हैं। इनका निदान (Diagnosis) अर्थात् कारण का पता

1 "Psychology touches almost every facet of our life. As society has become progressive and complex, psychology has assumed an increasing important role in solving human problems."

लगाकर समुचित उपचार (Treatment) किया जा सकता है। असामान्य/मनोविकारग्रस्त व्यक्तियों की पहचान करके मनोविकारों की रोकथाम (Prevention) की जा सकती है। मानसिक विकारों को समझने के लिए विभिन्न नैदानिक विधियों का उपयोग किया जाता है। मनोविकारों के कारणों का पता लगाकर विभिन्न मनोचिकित्सकीय विधियों, यथा—मनोविश्लेषण, व्यवहार-परिमार्जन, आधात-चिकित्सा इत्यादि का उपयोग करके मानसिक रोगों को दूर करने का प्रयास किया जाता है।

2. उद्योग के क्षेत्र में मनोविज्ञान की उपादेयता—उद्योग के क्षेत्र में मनोविज्ञान की उपयोगिता तीव्रता से बढ़ती जा रही है। वास्तव में किसी भी कार्य में निष्पादन/उत्पादन बढ़ाने के लिए उपयुक्त कर्मचारी, वैज्ञानिक विधियों, समुचित कार्य-दशा, प्रभावी मानवीय सम्बन्ध तथा प्रबन्धन की आवश्यकता होती है, औद्योगिक मनोविज्ञान इनका विस्तृत अध्ययन करता है, अतः औद्योगिक व्यवहार के प्रत्येक पक्ष में मनोविज्ञान का उपयोग है। विभिन्न मनोवैज्ञानिक विधियों का उपयोग करके कार्य हेतु सर्वोत्तम व्यक्ति का चयन किया जाता है, उन्हें समुचित प्रशिक्षण प्रदान करके कार्य कुशल बनाया जाता है, तदुपरान्त कार्य-अनुभव एवं कुशलता के आधार पर प्रोन्ति/पदोन्ति प्रदान की जाती है। उत्पादकता-वृद्धि के साथ-साथ कर्मचारी-स्वास्थ्य एवं सन्तोष पर भी बल दिया जाता है। हड़ताल एवं तालाबन्दी, दुर्घटना तथा अन्य औद्योगिक समस्याओं के समाधान के लिए मनोविज्ञान के सिद्धान्तों एवं विधियों का उपयोग किया जाता है।

3. शिक्षा के क्षेत्र में मनोविज्ञान की उपादेयता—शिक्षार्थी/विद्यार्थी एवं शिक्षक-व्यवहार का अध्ययन करके प्रभावी अधिगम-विधियों का उपयोग करते हुए शैक्षणिक निष्पादन में सुधार करना मनोविज्ञान का उद्देश्य है। शिक्षार्थी/विद्यार्थी की क्षमताओं, योग्यताओं, व्यक्तित्व (व्यक्ति-प्रकार, रुचि इत्यादि) आदि का मापन करके उसे उपयुक्त विषय चयन करने का परामर्श दिया जाता है। कक्ष-शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु विभिन्न विधियों के उपयोग के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। पिछड़े, प्रतिभाशाली तथा समस्यात्मक बालकों के व्यक्तित्व एवं व्यवहार के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करके उनकी समस्याओं के समाधान का प्रयास किया जाता है। शिक्षारत बालकों को शैक्षिक निर्देशन के साथ ही आवश्यकतानुसार व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत निर्देशन भी दिया जाता है।

4. सामाजिक समस्याओं के समाधान में मनोविज्ञान की उपादेयता—समाज व्यक्ति (Individual) से निर्मित है, व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन मनोविज्ञान का विषय है, अतः व्यक्ति के अध्ययन द्वारा समाज एवं सामाजिक समस्याओं को समझने में सहायता मिलती है जिससे विभिन्न सामाजिक समस्याओं का निराकरण किया जाता है। निर्धनता, बेरोजगारी, मद्य पान, सामाजिक पूर्वाग्रह एवं तनाव, भ्रष्टाचार इत्यादि विभिन्न सामाजिक समस्याओं के कारणों का पता लगाने एवं दूर करने में मनोविज्ञान सहायक है। समुचित सामाजीकरण द्वारा व्यक्ति में स्वस्थ चिन्तन विकसित किया जा सकता है जिससे व्यक्ति अवांछनीय सामाजिक व्यवहार की ओर अग्रसर न हो। सामाजिक अपराध के कारणों को ज्ञात करने एवं अपराध-नियन्त्रण में मनोविज्ञान का ज्ञान बहुत उपयोगी है।

5. बालकों के समुचित विकास में मनोविज्ञान की उपादेयता—मनोविज्ञान के अध्ययन से व्यक्ति को जानकारी प्राप्त हो जाती है कि बालकों में किस आयु-स्तर पर कैसे-कैसे शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक परिवर्तन होते हैं, कौन-कौन-सी समस्याएँ आती हैं? इनके आधार पर वह समाधान हेतु प्रारम्भिक स्तर से ही प्रयास कर सकता है। बाल मनोवैज्ञानिक एवं नैदानिक मनोवैज्ञानिक बालक के चतुर्दिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकते हैं।

उपर्युक्त के अतिरिक्त जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी मनोविज्ञान की उपयोगिता है। पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करके प्रदूषण कम करते हुए पर्यावरण को समुन्नत बनाने में मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका है। क्रीड़ा क्षेत्र में खिलाड़ियों के निष्पादन-वृद्धि तथा स्वस्थता-सम्बद्धन में मनोविज्ञान का ज्ञान सहायक है। सैन्य कर्मियों के चयन, मनोबल एवं सन्तोष इत्यादि में वृद्धि हेतु मनोविज्ञान की अत्यधिक उपादेयता है। संक्षेप में, जहाँ-जहाँ व्यवहार है, वहाँ-वहाँ मनोविज्ञान की उपादेयता है।

मनोविज्ञान के उपागम/आयाम

[APPROACHES OF PSYCHOLOGY]

**मनोगत्यात्मक/मनोविश्लेषणात्मक, व्यवहारात्मक, संज्ञानात्मक,
मानवतावादी, जैविक आयाम, विकासवादी तथा अन्तर-सांस्कृतिक
(Psychodynamic/Psychoanalytical, Behaviouristic,
Cognitive, Humanistic, Biological, Evolutionary
and Cross-Cultural Approach)**

मनोविज्ञान की परिभाषा (Definition) से हमें स्पष्ट होता है कि मनोविज्ञान मूलतः "व्यवहार का विज्ञान (Science of behaviour)" या "व्यवहार एवं अनुभव का विज्ञान (Science of behaviour and experience)" है। इस व्यावहारिक अध्ययन (Behavioural Study) के उपागमों/आयामों (Approaches) को "मनोविज्ञान के परिदृश्य (Perspectives of Psychology)" भी कहा जाता है।

यद्यपि दर्शनशास्त्र (Philosophy) के गर्भ से जनित "मनोविज्ञान (Psychology)" का प्राथमिक या प्रारम्भिक अध्ययन विभिन्न सम्प्रदायों (Schools of Psychology) से हुआ लेकिन वर्तमान में लगभग सन् 1930 से मनोविज्ञान के इन सम्प्रदायों (Schools) का प्रभाव हल्का या कम होने लगा।

अब धीरे-धीरे मनोविज्ञान के शोधार्थियों एवं अध्येताओं का रुझान या झुकाव विशिष्टीकरण (Specialization) की ओर बढ़ने लगा। इसके सतही तौर पर कई कारण भी माने जा सकते हैं। यथा—

1. इन मनोविज्ञान के सम्प्रदायों (Schools of Psychology) के आधार पर सभी प्राणियों के सार्वभौमिक व्यवहार (Universal behaviour of all animals) की अधिक स्पष्ट व्याख्या सम्भव नहीं हो पा रही थी।
2. अधिकांश सम्प्रदायों की मान्यताओं संकीर्णता स्पष्ट अनुभव होने लगी थी।
3. मनोविज्ञान के इन सम्प्रदायों में केवल कुछ ही अध्ययन विधियाँ (Study Methods) को सम्मिलित किया गया था, जिनके द्वारा प्राणियों के व्यवहार तथा उससे सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन या विस्तृत व्याख्या की जा सकती थी।
4. इनके अधिकांश अनुयायियों की मान्यता थी कि मनोविज्ञान की विषयवस्तु या अध्ययन सामग्री (Subject Matter) को सीमाबद्ध रूप में ही रखा जाये।

इत्यादि कारणों से आधुनिक मनोवैज्ञानिक ने व्यावहारिक अध्ययन (Behavioural Study) हेतु विभिन्न उपागमों/आयामों (Approaches) या परिदृश्यों/सन्दर्भों (Perspectives) का प्रतिपादन किय

जोकि "मनोविज्ञान के आयाम या परिदृश्य (Approaches or perspectives of Psychology)" कहलाते हैं। इस प्रकार के प्रमुख आयाम अवलोकनीय हैं।

मनोगत्यात्मक/मनोविश्लेषणात्मक आयाम (PSYCHODYNAMIC PSYCHOANALYTICAL/APPROACH)

मनोविज्ञान के गत्यात्मक या मनोगत्यात्मक उपागम (Psychodynamic Approach) को "मनोविश्लेषणात्मक उपागम (Psychoanalytical Approach)" भी कहा जाता है। मनोविज्ञान के इस उपागम या आयाम का विकास मनोविश्लेषक फ्रायड (Sigmund Freud, 1856-1939) द्वारा प्रतिपादित "मनोविश्लेषणवाद (Psychoanalytical School)", जो कि सन् 1900 में स्थापित किया गया, से हुआ है। इसीलिए इसे "मनोविश्लेषणात्मक उपागम (Psychoanalytical Approach)" भी कहा जा सकता है। एडलर, युंग, हार्नी, सुलीवान तथा फ्रॉम आदि मनोवैज्ञानिक नवफ्रायडवादी (Neo-Freudian) के रूप में जाने जाते हैं जिन्होंने फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मनोविश्लेषणवाद को कुछ संशोधित करके "नव मनोविश्लेषणवाद (New-Psychoanalytical School)" के रूप में विश्लेषित या उल्लेखित किया।

मनोगत्यात्मक उपागम (Psychodynamic Approach) या कहें, मनोविश्लेषणात्मक उपागम (Psychoanalytical Approach) में निश्चयवादी (Deterministic) तथा निराशावादी (Pessimistic) सम्प्रत्ययों (Concepts) या दृष्टिकोण के आधार पर व्यवहार या मानवीय प्रकृति की व्याख्या की जाती है। इस आधार पर व्याख्या करने वाले मनोविदों ने मानव व्यवहार की व्याख्या में आशावादी छवि (Optimistic image) को अधिक महत्व दिया जाता है। इनकी यह मान्यता है कि "मानव व्यवहार पर्यावरणीय कारकों (Environmental variables or factors) का ही प्रतिफल होता है।" नव मनोविश्लेषणवादियों के इस सम्प्रत्यय की तुलना में फ्रायड व्यवहार के लिए व्यक्ति की निराशावादी छवि (Pessimistic image) को अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। फ्रायड के अनुसार, "व्यक्ति का व्यवहार उसके जन्मजात दैहिक कारकों (Physiological factors or variables) का प्रतिफल होता है।" यद्यपि लेखक (डॉ. सोलंकी, एम. के. 2021) के मतानुसार—

"मनुष्य का व्यवहार (Behaviour) उसके जन्मजात दैहिक कारकों (Physical factors) तथा सम्बन्धित पर्यावरणीय कारकों (Related environmental factors) का सम्मिलित प्रतिफल होता है।"
मनोविश्लेषणात्मक का तात्पर्य है—मनोविश्लेषण से सम्बन्धित। मनोविश्लेषण शब्द का कई रूपों में उपयोग किया गया है। मनोविज्ञान के एक सम्प्रदायवाद अथवा स्कूल के रूप में 'मनोविश्लेषणवाद' का विशिष्ट स्थान रहा है। मानसिक रोगों के उपचार की विधि के रूप में भी 'मनोविश्लेषण' का उपयोग किया गया है। व्यक्तित्व के एक सिद्धान्त (Theory) के रूप में 'मनोविश्लेषण' का विशेष महत्व है।

एटकिन्सन, बर्ने तथा वुडवर्थ (Atkinson, Berne and Woodworth, 1988) ने मनोविश्लेषण को मनोविज्ञान की एक पद्धति (System) के रूप में विवेचित किया है, जो मानसिक विकारों को समझने, उपचार करने तथा रोकथाम से सम्बन्धित है।¹

बैरन (Baron, 2001) ने मनोविश्लेषण को फ्रायड के 'व्यक्तित्व सिद्धान्त' पर आधारित चिकित्सा की एक विधि के रूप में इंगित किया है, जिनमें चिकित्सक दमित अचेतन सामग्री (repressed unconscious material) को चेतन में लाने का प्रयास करता है।²

1 "Psychoanalysis : as system of psychology directed toward the understanding, cure, and prevention of mental disorders." —Atkinson, Berne, and Woodworth, 1988

2 "Psychoanalysis : a method of therapy based on Freud's theory of personality, in which the therapist attempts to bring repressed unconscious material into consciousness." —Baron, 2001

मनोविश्लेषणवाद में चेतन की अपेक्षा अचेतन एवं अद्वचेतन को विशेष महत्व दिया गया। इसके अनुसार यदि बर्फ का टुकड़ा पानी में डाला जाए तो कुछ भाग (लगभग 1/10 भाग) ही बाहर दिखाई देता है तथा अधिकांश भाग (लगभग 9/10 भाग) पानी के अन्दर अदृश्य होता है। दृश्यमान छोटा भाग 'चेतन' तथा अदृश्य बड़ा भाग 'अचेतन' के तुल्य होता है। फ्रायड द्वारा वर्णित मन के स्तर को संक्षेप में निम्नवत् प्रस्तुत किया जा सकता है—

मन के स्तर (Levels of Mind)—

1. चेतन, 2. अचेतन

1. चेतन (Conscious)—मन का ऐसा क्षेत्र/स्तर है, जिसमें वे समस्त मानसिक तत्व (Mental Elements) सन्निहित होते हैं जिनसे व्यक्ति अवगत (Awar) होता है। मानसिक जीवन का छोटा हिस्सा ही चेतन होता है।

2. अचेतन (Unconscious)—अचेतन मन का सबसे बड़ा क्षेत्र/हिस्सा है। मानव की अतुष्ट (अपूर्ण) इच्छाएँ अचेतन में चली जाती हैं तथा व्यवहार-निर्धारण में महत्वपूर्ण होती हैं। इनसे व्यक्ति स्वयं अवगत नहीं होता है।

एटकिन्सन, बर्ने, तथा कुडवर्थ (1988) ने अचेतन की व्याख्या मन के ऐसे क्षेत्र (region) के रूप में की है, जो कि इड (id) एवं दमन (repressions) की सीट (Seat) है।¹

पूर्व चेतन (Pre-conscious)/अद्वचेतन (Sub-conscious)—मन का ऐसा क्षेत्र है जिसमें ऐसे मानसिक तत्व होते हैं, जो चेतन में नहीं होते हैं परन्तु थोड़े से प्रयास से चेतना में लाया जा सकता है। फ्रायडियन शब्दावली में अद्वचेतन/उप चेतन एक संक्रमण क्षेत्र (Transition zone) है, जिसके द्वारा दमित सामग्री अचेतन से चेतन में आती है।²

व्यक्तित्व के प्रभाग/अवयव (Portions of Personality)—फ्रायड ने व्यक्तित्व के निम्नलिखित तीन प्रभागों/अवयवों का उल्लेख किया है—

- ◆ इंद/इड (id)—प्रसन्नता सिद्धान्त (Pleasure Principle) द्वारा निर्धारित।
- ◆ अहं (ego)—वास्तविक सिद्धान्त (Reality Principle) द्वारा निर्धारित।
- ◆ परमाहं (Super ego)—नैतिकता सिद्धान्त (Morality Principle) द्वारा निर्धारित।

फ्रायड के अनुसार विभिन्न व्यक्तियों में इनका भिन्न-भिन्न विकास होता है। सामान्य व्यक्ति में इड, अहं तथा परमाहं तीनों समन्वित रूप में कार्य करते हैं।

फ्रायड ने मूल प्रवृत्ति (Instinct), लिबिडो (Libido), मनोलैंगिक विकास (Psycho-sexual Development) तथा अन्य सम्प्रत्ययों के आधार पर मनोविश्लेषण का विवेचन किया है।

फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद की आलोचना—फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मनोविश्लेषणवाद बहुत लोकप्रिय हुआ, साथ ही आलोचित भी। मनोवैज्ञानिकों ने आक्षेप लगाया है कि फ्रायड की अध्ययन पद्धति वैज्ञानिक नहीं है। वे प्रदत्त प्राप्त नहीं होते, जिनके आधार पर निष्कर्ष निर्गत किये गये हैं। फ्रायड की आलोचना इस आधार पर की गयी है कि इन्होंने यौन कारक (Sex factor) पर आवश्यकता से अधिक बल दिया है तथा सामाजिक पक्षों (Social aspects) की उपेक्षा की है।

मनोविश्लेषणवादी चिन्तकों में एडलर (Adler) तथा युंग (Jung) का नाम उल्लेखनीय है। एडलर ने 'वैयक्तिक मनोविज्ञान' (Individual Psychology) को विकसित किया। इन्होंने फ्रायड के नकारात्मक/निराशावादी सम्प्रत्ययों के स्थान पर सकारात्मक/आशावादी सम्प्रत्ययों के आधार पर व्यवहार की व्याख्या का प्रयास किया। सामाजिक रुचि (Social Interest), सृजनात्मक शक्ति (Creative

1 "Unconscious : the region of the mind that is the seat of the id and of repressions."

—Atkinson, Berne, and Woodworth, 1988

2 "Sub-conscious : in Freudian nomenclature, a transition zone through which any repressed material must pass on its way from unconscious to consciousness."

—Atkinson, Berne, and Woodworth, 1988

Power) इत्यादि पर बल देते हुए इन्होंने फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद को विस्तृत आयाम दिया। युंग (Jung) द्वारा प्रस्तुत विचारधारा को 'विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान' (Analytical Psychology) के नाम से जाना जाता है। इन्होंने लिबिडो को 'सामान्य जीवन शक्ति' (General Life Energy) के रूप में विवेचित किया है। 'सामूहिक अचेतन' (Collective Unconsciousness) की अवधारणा का युंग द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया है।

नव मनोविश्लेषणवाद—फ्रायड ने व्यवहार की व्याख्या में जैविकीय कारकों (Biological Factors) एवं यौनीय कारकों (Sexual Factors) पर विशेष बल दिया है। फ्रायड के विचारों में सामाजिक कारकों को समन्वित करते हुए नवीन विचार प्रस्तुत किये गये। हार्नी (Horney), सुलीवान (Sullivan), फ्रोम (Fromm) तथा एरिक्सन (Erikson) इत्यादि नव फ्रायडवादी मनोवैज्ञानिकों में उल्लेखनीय हैं। इन्होंने सामाजिक सांस्कृतिक कारकों पर पर्याप्त बल दिया। इनके द्वारा प्रस्तुत अन्तरवैयक्तिक सिद्धान्त (Sullivan's Interpersonal Theory), मनोसामाजिक विकास-सिद्धान्त (Erikson's Psycho-social Development Theory), इत्यादि सामाजिक पक्ष की भूमिका पर प्रकाश डालते हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि मनोविश्लेषणवाद ने मनोविज्ञान में एक अनूठी विचारधारा को प्रस्तुत किया। मानव व्यवहार में अचेतन की महत्ता का रहस्योद्घाटन हुआ। मनोविश्लेषण द्वारा मानसिक विकारों की चिकित्सा का शुभारम्भ हुआ। फ्रायड की कमियों को नव फ्रायडवादियों ने सामाजिक कारकों पर बल प्रदान करके दूर करने का प्रयास किया। कुछ आलोचनाओं के बावजूद मनोविश्लेषणवाद का मनोविज्ञान में विशिष्ट स्थान है।

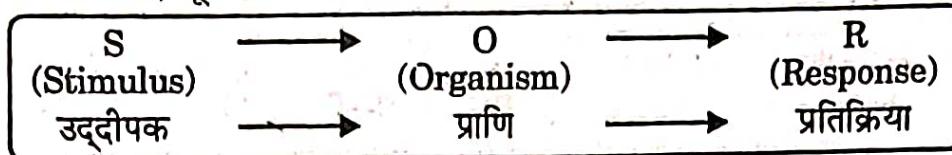
व्यवहारात्मक आयाम (BEHAVIOURISTIC APPROACH)

मनोविज्ञान के व्यवहारात्मक उपागम या आयाम (Approach) के प्रतिपादन करने का श्रेय अमेरिकी मनोविद् वॉट्सन (J. W. Watson, 1912) को जाता है। इससे पूर्व व्यंकित की मानसिक प्रक्रियाओं (Psychological processes) के अध्ययन के लिए सामान्यतः अन्तर्दर्शन विधि (Introspection Method) का ही उपयोग किया जाता है। अन्तर्दर्शन या अन्तर्निरीक्षण विधि से तात्पर्य मनोवैज्ञानिक अध्ययन की ऐसी विधि से होता है—“जिसमें अध्ययनकर्ता स्वयं अपनी मानसिक क्रियाओं-प्रक्रियाओं अथवा आत्मपरक अनुभवों का क्रमबद्ध रूप में अध्ययन करता है। मनोविज्ञान की इस प्राचीनतम विधि में व्यक्ति स्वयं ही तो अध्ययनकर्ता तथा स्वयं ही प्रयोज्य होता है। वाट्सन के अध्ययनों के आधार पर इस अन्तर्दर्शन विधि (Introspection Method) के स्थान पर आत्म निरीक्षण विधि (Self-observation Method) का उपयोग किया जाने लगा। इस सन्दर्भ में वाट्सन का कथन है कि—आत्म निरीक्षण विधि के आधार पर किये गये अध्ययन से प्राप्त प्रदत्त (Data) वस्तुनिष्ठ (Objective) होते हैं। जबकि अन्तर्दर्शन विधि से प्राप्त प्रदत्त आत्मनिष्ठ (Subjective) होते हैं।

स्किनर, मिलर एवं डोलार्ड (Skinner, Miller and Dollard) के संयुक्त अध्ययनों के आधार पर केन्द्रित इस व्यवहारात्मक उपागम की मुख्य मान्यता यह है कि “अधिगम (Learning), अनुभव (Experience) तथा पर्यावरणीय कारकों (Environmental Factors) के द्वारा सम्बन्धित प्राणि के व्यवहार (Behaviour) को सुगठित (Shape or Organised) किया जा सकता है। इस आधार पर व्यक्ति के व्यवहार का परिमार्जन (Behaviour Modification) सहज ही किया जाने लगा। साथ ही इन मनोवैज्ञानिकों ने प्राणि को आन्तरिक अवस्थाओं (Internal Stages) को “व्यवहार के महत्वपूर्ण निर्धारक” (Important determinants of behaviour) के रूप में विस्तार से उल्लेखित किया। इन्होंने प्राणि का व्यवहार या प्रतिक्रिया (Behaviour or Response of Organism) की व्याख्या उद्दीपकों या चरों (Stimulus or Variables) के आधार पर की। हल एवं टॉलमैन आदि मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया कि, “उद्दीपक चर (Stimulus Variable) तथा प्रतिक्रिया चर (Response Variable) के मध्य जैविक चर (Organismic Variable) की भी महत्वपूर्ण भूमिका

होती है। यहाँ प्राणि के जैविक चरों से तात्पर्य उसकी आन्तरिक अवस्थाओं (Internal Stages) से ही होता है। जो कि निःसन्देह प्राणि के व्यवहार (Behaviour) को सार्थक स्तर पर प्रभावित करती है।

तदन्तर इसी मान्यता के आधार पर “उद्दीपक-जैविक-अनुक्रिया (Stimulus-Organism-Response या S-O-R) सूत्र का प्रतिपादन किया गया।



अर्थात् “प्रतिक्रिया” या “अनुक्रिया” उद्दीपक (Stimulus) तथा प्राणि (Organism) का प्रकार्य (Function) या कार्य ही होता है।

प्राणि द्वारा की जाने वाली प्रतिक्रिया (Response) में “E” अर्थात् पर्यावरण (Environment) की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसी आधार पर प्रतिक्रिया (Response) को निम्नवत् सूत्रबद्ध किया जा सकता है—

$$R = F(O, S, E)$$

जहाँ, R = प्रतिक्रिया या अनुक्रिया (Response),

F = प्रकार्य या कार्य (Function),

O = प्राणि (Organism),

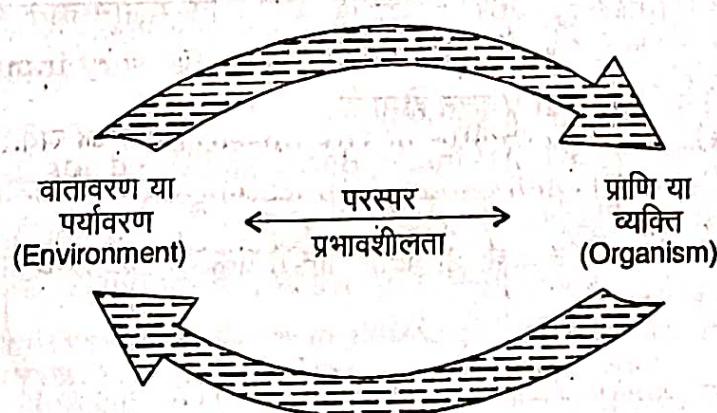
S = उद्दीपक (Stimulus) तथा

E = पर्यावरण (Environment)

प्रतिक्रिया या प्राणि के व्यवहार (Behaviour) को पर्यावरण दोनों ही रूपों में प्रभावित करता है—

1. आन्तरिक पर्यावरण (Internal Environment) तथा 2. बाह्य पर्यावरण (External Environment)।

आन्तरिक वातावरण का मूलतः तात्पर्य जैविक अवयवों (Biological Organs) से होता है। प्राणि का रक्त रसायन (Blood Chemistry) भी इसी आन्तरिक पर्यावरण का ही एक घटक होता है। व्यवहार या प्रतिक्रिया को प्रभावित करने वाले बाह्य वातावरण (External Environment) को भौतिक वातावरण (Physical Environment) भी कहा जा सकता है। यथा—गर्भी, सर्दी, वर्षा तथा धूप इत्यादि इसी भौतिक वातावरण/पर्यावरण के ही उदाहरण हैं। जीवन के अधिकांश समय में प्राणि अपने सम्बन्धित वातावरण से (भले ही वह किसी भी रूप में हो) अवश्य ही प्रभावित होता है। इस सन्दर्भ में यह भी सच्चाई है कि वातावरण या पर्यावरण प्राणि या व्यक्ति को तो प्रभावित करता ही है साथ ही प्राणि या व्यक्ति भी सम्बन्धित पर्यावरण (Environment) को प्रभावित करता है। जैसा शब्द चित्र 2.1 “पर्यावरण एवं प्राणि की परस्पर प्रभावशीलता” में अवलोकनीय है—



शब्द चित्र 2.1. “पर्यावरण एवं प्राणि की परस्पर प्रभावशीलता”

व्यवहारात्मक उपागम के अनुसार व्यवहार को उद्दीपक तथा वातावरण के अतिरिक्त प्राणि का सीखना (Learning) या उसका अनुबन्धित व्यवहार (Conditioned behaviour) भी उससे प्रतिक्रिया या व्यवहार को विशेषतः प्रभावित करता है। किसी प्राणि या व्यक्ति का व्यवहार (Behaviour) या प्रतिक्रिया (Response) उसके सीखने या अनुबन्धन की प्रकृति (Nature of Learning or Conditioning) पर भी कुछ हद तक निर्भर करता है।

संज्ञानात्मक आयाम (COGNITIVE APPROACH)

मनोविज्ञान का संज्ञानात्मक आयाम (Cognitive Approach of Psychology) मूलतः गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों के अध्ययन पर आधारित है। इसे "उद्दीपक-अनुक्रिया उपागम के विपरीत उपागम (Opposite Approach of Stimulus - Response Approach)" के रूप में भी समझा जा सकता है। इस उपागम या आयाम के अन्तर्गत प्राणि के व्यवहार की व्याख्या "प्राणि के संज्ञान (Cognition) या प्रत्यक्षीकरण (Perception)" के आधार पर की जाती हैं। अर्थात् इसमें सन्दर्भित प्राणि के व्यवहार (Behaviour) की व्याख्या अधिगम (Learning) के आधार पर न करके उसके संज्ञान या प्रत्यक्षीकरण के आधार पर करते हैं तथा उस प्राणि की अधिगम प्रक्रिया (Learning Process) को विशेष महत्वपूर्ण नहीं माना जाता है। संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, "प्रत्येक प्राणि तात्कालिक स्थिति या परिस्थिति का संज्ञानात्मक प्रतिचित्र (Cognitive Map of Condition) सीखता है।" इस बात को हम ऐसे भी समझ सकते हैं कि वह प्राणि वस्तु स्थिति का एक नवीन या व्यक्तिगत ढंग से प्रत्यक्षीकरण करता है। उस प्राणि का यह व्यवहार पूर्णतः लक्ष्योन्मुख (Oriented) होता है।

इस उपागम के अनुसार—कोई भी प्राणि या व्यक्ति अपने सन्दर्भित वातावरण या वस्तुस्थिति का ज्ञान संज्ञानात्मक संरचनाओं (Cognitive Structures) के आधार पर करता है तथा इन्हीं संरचनाओं या ज्ञान के आधार पर वह स्वयं को वातावरण या वस्तुस्थिति के साथ समायोजित (Adjust) करता है। यद्यपि इन संज्ञानात्मक संरचनाओं (Cognitive Structures) का गठन/संगठन एवं पुर्नगठन भी वह प्राणि समय-समय पर करता रहता है।

'व्यवहारवाद' की आलोचना करते हुए उल्लेख किया गया कि चेतन के अस्तित्व की प्रस्तुत वाद द्वारा उपेक्षा की गयी तथा व्यवहार के वस्तुनिष्ठ अध्ययन एवं अत्यधिक बल दिया गया, जिसने मनोविज्ञान के क्षेत्र को सीमित कर दिया। जटिल व्यवहारों की व्याख्या उद्दीपक-अनुक्रियां (Stimulus-Response : S-R) के मात्र सतही सम्बन्ध के आधार पर पूर्णरूपेण नहीं की जा सकती है। इसके लिए उद्दीपक एवं अनुक्रिया के मध्य घटित होने वाली विभिन्न मानसिक प्रक्रियाओं/संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का अध्ययन परमावश्यक है। इस अवधारणा ने 'संज्ञानात्मक दृष्टिकोण' अथवा 'संज्ञानात्मक मनोविज्ञान' को विकसित किया।

निस्सर/नाइस्सर (Neisser, 1967) ने उल्लेख किया है कि संज्ञानात्मक मनोविज्ञान उन सभी प्रक्रियाओं को इंगित करता है जिसके द्वारा संवेदी निवेश (Sensory input) परिवर्तित, लघु, विस्तृत, संचित, पुनरोत्पादित, तथा प्रयुक्त होता है।

एटकिन्सन, बर्ने तथा वुडवर्थ (Atkinson, Berne and Woodworth, 1988) ने मनोविज्ञान के शब्दकोष में संज्ञानात्मक मनोविज्ञान की व्याख्या दो रूपों में की है—

1. मनोविज्ञान की शाखा के रूप में, 2. मनोविज्ञान में एक दृष्टिकोण/विचारधारा के रूप में।

1 "Cognitive Psychology refers to all processes by which the sensory input is transformed, reduced, elaborated, stores, recovered, and used." —Neisser, *Cognitive Psychology*, 1967

2 "Cognitive Psychology : 1. The branch of psychology that includes the study of processes involved in sensing, perceiving, remembering, and thinking. 2. A point of view in psychology that stresses the importance of purpose, knowing, understanding, and reasoning in behaviour." —Atkinson, Berne and Woodworth, 1988

- ◆ मनोविज्ञान की शाखा (Branch); जो संवेदन, प्रत्यक्षण, स्मरण तथा चिन्तन में सन्निहित प्रक्रमों (involved processes) के अध्ययन को सम्मिलित करती है।
- ◆ मनोविज्ञान में एक विचारधारा (a point of view); जो व्यवहार में उद्देश्य, जानना, समझ, तथा तर्कणा (Reasoning) की महत्ता पर बल देती है।

वुड एवं वुड (Wood and Wood, 1996) के अनुसार, संज्ञानात्मक मनोविज्ञान एक ऐसी विशिष्टीकृत शाखा है जो मानसिक प्रक्रियाओं, यथा-स्मृति, समस्या-समाधान, सम्प्रत्यय निर्माण, तर्कणा, निर्णयन, भाषा, तथा प्रत्यक्षण के अध्ययन पर केन्द्रित है।¹

उपर्युक्त परिभाषाओं पर दृष्टिपात करने से निम्नलिखित तथ्य प्रकाश में आते हैं—

1. संज्ञानात्मक, मनोविज्ञान उच्चतर मानसिक प्रक्रियाओं (प्रत्यक्षीकरण, अधिगम, स्मृति, समस्या-समाधान, तर्कणा, भाषा इत्यादि) के अध्ययन का मनोविज्ञान है।
2. संज्ञानात्मक प्रक्रिया का प्रारम्भ संवेदी निवेश (Sensory Input) से होता है।
3. संवेदी निवेश को स्नायुविक घटनाओं (Neural Events) में कूट संकेतिक (Encoded) किया जाता है।
4. संज्ञानात्मक मनोविज्ञान पर दर्शनशास्त्र तथा मनोविज्ञान के संरचनावाद का महत्वपूर्ण प्रभाव परिलक्षित होता है।
5. संज्ञानात्मक मनोविज्ञान मानसिक प्रक्रियाओं के संगठन तथा कार्य की विवेचना करता है।

संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के प्रादुर्भाव हेतु उत्तरदायी पूर्ववर्ती कारक

संज्ञानात्मक मनोविज्ञान की उत्पत्ति में दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, भाषा, तथा कम्प्यूटर विज्ञान इत्यादि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इन कारकों में निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं—

1. अनुभववाद (ब्रिटिश अनुभववाद—British Empiricism)
2. संरचनावाद (Structuralism)
3. संज्ञानात्मक व्यवहारवाद (Cognitive Behaviourism)
4. गेस्टाल्ट मनोविज्ञान (Gestalt Psychology)

संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का योगदान (Contribution of Cognitive Perspective)— संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक उद्दीपक तथा अनुक्रिया के मध्य विद्यमान मध्यवर्ती मानसिक प्रक्रिया (Intervening Mental Process) का अध्ययन करते हैं। इनमें भी भिन्नताएँ हैं तथा सभी अपने-अपने विचारों एवं तरीकों से मनोविज्ञान में योगदान करते हैं, किंतु प्रयोग योगदान उल्लेखनीय हैं—

1. नव संरचनावाद (New Structuralism)
2. मानव-मशीन—सूचना प्रक्रमण मॉडल एवं कम्प्यूटर (Man-Machine : Information-process Model and Computer)
3. नव मनोगतता/मानसिकवाद (New Mentalism)

1. नव संरचनावाद (New Structuralism)—नये संरचनावादी मनोवैज्ञानिक भाषा एवं संज्ञान के सम्बन्ध के अध्ययन पर विशेष बल देते हैं। इनमें पियाजे (Piaget) तथा चोमस्की (Chomsky) के योगदान महत्वपूर्ण हैं।

पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास का विशद् अध्ययन करते हुए इसकी 4 अवस्थाओं का उल्लेख किया है। चोमस्की ने भाषा विकास का मनोभाषीय सिद्धान्त (Psycho-linguistic theory) प्रतिपादित किया, जिसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में व्याकरण सीखने की जन्मजात क्षमता होती है।

2. मानव-मशीन—सूचना प्रक्रमण मॉडल एवं कम्प्यूटर (Man-machine : Information process Model and Computer)—सूचना प्रक्रमण मॉडल में संज्ञान की व्याख्या बहुत कुछ

1 “Cognitive Psychology is a speciality that focuses on mental processes such as memory, problem solving, concept formation, reasoning, decision making, language, and perception.”

कम्प्यूटर के सिद्धान्तों के रूप में की गयी है। कम्प्यूटर पर आधारित सूचना प्रक्रमण मॉडल विभिन्न संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के अध्ययन में बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है।

3. नव मनोगतता (New Mentalism)—इस वर्ग के संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक मानसिक प्रक्रियाओं की व्याख्या साहचर्य के नियमों के बिना ही करने पर बल देते हैं। इनकी विचारधारा का आधार 'वुर्जबर्ग स्कूल' (Wurzburg School) का 'प्रतिमाविहीन चिन्तन' (Imageless Thought) है, जिसके अनुसार चिन्तन में प्रतिमाएँ नहीं होती हैं। कुछ साहचर्य विहीन नियमों के द्वारा चिन्तन की व्याख्या की जा सकती है।

संज्ञानात्मक मनोविज्ञान की आलोचनाएँ (Criticism of Cognitive Psychology)—स्किनर इत्यादि व्यवहारवादियों ने संज्ञानात्मक मनोविज्ञान की सीमाओं का उल्लेख करते हुए आलोचनाएँ की हैं, कुछ निम्नलिखित हैं—

1. संज्ञानात्मक मनोविज्ञान व्यवहार की वैज्ञानिक व्याख्या करने में असमर्थ,
2. संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं,
3. संज्ञानात्मक मनोविज्ञान व्यवहार के आन्तरिक पक्ष तक ही सीमित।

उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद भी संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का विशेष महत्व है। संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की व्याख्या हेतु संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक द्वारा किया जा रहा प्रयास प्रशंसनीय है।

मानवतावादी आयाम

(HUMANISTIC APPROACH)

मनोविज्ञान के मानवतावादी उपागम या आयाम का उदय मूलतः दर्शनशास्त्र (Philosophy) से माना जाता है। इस उपागम को सन् 1950 से विशेष महत्व दिया जाने लगा। इसके प्रति विलियम जेम्स, गोर्डन अलपोर्ट, अब्राहम, मैसलो व कार्ल रोजर्स की विशेष भूमिका रही। इस उपागम के पक्षधर मनोवैज्ञानिकों की मान्यता या विचार यह था कि आधुनिक मनोविज्ञान में कुछ ऐसी समस्याएँ, जिनका अध्ययन अपेक्षित है यथा—आशा, प्रेम, सृजनात्मकता, व्यक्तिगत विबुद्धि तथा मूल्य इत्यादि। इन्हीं के आधार पर ननोविज्ञान के मानवतावादी आयाम को "दृश्य प्रपञ्चीय उपागम" भी कहा जाता है। मानवतावादी उपागम के अन्तर्गत मनोवैज्ञानिक इस बात पर अधिक बल देते हैं कि सम्बन्धित व्यक्ति अपने वातावरण या पर्यावरण का प्रत्यक्षीकरण कैसे करता है तथा इस सन्दर्भ में उससे आत्मगत अनुभव कैसे रहे हैं? व्यक्ति की इन आत्मगत अनुभूतियों (Subjective Experiences) पर उसकी अचेतन अभिप्रेरणाओं (Unconscious Motives) का कोई विशेष नियन्त्रण नहीं होता है। इस उपागम के अनुयायियों की मान्यता है कि व्यक्ति का व्यवहार मुख्यतः वातावरण सम्बन्धित कारकों से ही नियन्त्रित होता है। स्पष्टतः इस उपागम का समर्थन करने मनोवैज्ञानिकों ने मानवतावादी सम्प्रत्ययों (Humanistic Concepts) यथा—आत्मा (Self) तथा आत्म-प्रत्यय (Self-Concept) को या इनसे सम्बन्धित सिद्धान्तों को विशेष महत्व दिया। इस उपागम की यह भी मान्यता है कि मनुष्य मूलतः चेतन (Conscious) तथा सृजनात्मक (Creative) होता है तथा उसमें स्वयं को उन्नत (Progressive) बनाने की जन्मजात इच्छा होती है। इसे ही मैसले एवं रोजर्स ने आत्म-सिद्धि (Self-actualization) की इच्छा कहा है या इसे इच्छाशक्ति की कामना (Desire of Self-actualization) कहते हैं।

मानवतावादी उपागम के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में अपने आन्तरिक बल (Potential) को पहचानने की क्षमता पायी जाती है। इस वास्तविकता को समझने के आधार पर ही व्यक्ति व्यवहार करता है जो कि उसकी जन्मजात प्रवृत्ति भी कहीं जा सकती है।

मानव की 'मशीनी' व्याख्या करने वाले 'व्यवहारवाद' तथा 'अचेतन' एवं 'असामान्य' पर अत्यधिक बल देने वाले 'मनोविश्लेषणवाद' की आलोचना करते हुए कुछ मनोवैज्ञानिकों ने उल्लेख किया कि मानव आदरणीय, सार्थक, तथा सक्रिय प्राणी है, उसमें अपार अन्तःशक्ति एवं सृजनात्मक होती है। मानवीय शक्ति तथा सम्मान पर विशेष बल देने वाली विचारधारा को मनोविज्ञान-क्षितिज में 'मानवतावादी मनोविज्ञान' (Humanistic Psychology) के नाम से सम्बोधित किया गया।

एटकिन्सन, बर्ने तथा वुडवर्थ (1988) ने मानवतावादी मनोविज्ञान को मनोविज्ञान के एक सैद्धान्तिक एवं चिकित्सीय तत्र के रूप में विवेचित किया है, जो विशेषतः मानव प्रक्रियाओं—'व्यक्ति का अनोखापन' आत्मनिष्ठ अनुभव की वैधता, चयन की स्वायत्तता तथा प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता (Potential) आत्मसात करते हुए संघर्ष की प्रवृत्ति पर बल देता है।

अब्राहम मैस्लो (Abraham Maslow) का मानवतावादी मनोविज्ञान के विकास में उल्लेखनीय योगदान है। इन्हें मानवतावादी मनोविज्ञान का आध्यात्मिक जनक (Spiritual father) कहा जाता है। मैस्लो मानव के सन्दर्भ में आशावादी दृष्टिकोणयुक्त थे। इनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में स्नेह, उदारता तथा करुणा की जन्मजात अन्तःशक्ति/क्षमता (Potential) होती है, जो समुचित सामाजिक पर्यावरण से विकसित होती है।

मैस्लो ने मनोविश्लेषणवादियों की आलोचना करते हुए उल्लेख किया कि मात्र 'असामान्य' व्यक्तियों के अध्ययन के आधार पर सामान्य व्यक्तियों के व्यवहार को समुचित रूप में नहीं समझा जा सकता है। निराशा, कुन्ता, संघर्ष इत्यादि स्वस्थ मानव की सर्वांगीण व्याख्या में सक्षम नहीं हैं।

मैस्लो ने व्यवहारवादी दृष्टिकोण की भी आलोचना करते हुए कहा है कि मानव को उद्दीपक ग्रहण करने वाला मात्र 'निष्क्रिय प्राणी' (Passive Organism) मानने से मानव की महत्ता सीमित हो जाती है। सृजनात्मक शक्ति की अपार सम्भावना एवं अन्तःशक्ति मानव में निहित होती है। मैस्लो के अनुसार मानवतावादी दृष्टिकोण उच्चतर मानवीय प्रेरकों, आत्म संबोध आवश्यकता (need for self-realization), संज्ञान, समझ, तथा सौन्दर्यात्मक आवश्यकताओं से सम्बन्धित है।¹ इन्होंने 'आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धान्त' (Need Hierarchy Theory) प्रस्तुत किया, जिसके अनुसार मानव सर्वप्रथम शारीरिक आवश्यकताओं (Physiological Needs) की पूर्ति करना चाहता है, तत्पश्चात् क्रमशः सुरक्षा आवश्यकता (Security Needs), सम्बन्ध/सामाजिक (Belongingness/Social) तथा सम्मान (Esteem) की आवश्यकताओं की तृप्ति करना चाहता है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात् सर्वोच्च आवश्यकता आत्म-सिद्धि (Self-actualization) की आवश्यकता पूर्ति की ओर प्रयासरत रहता है। व्यक्ति अपनी क्षमताओं (Potentialities), योग्यताओं (Talents), अभियोग्यताओं (Aptitudes) अर्थात् विशिष्ट क्षेत्र में अभिरुचि एवं योग्यता को पूर्ण उपयोग की प्रवृत्ति से युक्त होता जाता है, क्षमताओं को पूर्ण विकसित करने की प्रवृत्ति को 'आत्म-सिद्धि' कहा गया है।

मैस्लो ने आत्म-सिद्धि व्यक्तियों के निम्नलिखित प्रमुख लक्षणों का उल्लेख किया है—

1. सुरक्षा की उपयुक्त (यथोचित) अनुभूति (Adequate feeling of security)
2. यथोचित आत्म-मूल्यांकन (Adequate self-evaluation)
3. यथोचित अभिव्यक्ति एवं सांवेगिकता (Adequate spontaneity and emotionality)
4. यथार्थ/वास्तविकता से प्रभावपूर्ण सम्पर्क (Efficient contact with reality)
5. यथोचित शारीरिक इच्छाएँ एवं उनको सन्तुष्ट करने की योग्यता (Adequate bodily desires and throability to gratify them)
6. यथोचित आत्म-ज्ञान (Adequate self-knowledge)
7. व्यक्तित्व समन्वय एवं सातव्य (Integration and consistency of personality)
8. यथोचित जीवन लक्ष्य (Adequate life goals)
9. अनुभव से सीखने की योग्यता (Ability to learn from experience)

1 "Humanistic Psychology : a theoretical and therapeutic system of psychology that emphasizes particularly human processes—the uniqueness of the individual, the validity of subjective experience, freedom of choice, and the tendency for each individual to strive to realize his potential....." —Atkinson, Berne and Woodworth, 1988

2 "..... humanism concerns itself with higher human motives, and the need for self-realization, knowing, understanding and with arsthetic needs."

—Maslow's view as described by Atkinson, Berne, and Woodworth, 1988

10. समूह की आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने की योग्यता (Ability to satisfy the requirements of the group)

मानवतावादी मनोविज्ञान के विकास में कार्ल रोजर्स (Carl Rogers) का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन्होंने 'रोगी-केन्द्रित चिकित्सा' पद्धति (Client centered therapy) का प्रतिपादन किया तथा चिकित्सीय अनुभव के आधार पर 'व्यक्ति केन्द्रित सिद्धान्त' (Person-centered therapy) अथवा आत्म-सिद्धान्त (Self-theory) प्रस्तुत किया। रोजर्स ने प्राणी, आत्म, प्राणी तथा आत्म में सम्बन्ध और आत्म-सिद्धि का विस्तृत वर्णन किया है। इनके अनुसार आत्म-सिद्धि एक ऐसा वर्द्धन/वृद्धि बल (Growth force) है, जिसमें जैविक तथा मनोवैज्ञानिक वर्द्धन सम्मिलित हैं।

मानवतावादी विचारधारा की आलोचनाएँ—मानवतावादी मनोविज्ञान की निम्नलिखित आलोचनाएँ की गयी हैं—

1. धार्मिक एवं आध्यात्मिक विश्वासों पर अत्यधिक बल
2. वस्तुनिष्ठता (Objectivity) का अभाव
3. आनुभविक वैद्यता का अभाव (Lack of empirical validity)
4. विश्वसनीयता की कमी (Lack of reliability)
5. अन्तर्दर्शन विधि द्वारा अध्ययन किये जाने की आलोचना

मानवतावादी दृष्टिकोण की उपर्युक्त एवं अन्य आलोचनाएँ की गईं, फिर भी मनोविज्ञान में इसका विशेष स्थान है। इस विचारधारा ने मानव की 'मानवता' को अधिस्थापित करने का समुचित प्रयास किया। मानव को अपनी क्षमताओं एवं अन्तःशक्तियों को पहचानने एवं उसका अधिक-से-अधिक उपयोग करने हेतु ग्रोत्साहित किया। वास्तव में इस विचारधारा ने मानव में, सकारात्मक एवं आशावादी दृष्टिकोण का संचार करते हुए 'मानव' को गौरवान्वित किया। व्यक्ति स्वयं अपने भाग का विधाता होता है यह सन्देश देने का प्रशंसनीय प्रयास किया।

जैविक आयाम (BIOLOGICAL APPROACH)

मनोविज्ञान प्राणियों के व्यवहार का विज्ञान है। व्यवहार प्राणी की संरचना (Structure) तथा प्रकार्य (Function) से प्रभावित होता है। जीवन से सम्बन्धित ज्ञान जीव विज्ञान (Biology) के नाम से सम्बोधित किया जाता है—

Biology = Bios (Life) + Logos (Knowledge)

अर्थात् जीवित वस्तुओं (Living things) के विषय में ज्ञान 'जीव विज्ञान' है। जीव विज्ञान से सम्बन्धित परिदृश्य 'जीव वैज्ञानिक/जैविक' (Biological)/जैविक है। दूसरे शब्दों में, प्राणी के अन्दर घटित होने वाली प्रक्रियाएँ जीव वैज्ञानिक/जैविक (Biological) परिदृश्य के अन्तर्गत समाविष्ट होती हैं। व्यवहार आनुवांशिकता (Heredity) एवं पर्यावरण (Environment) का प्रतिफल होता है। आनुवांशिकता के संवाहक जीन्स (Genes) होते हैं। वास्तव में, जीन्स प्राणी के व्यवहार को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत पुस्तक के आगामी अध्याय 'व्यवहार के जैविक आधार' के अन्तर्गत जीन्स, संग्राहक, प्रभावक एवं स्नायु तन्त्र इत्यादि का विशद विवेचन किया गया है, जो जैविक आधार को प्रतिबिम्बित करते हैं। वर्तमान में पितृत्व परीक्षण के लिए डीआँक्सीरिबोन्युक्लिक एसिड (Deoxyribonucleic Acid) अर्थात् D. N. A. जाँच का निर्णायक परिस्थितियों में प्रयोग किया जा रहा है।

उनीसर्वी शताब्दी में विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय अनुसन्धान कार्य प्रतिपादित किये गये। स्नायु आवेग तन्त्रिका प्रवाह (Nerve Impulse) के वेग मापन के सन्दर्भ में क्रान्तिकारी परिणाम दृष्टिगत हुए। जोहान्स मूलर (Johannes Muller) का विचार था कि स्नायु आवेग का वेग प्रकाश के वेग के समान होता है, अतः इसका मापन सरलतया सम्भव नहीं है परन्तु हर्मन हेल्महोल्ज (Hermann

Helmholtz) ने स्नायु आवेग के वेग का मापन करके उसे प्रकाश के वेग से बहुत कम बताया। अपने अध्ययन के आधार पर इन्होंने मैटक के पेशीय स्नायु (Motor Nerve) में यह वेग 50 मीटर प्रति सेकेण्ट तथा व्यक्ति के संवेदी स्नायु (Sensory Nerve) में स्नायु आवेग का वेग 50 से 100 मीटर प्रति सेकेण्ट पाया।

सन्धि-स्थल/सिनैप्स (Synapse) की धारणा का विकास भी अनुसन्धान का महत्वपूर्ण चरण रहा। एक तन्त्रिका/स्नायु कोश अथवा न्यूरान (Nouron) से दूसरे न्यूरान के मध्य का माइक्रोरॉकोपिक अन्तराल (Microscopic Gap), सन्धि-स्थल के नाम से सम्बोधित किया गया। रैमन एवं सैजल (Ramon and Cajal) ने 'स्नायु कोश सिद्धान्त' (Neuron Doctrine) का सूत्रपात किया तथा स्नायु आवेग के मापनों ने समकालीन एवं परवर्ती वैज्ञानिकों को अन्वेषण हेतु प्रोत्साहित किया। "सम्पूर्ण अथवा बिल्कुल नहीं" सिद्धान्त ("All or none" Principle) तथा "निष्क्रिय अवस्था" (Refractory Phase) की अवधारणा का उदय उल्लेखनीय है।

कपाल विज्ञान (Phrenology)—कपाल विज्ञान, जिसकी अवधारणा एवं मान्यताएँ, आज अमान्य हो चुकी हैं, का उल्लेख किया जाना शरीर क्रिया विज्ञान की दृष्टि से परमावश्यक है। फ्रैंज जोसेफ गाल (Franz Joseph Gall, 1758-1829) ने मस्तिष्क/खोपड़ी (Skull) की बनावट के उभार एवं व्यक्तित्वशील गुणों/पिशिष्टता के मध्य सम्बन्ध की खोज का प्रयास किया। उनके कुछ पूर्वकथन (Prediction) सत्य भी प्रतीत हुए परन्तु स्थायी सम्बन्ध न पाये जाने के कारण गाल एवं उनके शिष्य स्परझीम (Spurzheim, 1776-1832) की मान्यताएँ अस्वीकृत कर दी गयीं परन्तु इनके विचारों का महत्वपूर्ण प्रभाव यह रहा कि वैज्ञानिकों द्वारा मस्तिष्क की संरचना तथा कार्यों से सम्बन्धित विविध शोध कार्य प्रतिपादित किये गये।

मस्तिष्क के कार्यों का स्थानीयकरण/स्थान-निर्धारण (Localization of Brain Functions)

कपाल विज्ञान ने वैज्ञानिकों को मस्तिष्क की संरचना एवं क्रियाओं पर अनुसन्धान कार्य की दिशा प्रदान की, फलतः महत्वपूर्ण शोधकार्य किये गये। लुइगी रोलान्डो (Luigi Rolando, 1770-1831) ने 1809 में प्रतिपादित प्रयोगों के आधार पर उल्लेख किया है कि उच्चतर मानसिक प्रक्रियाओं के लिए मुख्य केन्द्र प्रमिस्तिष्कीय गोलार्द्ध (Cerebral Hemisphere) होता है तथा संवेदन अनुभव हेतु मैद्युला ऑबलोंगाटा (Medulla Oblongata) महत्वपूर्ण है। फियरे फ्लोरेन्स (Fierre Flourens, 1794-1867 ई.) ने कबूतरों पर अध्ययन करके पाया कि चिन्तन एवं स्वैच्छिक क्रियाएँ वृहद् मस्तिष्क (Cerebrum) में स्थित होती हैं। नियन्त्रित तथा प्रभावी गतियाँ लघु मस्तिष्क (Cerebellum), और संवेदन का अर्थपूर्ण ज्ञान मूड्युला ऑबलोंगाटा से सम्बन्धित होता है।

प्रमस्तिष्कीय कार्टेंक्स के चार खण्डों (Lobes)—अग्र खण्ड (Frontal Lobe), मध्य खण्ड (Parietal Lobe), शंख खण्ड (Temporal Lobe), तथा पृष्ठ खण्ड (Occipital Lobe) का उल्लेख किया गया। अग्र खण्ड को तीन उपखण्डों में विभाजित किया गया—1. गतिवाही/क्रियात्मक क्षेत्र (Motor Area or Pre-central Area/Broadmann's Area N. 4), 2. पूर्व गतिवाही क्षेत्र (The Intermedial Pre-central Area or Broadmann's Area N. 6 and 44) 3. साहचर्य क्षेत्र (Association Area or Broadmann's Area N. 8, 9 and 19)। गतिवाही क्षेत्र का अन्वेषण फ्रिट्श (Fritsch) एवं हिटिजग (Hitzig) ने किया। इसके द्वारा व्यक्ति की ऐच्छिक एवं शारीरिक क्रियाएँ नियन्त्रित होती हैं। पूर्व गतिवाही क्षेत्र वाणी/बोली (Speech) हेतु उत्तरदायी बताया गया। चिकित्सक ब्रोका द्वारा 1861 में अग्र खण्ड के कुछ अगले भाग में क्षेत्र संख्या 44 की खोज की गयी, अतः यह ब्रोका क्षेत्र के नाम से जाना गया। साहचर्य क्षेत्र का महत्वपूर्ण कार्य उच्च मानसिक प्रक्रियाओं, यथा—स्मृति, चिन्तन, तर्क इत्यादि का नियन्त्रण तथा संचालन करना है।

प्रमस्तिष्कीय कार्टेंक्स के मध्य खण्ड द्वारा गर्मी, स्पर्श इत्यादि की संवेदना होती है तथा पृष्ठ खण्ड द्वारा संवेदना नियन्त्रित होती है। शंख खण्ड में श्रवण क्षेत्र विद्यमान होता है। इसका रहस्योदयांतर फैरियर ने विभिन्न प्रयोगों के आधार पर किया है।

मस्तिष्क तरंगों (Brain Waves) की खोज एवं पापन—मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाली विद्युतीय तरंगों के अभिलेख/रिकार्ड (Record) को 'इलेक्ट्रो-इनसेफैलोग्राफी' (Electroencephalography) तथा विद्युतीय तरंगों के रेखाचित्र को 'इलेक्ट्रोइनसेफैलोग्राम' (Electroencephalogram—EEG) के नाम से सम्बोधित किया गया। सर्वप्रथम हैन्स बर्जर (Hans Berger) ने 1929 में मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाली तरंगों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। इन्होंने खोज किया कि मानव प्रमस्तिष्कीय कार्टेंक्स (Cerebral Cortex) के विभिन्न भागों में होने वाले शक्तिशाली परिवर्तनों (Potential Changes) को पहचाना जा सकता है एवं इनको दृश्यमान तरंगों के रूप में रिकार्ड भी किया जा सकता है। कार्टेंक्स/खोपड़ी (Skull) पर विद्युताग्र (Electrodes) लगाकर एवं तारों (Wires) द्वारा उसे प्रेक्षण उपकरण से सम्बन्धित करके तरंगों अथवा कम्पनों की संख्या ज्ञात की जा सकती है। निम्नलिखित तरंगें उल्लेखनीय हैं—

1. अल्फा तरंग (Alpha Waves)—यद्यपि तरंगों की सीमा के सन्दर्भ में वैज्ञानिकों में मतभेद है, फिर भी 8 से 13 चक्र (Cycles) प्रति सेकेण्ड के मध्य विद्यमान तरंगों को अल्फा तरंग के नाम से सम्बोधित किया गया है। जब व्यक्ति के मस्तिष्क की दशा सामान्य होती है, वह आराम की अवस्था में होता है, अल्फा तरंगें दृष्टिगत होती हैं।

2. बीटा तरंग (Beta Waves)—अधिकांश विद्वान् 20 से 25 चक्र प्रति सेकेन्ड के मध्य इन तरंगों की उपस्थिति मानते हैं। बर्जर ने 15 चक्र प्रति सेकेण्ड से उच्च तरंगों को बीटा तरंग कहा है।

3. डेल्टा तरंग (Delta Waves)—डेल्टा तरंगों की सीमा के सम्बन्ध में विद्वानों के भिन्न-भिन्न विचार हैं। कुछ वैज्ञानिक 8 चक्र प्रति सेकेण्ड से नीचे (कम) की सभी तरंगों को डेल्टा तरंग मानते हैं तो कुछ 4 से 7 चक्र प्रति सेकेण्ड की तरंगों को डेल्टा तरंग की संज्ञा देते हैं। बहुत से वैज्ञानिक 1 से 2 चक्र प्रति सेकेण्ड वाली तरंगों को इसमें सम्मिलित करते हैं। डेल्टा तरंगें सौते समय बिना किसी क्रम के उत्पन्न होती हैं। इनका उद्भव हाइपोथेलेमिक क्षेत्र से माना गया है।

4. गामा तरंग (Gamma Waves)—वैज्ञानिकों ने 40 से 50 चक्र प्रति सेकेण्ड वाली तरंगों को गामा तरंग कहा है। बीटा की तरह इनकी भी उत्पत्ति कार्टेंक्स के अग्र भाग (Frontal Cortex) से होती है।

5. थीटा तरंग (Theta Waves)—वाल्टर एवं वाल्ट ने 4 से 7 चक्र प्रति सेकेण्ड गति वाली मस्तिष्क तरंगों को 'थीटा तरंग' के नाम से सम्बोधित किया है।

6. कप्पा तरंग (Kappa Waves)—प्रस्तुत तरंग की जानकारी अपेक्षाकृत बाद में प्राप्त हुई है। केनेडी एवं अन्य (Kennedy and Others, 1948) ने इस तरंग का उल्लेख किया है। इसकी आवृत्ति अल्फा तरंग की भाँति (लगभग 10 चक्र प्रति सेकेण्ड) परन्तु वोल्टेज अपेक्षाकृत कम अंकित किया गया है।

7. शंख क्षेत्र (Temporal Region) में चिन्तन प्रक्रिया अथवा समस्या-समाधान के समय इसकी उत्पत्ति होती है।

जैविक क्षेत्र में सतत नवीन अनुसन्धान कार्य प्रतिपादित किये जा रहे हैं, जिससे मानव व्यवहार को समझने में सहायता प्राप्त हो रही है। विभिन्न मनोविकारों हेतु उत्तरदायी जीन्सों की खोज चल रही है। निश्चित ही इनके निष्कर्ष क्रान्तिकारी तर्था मानव कल्याण में सहायक सिद्ध होंगे।

स्पष्टतः मनोवैज्ञानिक के जैविक उपागम की प्रमुख मान्यता यह है कि सभी प्राणियों के व्यवहार य प्रतिक्रिया (Behaviour or Response) का एक जैविक आधार (Biological basis) होता है। इस आधार पर हम उपागम के अनुयायियों या मनोवैज्ञानिकों को दैहिक मनोवैज्ञानिक (Physiological Psychologists) मनोजैववैज्ञानिक (Psychobiologists) या स्नायुमनोवैज्ञानिक (Neuro Psychologists) कहते हैं। इसी आधार पर मनोवैज्ञानिक के जैविक उपागमों को भी तीन प्रकारों य श्रेणियों में विभाजित करना गलत न होगा। यथा—

(i) शरीर क्रिया उपागम (Physiological approach of psychology)

(ii) मनोजैविकीय उपागम (Psychobiological approach of psychology)

(iii) स्नायुं वैज्ञानिक उपागम (Neurological approach of psychology).

अर्थात् मनोविज्ञान के इस उपागम के अन्तर्गत मनोवैज्ञानिकों ने प्राणि के व्यवहार की व्याख्या करने के लिए मानसिक प्रक्रियाओं की अपेक्षा उनकी आनुवांशिकता (Heredity) को अधिक महत्व दिया।

विकासवादी आयाम (EVOLUTIONARY APPROACH)

उनीसर्वों शताब्दी में विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसन्धान किये जा रहे थे तथा नवीन विचारों को प्रस्तुत किया जा रहा था। बनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान तथा जननशास्त्र के क्षेत्र में भी वैज्ञानिकों ने महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किये। विद्वानों द्वारा यह कहा जाने लगा कि प्रजातियों (Species) में पीढ़ी दर पीढ़ी कुछ परिवर्तन होता रहता है। पर्यावरण में परिवर्तन के फलस्वरूप तदनुरूप प्राणियों में भी परिवर्तन अथवा विकास होता रहता है। विकास पर बल दिये जाने के कारण इस क्रान्तिकारी विचारधारा को 'विकासवादी/विकासात्मक' विचारधारा के नाम से जाना गया। इसके अनुसार प्रत्येक पीढ़ी के सभी प्राणी जीवित नहीं रहते हैं, बल्कि कुछ ही अपना अस्तित्व/जीवन बनाये रखते हैं, जो पर्यावरण से उपयुक्त रूप में अनुकूलन स्थापित करने में सफल होते हैं। दूसरे शब्दों में, योग्यतम प्राणी ही जीवित रह पाते हैं (Survival of the fittest)। यद्यपि लामार्क तथा हरबर्ट स्पेन्सर इत्यादि ने भी किसी-न-किसी रूप में 'विकासवादी/विकासात्मक' विचारधारा की प्रस्तुति की थी, परन्तु व्यवस्थित प्रतिपादक चार्ल्स डार्विन (Charles Darwin, 1809-1882) माने जाते हैं। डार्विन के विशेष प्रभाव के कारण इस सिद्धान्त/विचारधारा को 'डार्विनवाद'/'डार्विनिज्म' (Darwinism) के नाम से जाना जाता है।

विकासवाद में मुख्यतः निम्नलिखित तथ्यों पर बल दिया गया—

भिन्नता/परिवर्तन (Variation)—विकासवादी दृष्टिकोण के अनुसार एक ही प्रजाति के सदस्यों में भिन्नता होती है। यह भिन्नता पर्यावरण के प्रति प्राणी की अनुकूलन/समायोजन क्षमता के कारण होती है।

योग्यतम की जीवितता/योग्यतम का अस्तित्व (Survival of the fittest)—विकासवादी सिद्धान्त के अनुसार जो प्राणी पर्यावरण के साथ सर्वाधिक समायोजित/अनुकूलित होता है, वही जीवित रह पाता है अर्थात् योग्यतम (fittest) प्राणी ही जीवित रहता है। दूसरे शब्दों में, वही प्राणी योग्यतम माना जाता है, जो पर्यावरण परिवर्तित होने पर भी समायोजन करने में सक्षम होता है।

स्वाभाविक चयन (Natural Selection)—पर्यावरण परिवर्तित होने पर जो प्राणी समायोजन करने में समर्थ होते हैं, उनका स्वाभाविक रूप से वरण/चयन हो जाता है।

डार्विन ने मानव एवं उच्चतर पशुओं की बौद्धिक क्षमताओं की तुलना करते हुए उल्लेख किया कि दोनों की क्षमताओं में परिमाणात्मक/मात्रात्मक (Quantitative) अन्तर होता है, न कि गुणात्मक। मानव एवं पशुओं के सांवेदिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करके इन्होंने उल्लेख किया कि दोनों की सांवेदिक अभिव्यक्तियों में काफी समानता होती है।

विकासवादी दृष्टिकोण/डार्विनवाद का प्रभाव—डार्विन के विकासात्मक सिद्धान्त का मनोविज्ञान पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। मुख्यतः निम्नलिखित प्रभाव उल्लेखनीय हैं—

- ◆ तुलनात्मक मनोविज्ञान का उद्भव/पशु-व्यवहार के अध्ययन पर बल
- ◆ आनुवांशिकता-पर्यावरण विवाद का जन्म
- ◆ मनोविज्ञान के लक्ष्य में परिवर्तन
- ◆ मनोविश्लेषणवाद पर प्रभाव
- ◆ प्रकार्यवाद पर प्रभाव
- ◆ व्यक्तिगत भंडों/अन्तर की ओर ध्यानाकर्षण

तुलनात्मक मनोविज्ञान का उद्भव—डार्विन के विचारों ने मनोवैज्ञानिकों का ध्यान पशु व्यवहार के अध्ययन की ओर उन्मुख किया। पशु व्यवहारों की तुलना मानव व्यवहारों से की जाने लगी। इनके अध्ययनों ने शोधकर्ताओं के मन में यह विचार उत्पन्न किया कि पशुओं पर प्रयोग करके मानव व्यवहार को बहुत कुछ समझा जा सकता है।

आनुवांशिकता-पर्यावरण के सापेक्षिक प्रभाव सम्बन्धी विवाद—डार्विन यह जानना चाहते थे कि किसी गुण/विशेषता की उत्पत्ति प्राणी में कैसे हुई तथा वह विशेषता पर्यावरण में कैसे विकसित हुई? अर्थात् कोई भी विशेषता या व्यवहार आनुवांशिकता एवं पर्यावरण द्वारा किस सीमा तक निर्धारित होता है? इस विचार से आनुवांशिकता-पर्यावरण विवाद का जन्म हुआ।

मनोविज्ञान के लक्ष्य में परिवर्तन—डार्विन के विकासवादी दृष्टिकोण से मनोविज्ञान का लक्ष्य भी प्रभावित हुआ। यह उल्लेख किया जाने लगा कि मनोविज्ञान का अध्ययन करना चाहिए कि प्राणी अपने पर्यावरण में किस प्रकार अनुकूलन/समायोजन स्थापित करता है।

मनोविश्लेषणवाद पर प्रभाव—विद्वानों का यह मानना है कि डार्विन की विकासवादी विचारधारा के प्रभाव के कारण ही फ्रायड के मूलप्रवृत्ति सिद्धान्त में मानव की पाशिवक प्रवृत्ति पर अधिक बल दिया गया है।

प्रकार्यवाद पर प्रभाव—डार्विन की विचारधारा से प्रभावित होकर ही प्रकार्यवादियों द्वारा 'अनुकूलन/समायोजन' पर अधिक बल दिया गया। यह धारणा बलवती हुई कि अनुकूलन के अभाव में प्राणी का जीवन व्यतीत करना अत्यन्त कठिन है। अनुकूलन द्वारा ही प्राणी जीवित रह सकता है।

व्यक्तिगत भेदों/वैयक्तिक विभिन्नताओं सम्बन्धी अध्ययनों हेतु प्रेरणास्त्रोत—विकासवाद ने अनुसन्धानकर्ताओं को वैयक्तिक विभिन्नता पर अध्ययन प्रतिपादित करने हेतु प्रेरित किया। डार्विन इत्यादि विकासवादी विचारधारा के प्रतिपादकों ने उल्लेख किया कि एक ही प्रजाति के कुछ सदस्य अधिक अनुकूलित होते हैं तथा कुछ अपेक्षाकृत कम अर्थात् अनुकूलन के सन्दर्भ में सदस्यों में भिन्नता होती है। इस विचारधारा ने विभिन्न क्षेत्रों में वैयक्तिक विभिन्नताओं पर अध्ययन हेतु प्रोत्साहित किया।

विकासवादी अवधारणा की कुछ आलोचनाएँ की गईं, फिर भी इस क्रान्तिकारी विचारधारा का मानव चिन्तन, अनुसन्धान, तथा संस्कृति पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ा है, जिसके फलस्वरूप तुलनात्मक मनोविज्ञान, भेदपरक मनोविज्ञान इत्यादि क्षेत्रों का उद्भव हुआ तथा मनोविज्ञान के विषय-वस्तु में उल्लेखनीय विस्तार हुआ।

बोरिंग (Boring, 1950) ने समुचित ही उल्लेख किया है कि "प्रजातियों के विकासवादी उत्पत्ति के दूरगामी एवं मनोहारी सिद्धान्त का श्रेय चाल्स डार्विन को जाता है, जिसने दुनिया में तूफान ला दिया, विरोध की आँधी उत्पन्न कर दी तथा जिसे बहुतों द्वारा शताब्दी की महत्तम उपलब्धि मानी गयी, क्योंकि चिन्तन एवं संस्कृति पर इसका गहन प्रभाव पड़ा।"¹

मनोविज्ञान के विकासवादी उपागम के अन्तर्गत कुछ हद तक व्यवहारवादी उपागम (Behavioural Approach) व्यवहारवादी या व्यवहारात्मक उपागम इसी अध्याय में अवलोकनीय है का समावेश देखा जाता है। यद्यपि इसके अन्तर्गत व्यक्ति की मानसिक अनुकूलता (Mental Adaptiveness) को भी विशेष महत्व दिया जाता है। जैसा कि उपरोक्त उल्लेखित है कि विकासवादी उपागम की मूल मान्यता यह है कि मानसिक एवं दैहिक क्षमताएँ (Psychological and physical abilities) कालान्तर में विकास क्रम के साथ मनुष्य के अनुकूल उद्देश्यों को पूरा करने योग्य बन सकती। तदास्तु विकासवादी मनोवैज्ञानिकों को बौद्धिक विकास के साथ-साथ उसकी अन्य मानसिक क्षमताओं के विकास का अध्ययन करना चाहिए। यद्यपि निस्बेट (Nisbett, 1990) का इस विकासवादी उपागम के सन्दर्भ में

1 "To Charles Darwin belongs the credit for the far reaching and plausible theory of evolutionary origin of species, which took the world by storm, raised immediately a tempest of protest, and is considered by many as the greatest scientific achievement of the century because of its profound effect upon thought and culture." —Boring, 1950

मत है कि विकासवादी मनोवैज्ञानिकों को यह भी जानना चाहिए कि मनुष्य के व्यवहार को दीर्घ-विकास क्रम में अब तक किन-किन पर्यावरणीय कारकों ने किस स्तर या किस ढंग से सार्थक स्तर पर प्रभावित किया है।

अन्तर-सांस्कृतिक उपागम (CROSS-CULTURAL APPROACH)

मनोविज्ञान के इस उपागम को "सामाजिक-सांस्कृतिक उपागम" (Social-Cultural Approach) भी कहा जाता है। इस उपागम या आयाम की मूलतः मान्यता यह है कि "मानवीय व्यवहार पर सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों (Social and Cultural Factors) का क्या या किस प्रकार प्रभाव पड़ता है। निःसन्देह मानव के विकास या उसके व्यवहारात्मक विकास में उससे सम्बन्धित सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में मनोविज्ञान के इस उपागम का उदय हुआ। तात्कालिक कुछ अध्ययनों से स्पष्ट हुआ कि "मानसिक रोगों तथा सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों के मध्य परस्पर महत्वपूर्ण सम्बन्ध होता है।" कुछ अन्य अध्ययनों ने इस बात की भी पुष्टि की, कि "सामाजिक प्रतिबल (Social stress) तथा व्यक्ति के मानसिक विकारों (Psychological disorders) के मध्य भी महत्वपूर्ण सम्बन्ध होता है। इसके साथ ही व्यक्ति असामान्य व्यवहार (Abnormal behaviour) के अध्ययनों में एक नया आयाम या अध्याय जुड़ गया।

मनोविज्ञान व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन है। समाज में घटित होने वाले समस्त व्यवहार किसी-न-किसी रूप में पर्यावरण से प्रभावित होते हैं। पर्यावरणीय परिस्थितियों में संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। संस्कृतियों में अन्तर के कारण मानव व्यवहार की प्रकृति विभिन्न हो सकती है। मानव व्यवहार के मापन हेतु प्रयुक्त उपकरणों/परीक्षणों की प्रभाविकता भी भिन्न-भिन्न हो सकती है। कुछ परीक्षण एक संस्कृति के लिए उपयुक्त होते हैं, परन्तु दूसरी संस्कृति के लिए उतने उपादेय नहीं हो सकते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि सांस्कृतिक भिन्नता मानव व्यवहार के अध्ययन हेतु महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत विचार से मनोविज्ञान-जगत् में क्रॉस-सांस्कृतिक मनोविज्ञान का उदय हुआ, जिसे विभिन्न रूपों में विवेचित किया गया।

हो एवं वू (Ho and Wu, 2001) के अनुसार, "क्रॉस-सांस्कृतिक मनोविज्ञान भिन्न सांस्कृतक दशाओं के अन्तर्गत मानव व्यवहार तथा मानसिक प्रक्रिया का उनकी भिन्नता एवं एकरूपता का वैज्ञानिक अध्ययन है।"¹

बेरी, पूर्टिंगा, सेगल तथा डैसेन (1992) ने उल्लेख किया है कि क्रॉस-सांस्कृतिक मनोविज्ञान मानव व्यवहार एवं उसके अन्तरण का, उन विधियों को सम्मिलित करते हुए, जिनमें व्यवहार सामाजिक एवं सांस्कृतिक शक्तियों द्वारा निर्मित एवं प्रभावित होते हैं, का वैज्ञानिक अध्ययन है।²

जिंग (Jing, 2000) ने लिखा है कि क्रॉस-सांस्कृतिक मनोविज्ञान मूलतः मानव व्यवहार पर सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन, विशेषतः तुलनात्मक अध्ययन करता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं एवं विचारों के आधार पर कहा जा सकता है कि क्रॉस-सांस्कृतिक मनोविज्ञान यह जानने का प्रयास करता है कि सांस्कृतिक कारकों की मानव व्यवहार में भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है? इसमें वैयक्तिक भिन्नताओं (Individual Differences) को स्थिर रखा जाता है तथा सांस्कृतिक भिन्नताओं के प्रभाव का ही मुख्यतः अध्ययन किया जाता है।

अन्तर-सांस्कृतिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत कुछ मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं, घटनाओं तथा व्यवहारों का विभिन्न संस्कृतियों में व्यापक अध्ययन करके तुलना का प्रयास किया गया है। संज्ञानात्मक

1 "Cross-cultural Psychology is the scientific study of human behaviour and mental process, including both their variability and invariance, under diverse cultural conditions." —Ho and Wu, 2001.

2 the scientific study of human behaviour and its transmission taking into account the ways in which behaviours are shaped and influenced by social and cultural forces." —Berry, Poortinga, Segall, and Dasen, 1992

प्रक्रियाओं, यथा—प्रत्यक्षीकरण, अधिगम, समृति इत्यादि का विभिन्न संस्कृतियों में अध्ययन करके तुलनात्मक परिदृश्य प्रस्तुत किया गया है। कतिपय मनोचिकित्सकीय सम्प्रत्ययों, यथा—विषाद, चिन्ता इत्यादि के भी अन्तर सांस्कृतिक अध्ययन प्रतिपादित किये गये हैं। इसके अतिरिक्त आत्म एवं उपलब्धि इत्यादि का विभिन्न संस्कृतियों में अध्ययन किया गया है। भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में बच्चों के पालने के तरीकों के सन्दर्भ में निम्नलिखित प्रशिक्षणों पर विशद् अध्ययन प्रतिपादित किये गये हैं—

- ◆ आज्ञाकारिता प्रशिक्षण (Obedience Training)
- ◆ दायित्व प्रशिक्षण (Responsibility Training)
- ◆ परिपालन प्रशिक्षण (Nurturance Training)
- ◆ उपलब्धि प्रशिक्षण (Achievement Training)
- ◆ आत्म-निर्भरता एवं स्वायत्तता (Self-reliance and autonomy)

क्रॉस-सांस्कृतिक मनोविज्ञान के उपागम (Approaches to Cross-Cultural Psychology)— क्रॉस-सांस्कृतिक मनोविज्ञान के निम्नलिखित उपागम/लक्ष्य हैं—

1. इमिक उपागम (Emic Approach)
2. इटिक उपागम (Etic Approach)

1. इमिक उपागम—प्रस्तुत उपागम के अनुसार किसी भी संस्कृति को समुचित रूप से समझने के लिए स्वदेशी उपकरणों/परीक्षणों (Indigenous Tools) का उपयोग किया जाना उत्तम है। एक संस्कृति के विकसित परीक्षण दूसरी संस्कृति के व्यक्तियों के व्यवहार मापन हेतु उतने नहीं होते, जितने कि संस्कृति विशेष में निर्मित परीक्षण। ये परीक्षण वस्तुतः संस्कृति विशेष के मूल्यों अथवा संस्कृति की आत्मा से सम्बद्ध होते हैं, अतः इनके द्वारा समुचित मापन होता है।

2. इटिक उपागम—इस उपागम की मान्यता है कि किसी भी संस्कृति के व्यवहारों को समझने के लिए एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति के व्यक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन करना आवश्यक है।

मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि उपर्युक्त दोनों उपागमों का समन्वित समावेश होता है। सर्वप्रथम इमिक उपागम की मान्यतानुसार स्वदेशी परीक्षणों का उपयोग करके संस्कृति विशेष के व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन किया जाना चाहिए, तदुपरान्त इटिक उपागम द्वारा विभिन्न संस्कृतियों के व्यक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।

‘अन्तरसांस्कृतिक मनोविज्ञान’ मनोविज्ञान की उल्लेखनीय विद्या है। इसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान ‘स्वदेशी मनोविज्ञान’ (Indigenous Psychology) का विकास है। इसके अनुसार देश विशेष के मनोवैज्ञानिक अपनी संस्कृति के व्यक्तियों के व्यवहार से अपेक्षाकृत अधिक परिचित होते हैं, अतः उनके द्वारा स्वदेशी परीक्षणों से किये गये अध्ययन की प्रवृत्ति में वृद्धि परिलक्षित हो रही है।

मनोविज्ञान का समग्र आयाम (GESTALT APPROACH OF PSYCHOLOGY)

अथवा (OR)

गेस्टाल्ट मनोविज्ञान (GESTALT PSYCHOLOGY)

मनोविज्ञान (Psychology) का प्रारम्भ दर्शनशास्त्र (Philosophy) से हुआ। “आत्मा के अध्ययन” (Study of Soul) से उदय हुआ और वर्तमान में व्यवहार या मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन (Study of Behaviour or Mental Process) के रूप में बड़े रूप में स्वीकार्य है। मनोविज्ञान के समग्र विकास (Whole/total Pattern or Configuration Development of Psychology) को समझने की सुविधा के लिए इसे दो काल खण्डों में विभाजित करना उचित रहेगा। यथा—

- (A) पूर्व वैज्ञानिक काल का मनोविज्ञान (Prescientific Period Psychology) तथा
- (B) वैज्ञानिक काल का मनोविज्ञान (Scientific Period Psychology)।

वर्तमान के अधिकांश मनोवैज्ञानिकों ने वैज्ञानिक काल के मनोविज्ञान (Scientific Period Psychology) की शुरुआत 1879 में विलहेल्म वुण्ट (Wilhelm Wundt) के अध्ययन-स्वरूप से ही स्वीकार की है। मनोविज्ञान के विकास को विभिन्न सम्प्रदायों (Schools) के रूप में अध्ययन किया जाता रहा है। इन्हीं में से एक है—गेस्टाल्टवाद (Gestaltism)। इसे गेस्टाल्ट मनोविज्ञान (Gestalt Psychology) के रूप में भी ख्याति प्राप्त है। इस गेस्टाल्टवाद के अतिरिक्त संरचनावाद (Structuralism), प्रकार्यवाद (Functionalism), व्यवहारवाद (Behaviourism) तथा मनोविश्लेषण (Psychoanalysis) का अपना विशेष महत्व है।

गेस्टाल्टवाद या गेस्टाल्ट मनोविज्ञान (Gestalt Psychology) का प्रतिपादन जर्मनी मनोवैज्ञानिक—मैक्स बरदाईमर (Max Wertheimer, 1920) द्वारा की गई। जर्मन भाषा के “Gestalt” शब्द का तात्पर्य—“समग्र रूप” से होता है। गेस्टाल्टवादियों की मुख्य मान्यता है कि—

“व्यक्ति किसी वस्तु या अवधारणा से आंशिक रूप से नहीं बल्कि समग्र या सम्पूर्ण रूप (Gestalt form) में सीखता है।”

इस मूल अवधारणा के कारण इसे “सम्पूर्णवाद” कहना भी गलत न होगा। इस सिद्धान्त में प्रत्यक्षीकरण (Perception) पर विशेष बल दिया जाता है।

अतः इस सिद्धान्त (Gestalt Theory) के अनुसार व्यक्ति किसी वस्तु का पूर्ण रूप से ही प्रत्यक्षीकरण कर पाता है। ऐसा आंशिक या किसी भाग विशेष का प्रत्यक्षीकरण (Perception) नहीं कर सकता। इस सिद्धान्त के अनुयायियों ने व्यवहार की सम्पूर्णता के अध्ययन में विशेष बल दिया। गेस्टाल्ट (Gestalt) जर्मन शब्द के लिए हिन्दी में आकार (Shapes), समाकृति (Configuration) या आकृति (Form) जैसे शब्दों का उपयोग किया जाता है। इस सिद्धान्त या मान्यता के अनुसार—

“मनोविज्ञान मानसिक क्रियाओं के संगठन का विज्ञान है।” (Psychology is Science of Mental activities Organization.)

अध्ययन की जाने वाली इन मानसिक प्रक्रियाओं के अन्तर्गत सीखना (Learning), प्रत्यक्षीकरण (Perception) तथा चिन्तन (Thinking) इत्यादि को सम्मिलित किया जा सकता है। कुछ मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञों ने गेस्टाल्टवाद को संरचनावाद (Structuralism) तथा व्यवहारवाद (Behaviourism) की मध्य की धारणा माना है। मनोविज्ञान के समग्रता उपागम (Gestalt Approach of Psychology) का उदगम तो 1912 से हो गया लेकिन सन् 1920 से इसकी मनोविज्ञान में विशेष अहमियत स्वीकारी जाने लगी। जैसा कि पूर्व में भी उल्लेखित किया जा चुका है कि गेस्टाल्ट का सीधा अर्थ समग्रता (Wholeness) से होता है। जिसका प्रत्यक्षीकरण में विशेष महत्व देखा जाता है अर्थात् प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया में इस समग्रता उपागम (Gestalt Approach) की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसे गेस्टाल्ट सिद्धान्त (Gestalt Theory) भी कहते हैं। इसकी व्याख्या मूलतः निम्न चार बिन्दुओं के आधार पर की जा सकती है—

1. आकृति-पृष्ठभूमि (Figure-ground)—इस सिद्धान्त या उपागम के अनुसार व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण या प्रत्यक्षण (Perception) अलग-अलग रूप या भागों में न करके सम्पूर्ण रूप से (as a whole) करता है। प्रत्यक्षीकरण की इस सम्पूर्णता (Wholeness) का अपना एक विशेष गुण या विशेषताएँ होती हैं जो कि उस वस्तु या चित्र के भिन्न-भिन्न भागों (Parts) के प्रत्यक्षीकरण की विशेषताओं से भिन्न होती है। आकृति पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने के लिए यहाँ दो चित्र—दो चेहरों एवं एक पात्र की प्रतिवर्ती चित्रों का उदाहरण दिया जा रहा है। प्रथम—दो चेहरों एवं एक आकृति का उदाहरण—प्रथम पात्र को व्यक्त करने वाली प्रतिवर्ती आकृति का उदाहरण। इसमें दो चेहरों के साथ-साथ एक फूलदान (Flower Vase) जैसा पात्र स्पष्ट नजर आ रहा है। अतः एक को देखने पर दूसरी “पृष्ठभूमि की



आकृति व्यक्ति स्वतः प्रत्यक्षीकृत करता है। इसी प्रकार की प्रतिष्ठानी आकृति का एक उदाहरण—एक चेहरा तथा दो नृत्यक (एक युवक व एक युवती)। द्वितीय भी अवलोकनीय है इसमें उजले में एक व्यक्ति का चेहरा नजर आ रहा जबकि गहरे (काले) दो व्यक्ति नृत्य करते दिख रहे हैं। पूर्व में प्रथम चित्र में उजले में एक पात्र तथा काले में दो चेहरे एक-दूसरे को देखते हुए का देखने वाला स्वतः समग्रता के साथ प्रत्यक्षीकरण करता है।



2. प्रत्यक्षीकृत संगठन (Perceptual Organisation)—प्रत्यक्षीकरण में एक प्रकार का संगठन का स्वरूप भी पाया जाता है। इसमें दोनों ही नियम कार्य करते हैं— चित्र—एक चेहरा एवं दो नृत्यक की प्रतिष्ठानी (1) परिधीय नियम (Peripheral Principles) तथा केन्द्रीय नियम (Central Principles)। सतही तौर पर संगठनों के नियमों को मूल संगठन के नियम (Principles of Primitive Organisation) भी कहा जाता है।

3. समाकृतिकता का सिद्धान्त (Isomorphism Theory)—इस नियम के अनुसार व्यक्ति जब किसी वस्तु या घटना का प्रत्यक्षीकरण करता है तो उसके मस्तिष्क में सम्बन्धित क्षेत्र में कुछ परिवर्तन आते हैं जिनमें परस्पर सीधा तथा स्पष्ट सम्बन्ध (Direct & Clear Relationship) पाया जाता है जो कि व्यक्ति के प्रत्यक्षीकरण के स्वरूप या संरचना को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

4. क्षेत्र बल (Field Forces)—मनोविज्ञान के इस उपागम (Approach) के अन्तर्गत दो प्रकार के बलों (Forces) की कल्पना की जाती है—संसक्त या संसंजक बल (Cohesive Force) तथा अवरोधक बल (Restraining Forces)। दृष्टि क्षेत्र में उपस्थित उद्दीपकों के स्वरूप (Nature of Stimuli in Visual Field) में प्रत्यक्षीकरण के समय इस प्रकार के बलों की उत्पत्ति होती है। जब समान उद्दीपक एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं तब हम मिलने की प्रवृत्ति (Tendency) को ही संसंजक बल (Cohesive Force) कहा जाता है।

सारतः समग्रता उपागम के आधार पर प्रत्यक्षीकरण की व्याख्या या विवेचना काफी सरल एवं सामान्य रूप में करना सम्भव है।

—(डॉ. सोलंकी, 2021)

अभ्यास प्रश्न (Exercise Questions)

○ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

1. मनोवैज्ञानिक कार्य प्रक्रिया के सन्दर्भ में जैविक उपागम की विवेचना कीजिए।
2. मनोविज्ञान के संज्ञानात्मक उपागम का विस्तृत वर्णन कीजिए।

अथवा

संज्ञानात्मक मनोविज्ञान से आप क्या समझते हैं? इसकी व्याख्या कीजिए।

3. मनोविश्लेषणात्मक उपागम में मनोविज्ञान की विवेचना कीजिए।
4. फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद की आलोचना देते हुए नव मनोविश्लेषणवाद का उल्लेख कीजिए।
5. मानवतावादी उपागम से मनोविज्ञान अथवा मानवतावादी मनोविज्ञान का विस्तृत वर्णन कीजिए।
6. मनोविज्ञान का विकासात्मक उपागम क्या है? उल्लेख करें।
7. अन्तर-सांस्कृतिक मनोविज्ञान से आप क्या समझते हैं? इसके मुख्य उपागमों का वर्णन कीजिए।
8. मनोविज्ञान के व्यवहारात्मक आयाम से आप क्या समझते हैं? विस्तृत वर्णन कीजिए।

अथवा

व्यवहारवादी उपागम क्या होता है? इसका मनोवैज्ञानिक उपागम में उल्लेख करें।

मनोविज्ञान के स्वदेशी भारतीय उपागम [INDIGENOUS INDIAN APPROACHES OF PSYCHOLOGY]

विशेषतः सन्दर्भित—श्रीमद् भगवत् गीता, सांख्यदर्शन एवं बौद्धवाद
(Special Reference to Shrimad Bhagwat Geeta, Sankhya-Darshan and Buddhism)

भारतीय मनोविज्ञान या मानसशास्त्र (Indian Psychology) के आदि ग्रन्थ 'वेद' हैं।* स्पष्टतः भारतीय मनोविज्ञान की उत्पत्ति वेद से हुई है, ऐसा कहना कदापि गलत न होगा। 'महर्षि वेदव्यास' ने वेद को चार भागों में विभक्त किया—ऋग्वेद (प्रार्थना-खण्ड), यजुष (यज्ञ का विधान), साम (शान्ति तथा मंगलगान या संगीत खण्ड) तथा अथर्व (धर्म-दर्शन का भाग)। भारतीय प्राचीन मनोविज्ञियों (विद्वानों) ने इन्हें पुनः चार भागों में विभाजित किया—

- (i) संहिता (वैदिक स्तुतियाँ),
- (ii) ब्राह्मण (मन्त्रों की व्याख्या),
- (iii) आरण्यक (वानप्रस्थ, आरण्यगान एवं विधि विधान) तथा
- (iv) उपनिषद् (दार्शनिक व्याख्या)।

स्मरणीय रहे कि प्रत्येक वेद के अपने उपवेद भी हैं—

- (a) ऋग्वेद का आयुर्वेद,
- (b) यजुर्वेद का धनुर्वेद,
- (c) सामवेद का गन्धर्ववेद तथा
- (d) अथर्ववेद का अर्थशास्त्र (Economics) है।

इन चार उपवेदों के अतिरिक्त वेदों के छः अंग भी होते हैं—

- | | | |
|--------------|-----------------|-------------|
| (1) शिक्षा | (2) कला | (3) व्याकरण |
| (4) निरूप्ति | (5) ज्योतिष तथा | (6) छन्द। |

भारतीय संस्कृति के आधार इन्हीं चार वेदों की सुगमता के लिए 18 पुराणों तथा अनेक (सामान्यतः 28 अधिक प्रचलित हैं) उपपुराणों की भी भारतीय मनोविज्ञान (Indian Psychology) या भारतीय मानसशास्त्र में रचना की गई है। बल्कि थोड़ी और गहनता से अवलोकन या अध्ययन किया जाये तो

* उल्लेखनीय है कि श्रीमद्भगवत् गीता भी वेद का ही कुछ अंश या खण्डमात्र है। अर्थात् एक वेद का भी एक अध्याय मात्र गीता है। इसे आदि ज्ञान के महाहिमालय से आने वाली (वेद से प्रणीत) ज्ञान धारा-गंगा कहना बिल्कुल सटीक होगा।

उपरोक्त के अतिरिक्त गीता, योग वशिष्ठ महर्षि कपिल का सांख्य-दर्शन (Sankhya-Darshan), महर्षि पतंजलि का योग (Yog)^{*}, महर्षि गौतम का न्याय-दर्शन, ऋषि-जैमिनि का पूर्व-मीसांसा-दर्शन, ब्रह्मर्षि बादरायण का उत्तर मीमांसा तथा अन्य भारतीय आचार्यों—महाचार्यों से लेकर अनेक पश्चिम विद्वानों तक की टीकाएँ एवं भाष्य—भारतीय मनोविज्ञान की मूल सामग्री से लवालव भरी पड़ी हैं। ये हम भारतीयों के लिए निःसन्देह नितान्त गर्व की बात है। ये खेद जनक है कि—“विश्व के अधिकांश आधुनिक विद्वान् (मनोवैज्ञानिक) ‘मनोविज्ञान का उदय का प्रारम्भ’ कुछ ही सदी-पूर्व का उल्लेखित करते या मानते हैं। जबकि मनोविज्ञान या मानस शास्त्र (Indian Psychology) तो ‘भारतीय दर्शन’ का प्राण है और भारतीय दर्शन तो मनुष्य के समकक्ष ही प्राचीनतम् है।”

भारतीय मनोविज्ञान का मूल ‘वेद (Ved)’ है। मनोविज्ञान के लिए मानस शास्त्र या मनःशास्त्र (Psychology : Psyche + logy) शब्द का उपयोग किया गया है। संहिता एवं ब्राह्मण ग्रन्थों में ‘मनस्’ शब्द मापन (Measurement) के अर्थ में अधिक प्रयुक्त किया गया है। इस सन्दर्भ में डॉ. लक्ष्मी शुक्ला (भोपाल, 1971) का कथन है कि—“मानव जीवन एक क्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने ज्ञान तथा सुखादि भावनाओं को नापता (Measure) है।”

सर्वांगीण रूप से देखा जाये तो भारतीय मनोविज्ञान के स्वरूप निर्धारण में महर्षि-वेदव्यास, पतंजलि, कपिल, गौतम, चरक तथा सुश्रुत आदि अनेक विद्वानों ने अपने साधनापरक अनुभवों एवं शोधपरक तथ्यों को प्रस्तुत करते हुए अपनी-अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय मनोविज्ञान का क्षेत्र विस्तार अत्यन्त विस्तृत है जिसकी ओर लेखक (डॉ. सोलंकी) मात्र संकेत करने में ही समर्थ है तथा विषय प्रसंगवश कुछ शब्द सीमा की मर्यादा भी प्रभावी है।

भारतीय चिंतकश्रेष्ठ डॉ. राधाकृष्णन अपनी महान् कृति ‘सत्य की खोज’ में उल्लेख करते हैं—

“चाहे विज्ञान हो, प्रौद्योगिकी हो, मानविकी हो या फिर कला, जो कुछ भी पढ़ेंगे तो आपको विदित होगा कि सभी का लक्ष्य एक ही है—सत्य की खोज।”

वे ‘हमारी संस्कृति’ में कहते हैं कि—“वर्तमान की स्थिति यह है कि व्यक्ति/आदमी न तो विज्ञान की गहराई में उत्तरना चाहता है और न ही धर्म की।” आगे आप कहते हैं—“मनुष्य की ज्ञानेन्द्रियों ने उसे बेहिर्मुखी बना दिया है इसलिए उसका अपने आपसे सम्पर्क बिल्कुल टूट गया है। वह पथभ्रष्ट हो गया है, उसकी आत्मा (मनस) शक्ति और सम्पत्ति जैसी बाह्य वस्तुओं में पूर्णतः निमग्न हो गई है।

प्रभुदयाल अग्निहोत्री (1971) कहते हैं—

“पाश्चात्य मनोविज्ञान नास्तिकवादी है वही भारतीय मनोविज्ञान आस्तिकवादी है।”

सांख्य = इस चराचर जगत् की उत्पत्ति का आदि विचार

योग = मनुष्य के मनोदैहिक विकास (Psychosomatic Development)

की व्यवस्थित प्रक्रिया। —प्रो. (डॉ.) सोलंकी, एम. के. 2021

श्रीमद्भगवत् गीता में मनोविज्ञान के आयाम

(APPROACH OF PSYCHOLOGY IN SHRIMAD BHAGWAT GEETA)

श्रीमद्भगवत् गीता मूलतः: वेद के कुछ अंश का सारवत् उपवाचन है (महाभारत के भीष्मपर्व में भी उल्लेखित है। 18 अध्याय 679 श्लोक हैं)। गीता के अनुसार—“परमतत्व पुरुषोत्तम है।” जो कि अपने अन्दर ‘क्षर’ और ‘अक्षर’ दोनों को धारण किये हुए है जिसकी मूलतः दो ही अवस्थाएँ हैं—एक, ‘परा’ तथा दूसरी, ‘अपरा’। प्रकृति पुरुषोत्तम की अपनी ही शक्ति होती है जो कि सृष्टि के रूप में अभिव्यक्त होती है तथा अन्ततः उसी में लय या समाहित हो जाती है। इस ईश्वरीय तत्व की है—‘पराप्रकृति’ ही ‘जीव’ बनती है और वह इस जगत् को धारण करती है। ये जीव ही प्राणि मात्र (हमारे भी) भीतर (अन्दर) दिव्य सत्ता के सारभूत रूप में निवास करता है। अपरा प्रकृति—“परा प्रकृति का ही प्रति

* सावधान! योग (Yog) को ‘योगा (Yoga)’ कहने का लेखक पुरजोर विरोध करता है। अतः योग को योग ही कहें।

विकास (Re-development) है जिसका सीधा तात्पर्य होता है—“निम्नतर प्रकृति का उच्चतर प्रकृति में रूपान्तरण होना।” गीताकार के निर्देशानुसार यह दिव्य रूपान्तरण—केवल निरासकत (बिना आसक्ति के) कर्म करने से तथा (ईश्वरीय तत्व के प्रति) पूर्ण समर्पण^{*} करने के साथ-साथ “अपनी दिव्यता का अनुभव करने” अ॒ से ही सम्भव होता है।

गीता का उद्गम वेद से है। वेद आदि भारतीय प्राच्य ग्रन्थों में मन और मनोविज्ञान का बहुत विस्तार से उल्लेख मिलता है। जिसे कुछ संक्षिप्त रूप में निम्नवत् (मन के सन्दर्भ में) विन्दुवार समझा और समझाया जा सकता है—

- ब्राह्मण ग्रन्थों में मन/मनस को ही ‘ब्रह्म’ कहा गया है, जो सर्वशक्तिमान तथा परमात्म रूप है।
- मन सृष्टि का कर्ता है। इसीलिए इसे सृष्टि सृजेता (निर्माता) या प्रजापति भी कहा गया है।
- मन की कल्पना शक्ति का प्रतिफल यह संसार या सृष्टि है। मन जैसा चाहता है, वैसा ही सृजित एवं घटित होता है। (स्मरणीय रहे यहाँ ‘जाग्रत मन’ से तात्पर्य है।)
- मन की शक्ति अनन्त होने के कारण इसे ‘अपरिमित’ भी कहा जाता है। इसको इसी दिव्यता के कारण ‘देव’ भी कहते हैं।
- मन की प्रेरणा शक्ति को मनीषियों ने ‘महा अग्नि’ से तुलना करके स्तुति की है।
- मन अनन्त शक्तियों एवं कल्पना-सामर्थ्यों का विशाल भण्डार है जिसमें कुछ भी असम्भव नहीं है।
- मन विचारों की महानदी है जिसकी काफी हद तक अभिव्यक्ति या प्रकाशन वाणी या कलम (लेखनी) के द्वारा सम्भव होता है।
- व्यक्ति के मन का उसकी वाणी के साथ विशिष्ट एवं असाधारण सम्बन्ध होता है। अतः मन और वाणी का परस्पर न्यूनाधिक नियन्त्रण भी होता है।
- इस मन में ही आत्मा (आत्म तत्व) का वास होता है, अर्थात् मन में ही आत्मा (चेतना) की प्रतिष्ठा है।
- समस्त प्राणों (पंच प्राण होते हैं) का अधिपति भी यह मन ही होता है। मन जैसा प्राणों को आदेश देता है उसी प्रकार सभी प्राण गति (क्रियान्वयन) करते हैं।*
- मनुष्य ही सभी प्राणियों के प्रत्यक्षीकरण (Perception) उसके मन के ही नियन्त्रण में होते हैं। ये मन देखने, सुनने तथा कहने में पूर्णतः समर्थ हैं। टैलीपैथी इसका सशक्त उदाहरण होता है।
- व्यक्ति का मेच्छा, संकल्प-विचार, दृढ़-विश्वास, विचिकित्सा (सन्देह आदि), धैर्य, लज्जा, अधीरता, ज्ञान-चिन्तन भी (भय, डर व आतंक) इत्यादि तत्व भी मन के ही नियन्त्रणाधीन हैं।
- मन के ज्ञानदाता-गुण-धर्म के कारण भारतीय-दार्शनिक व मनीषी ‘परमज्योति’ भी कहते हैं जिसे सर्व-ज्ञाता या सर्वेश्वर कहना गलत न होगा।
- मन चेतना रूप (Consciounces) है और यही चेतना मानव का निर्माण या सृष्टि-सृजन करती है।
- मन की प्रवृत्ति के अनुसार ही उस व्यक्ति के स्वभाव और व्यक्तित्व का विकास (Development of Personality and Self-nature) होता है। स्पष्टतः व्यक्ति के मन अध्ययन ही उसके व्यक्तित्व का अध्ययन है (Personality Study is Psychology)।

* इसी समर्पण को योग-दर्शन में ‘ईश्वर प्राणिधान’ कहकर सम्बोधन किया गया है जोकि इसी पुस्तक के 10वें अध्याय में अवलोकनीय है। —प्रो. (डॉ.) एम. के. सोलंकी

अ॒ “अपनी दिव्यता का प्रतिपल अनुभव करना” ही—‘योग मनोविज्ञान’ में उल्लेखित—‘ब्रह्मचर्य’ का यथार्थ अर्थ होता है, जिसका मात्र एक चरण होता है—“बिन्दु सरक्षण करना।” लेखक के शोध-ग्रन्थ में अवलोकनीय है।

—प्रो. (डॉ.) एम. के. सोलंकी (2001 में प्रस्तुत)

* इसे नैदानिक मनोविज्ञान (Clinical Psychology) की भाषा में ऐसे भी समझ सकते हैं कि जैसा मन आदेश देता है उसी अनुसार स्नायु मण्डल तथा रक्त प्रवाह की गति का संचालन होता है। —प्रो. (डॉ.) एम. के. सोलंकी (2021)

- सृष्टि रूप इस महायज्ञ का मन ही ब्रह्म है, ये सृष्टि का (सृष्टि चक्र का) निर्देशक है, अनन्त शक्ति का स्वामी है इसलिए अनन्त भी कहते हैं।

गीताकार ने इसी 'मन' को ही 'मैं' कहा है।

—प्रो. (डॉ.) सोलंकी, एम. के. (2021)

भारतीय संस्कृति में प्रचलित छः दर्शनों की भाँति 'गीता दर्शन' भी समकांटोन बहु-प्रचलित दर्शन है। 'गीता का कर्म योग' उपनिषदों के ब्रह्मवाद के बाद एक महत्वपूर्ण मौलिक दर्शन माना जाता है। समस्त वैदिक दर्शनों ने एक-मत से 'कर्म योग का महत्व' स्वीकार किया है। इसे व्यवहारिक मनोवैज्ञानिक दृष्टि से 'प्रतिनिधि भारतीय जीवन दर्शन' कहना कदापि गलत न होगा।

गीता के कर्म योग में 'अध्यात्म और जीवन का अद्भुद समन्वय' स्पष्ट अवलोकनीय है। भारतीय दर्शनों में अध्यात्म और कर्म का इससे अधिक श्रेष्ठ समन्वय अनुभव नहीं होता है। गीता के कर्मयोग का सन्देश देश या किसी अन्य राष्ट्र के लिए 'एक संजीवन यन्त्र' से कम नहीं है। गीताकार के अनुसार सन्यास का सीधा अर्थ 'त्याग' से होता है। त्याग के सन्दर्भ में यह भी स्पष्ट करना प्रासंगिक हो जाता है कि भोजन, शयन व वस्त्र आदि प्राकृतिक कर्मों का त्याग किया जा सकता है। काम्य (Sexual) कर्मों का भी त्याग सम्भव है। गीता में इसी को सन्यास कहा गया है। फल की कामना त्यागकर लोक कार्य सम्भव है। इस प्रकार लोकं कार्य के निमित्त निष्काम कर्म करना 'जीवन का आदर्श' है। यह मोक्ष का भी साधन माना गया है। गीता का यह निष्काम कर्मयोग का सन्देश अधिकांश भारतीय दर्शनों (Indigenous philosophies) ने स्वीकार किया है।

"ज्ञान-योग गीता का आध्यात्मिक आधार है, जबकि इसका भक्ति-योग भावात्मक पक्ष है।"

—प्रो. (डॉ.) सोलंकी (2021)

लेखक के लिए यह नितान्त गर्व का विषय है कि उसका शोध कार्य (2001) गीता के मनोदैहिक पक्ष से प्रेरित है। लेखक गीता-प्रकटीकरण को (कुरुक्षेत्र प्रकरण) मनोदैहिक घटना क्रम के रूप में देखा तथा इसी आधार पर अपने शोध-शीर्षक को निर्धारित करने की पृष्ठभूमि माना।

सांख्य-दर्शन के सिद्धान्त सामान्यतः ऊँचे तर्कों पर आधारित हैं। श्रीमद् भगवत् गीता के दार्शनिक सिद्धान्त सांख्य दर्शन से अनेक अंशों में समानता अवश्य रखते हैं लेकिन श्रीमद् गीता-दर्शन सांख्य दर्शन से बहुत आगे का दर्शन है। सांख्य-योगी संसार में रहता हुआ, समस्त सांसारिक कार्यों को करता हुआ न ही उसमें लिप्त होता है और न ही अन्त समय तक उसमें फँसता ही है। श्रीमद् गीता में सांख्य योग का पर्याप्त वर्णन (विशेषतः 5वें अध्याय में) मिलता है।

सांख्य दर्शन में मनोविज्ञान के आयाम

(APPROACH OF PSYCHOLOGY IN SANKHYA DARSHAN)

भारतीय दर्शन के मूलतः छः प्रकारों में एक 'सांख्य दर्शन' (Sankhya-Darshan) है। प्राचीन काल से ही यह अति लोकप्रिय दर्शन रहा है। अद्वैत वेदान्त से सर्वथा विपरीत मान्यताओं पर आधारित इस दर्शन का प्रतिपादन महर्षि कपिल द्वारा किया गया। 'सांख्य' का शाब्दिक तात्पर्य—'संख्या सम्बन्धी' या विश्लेषण होता है। सांख्य-दर्शन की सबसे प्रमुख धारणा—“सृष्टि के प्रकृति (पञ्च महाभूतों की सृष्टि-स्थूलता) तथा पुरुष (जीवात्मा या चेतन तत्व) की प्रधानता पर केन्द्रित है।” भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से सांख्य-दर्शन का अत्यन्त ऊँचा (सर्वोच्च कहना गलत न होगा) स्थान रहा है। सांख्य-दर्शन के विचारों का उल्लेख महाभारत (विशेषतः शान्ति पर्व) में भी मिलता है। गीता में सांख्य-दर्शन का प्रभाव अवलोकनीय है।

सांख्य-दर्शन में प्रत्येक छोटी-बड़ी सांसारिक (लौकिक) समस्या को ईश्वर का नियम न मानकर—प्राकृतिक तालमेल बिगाड़ने तथा जीवों (मनुष्यों) के पुरुषार्थ (समुचित उद्यम) न करने को ही माना जाता है। इसको कुछ अन्य शब्दों में ऐसे भी कह सकते हैं कि—

"सांख्य-दर्शन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें सृष्टि की उत्पत्ति भगवान् के द्वारा नहीं मानी गई है बल्कि इसे मात्र एक विकासात्मक प्रक्रिया के रूप में ही माना या समझा जाता है।"

अर्थात् विकासात्मक मनोविज्ञान (Development Psychology) की प्राचीनतम पृष्ठभूमि सांख्य-दर्शन में स्पष्ट देखी जा सकती है। सांख्य-दर्शन मानता है कि यह चराचर सृष्टि अनेक-अनेक अवस्थाओं (Phases) से गुजरती हुई अपने वर्तमान (विद्यमान) स्वरूप को प्राप्त हुई है। कुछ विद्वान महर्षि कपिल के इस विचार (सांख्य-दर्शन) को अनीश्वरवादी के रूप में भी देखते हैं।

विश्व की चराचर सृष्टि मात्र को सांख्य-दर्शन 'प्रकृति-पुरुष मूलक' मानता है। अर्थात् सांख्य का मत है कि केवल चेतन या केवल अचेतन पदार्थ के आधार पर इस जगत् की पूर्ण व्याख्या नहीं की जा सकती है। अतः सांख्य ब्रह्म या आत्मा को इस चराचर जगत् का मूल मानता है। साथ ही जड़ एवं चेतन की सत्ता को भी स्वीकारता है। सांख्य-सृष्टि के लिए 25 तत्वों को मानने के साथ-साथ ईश्वर को 26वें तत्व के रूप में स्वीकारता है। स्पष्टतः सांख्य-दर्शन को अनीश्वरवादी मानना गलत है यथार्थ में यह भी ईश्वरवादी दर्शन है।

सांख्य-दर्शन का मुख्य आधार 'सत्कार्यवाद' है। इस सिद्धान्त के अनुसार—"बिना कारण के कार्य की उत्पत्ति नहीं हो सकती।" ये सिद्धान्त बौद्धवाद के काफी समीप है। सत्कार्यवाद का सीधा तात्पर्य यह होता है कि—"प्रत्येक कार्य, अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में विद्यमान होता है।" अर्थात् कार्य अपने कारण का ही सार होता है। वस्तुतः कार्य और कारण समान प्रक्रिया के ही व्यक्त-अव्यक्त दो रूप होते हैं।

सत्कार्यवाद के दो भेद या प्रकार होते हैं—

(i) परिणामवाद—कारण वास्तविक रूप में कार्य में परिवर्तित हो जाता है। जैसे—तिल तेल में या दूध दही में।

(ii) विवर्तवाद—परिवर्तन वास्तविक न होकर, आभास मात्र होता है। यथा—रस्सी में सर्प का आभास होना।

प्राचीन काल से ही महाभारत, गीता, रामायण, स्मृतियों तथा पुराणों में सर्वत्र सांख्य का पर्याप्त उल्लेख अवलोकनीय है।

सांख्य-दर्शन में भी प्रकृति के तीन गुण—सत, तम और रज बताये गये हैं। सांख्य-दर्शन के अनुसार विश्व इसी त्रि-गुणात्मक प्रकृति का वास्तविक परिणाम मात्र है। कुछ विद्वानों ने सांख्य का सटीक अर्थ—'सम्यक् ज्ञान' कहा तो कुछ ने संख्या मात्र माना है।

सांख्य-दर्शन यथार्थ में—'द्वैतवादी' है। अर्थात् इसके अनुसार सिर्फ दो ही सत्ताएँ होती हैं—एक पुरुष और दूसरी प्रकृति। यह प्रकृति तीनों गुणों सत, रज एवं तम से युक्त होती है।

"सृष्टि का अस्तित्व प्रकृति-प्रधान है और पुरुष कुछ अर्थों में प्रकृति के समान होते हुए भी प्रकृति के विपरीत ही होता है।"

—प्रो. (डॉ.) सोलंकी, एम. के. (2021)

प्रकृति अचेतन या जड़ होने के कारण स्वतः विकास नहीं करती है, बल्कि जब कोई चेतन सत्ता अर्थात् पुरुष उसमें रुचि लेता है तभी प्रकृति विकास करती है। समस्त भौतिक एवं मानसिक तत्व (Physical and Psychological Elements) इस विकास (Development) में अन्तर्निहित रहते हैं। जोकि विकास की अलग-अलग अवस्थाओं में न्यूनाधिक प्रकट भी होते हैं। जड़ तत्व (प्रकृति) की पाँच अवस्थाएँ ही निम्न पंच महाभूत कहलाती हैं—

1. पृथ्वी,
2. जल,
3. अग्नि,
4. आकाश एवं
5. वायु।

ये पंच महाभूत ही स्थूल सृजन का आधार होते हैं।

रामरत्न विकास इसी आद्यशक्ति—प्रकृति में ही सुप्तावस्था में निहित या विद्यमान रहता है, जबकि पुरुष इन विकास तत्वों (सूक्ष्म एवं स्थूल विकास तत्वों) में आवृत्त रहता है। यथात् में पुरुष खयं निष्क्रिय और उदासीन ही रहता है। पुरुष अपने अविवेक के कारण बौद्ध के साथ तादात्म्य (Identity) स्थापित कर लेता है परिणामतः वह स्वतन्त्र या तटस्थ होते हुए भी मोहग्रस्त हो जाता है। जिसका प्रतिफल होता है “अनेक दुःख, कष्ट व प्रतिबलात्मक कारकों (Stressful Factors) का शिकार होना। अज्ञान ही दुःख व कष्ट का मूल कारण है। जिससे मुक्ति सिर्फ 'विवेक' के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है।” विवेक का सीधा तात्पर्य होता है—“पुरुष का प्रकृति से पृथकत्व का ज्ञान।”

पुरुष अपनी यथार्थ प्रकृति में शुद्ध चेतना (Fine Consciousness) है जो कि मनोदैहिक रचना (Psychosomatic Structure) से पूर्णतया भिन्न या स्वतन्त्र है। “जब पुरुष को अपनी सारभूत प्रकृति (अपने वास्तविक स्वरूप) का बोध हो जाता है तो वह प्रकृति के अधिक बन्धन में नहीं पड़ता है।” उसे मोक्ष की प्राप्ति प्रत्यक्ष होती है।

विवेक केवल बौद्धिक ही नहीं होता अपितु यह तो भौतिक एवं आध्यात्मिक अनुशासन की उपलब्धि मात्र होती है।

—प्रो. (डॉ.) सोलंकी, एम. के. (2021)

सांसारिकतः: जीव सूक्ष्म एवं स्थूल शरीरों में आवृत्त रहता है और सांसारिक कष्टों को भोगता है क्योंकि वह अपनी आत्मा का शरीरों के साथ तादात्म्य या तारतम्य बना लेता है। शरीरों के साथ उसका यह (दुःखद-मूलक) तारतम्य या तादात्म्य—‘अविद्या’ के कारण से ही होता है। जब इस जीव को अपने सारभूत तत्व ब्रह्म की अनुभूति होती है, तभी उसका ये शरीरों के प्रति तादात्म्य समाप्त हो जाता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

यहाँ एक विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि अधिकांश भारतीय दार्शनिकों का मत (जिसका लेखक भी पक्षधर है) है कि—

“विकास के लिए पुनर्जन्म अनिवार्य है।”

“Rebirth are necessary for Development.”

बौद्धवाद में मनोविज्ञान के आयाम

(PSYCHOLOGICAL APPROACH IN BUDDHISM)

भारतीय दार्शनिक सिद्धान्तों (Indian Philosophical Theories) अथवा स्वदेशी भारतीय मनोविज्ञान (Indigenous Indian Psychology) में केवल सांख्य, योग, वेदान्त आदि परम्पराएँ ही सम्मिलित नहीं हैं अपितु बौद्ध एवं जैन दर्शन भी सम्मिलित हैं। बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध थे, इन्हें बुधत्व से पूर्व सिद्धार्थ कहा जाता था। बौद्धवाद—बौद्ध धर्म का ही व्यापक आयाम या उपागम (Approach) है। बौद्धवाद पर आधारित बौद्धग्रन्थों में ‘जीवात्मा’ एवं ‘परमात्मा’ शब्द का तो उल्लेख नहीं मिलता, लेकिन इसके स्थान पर ‘बोधि चित्त’ एवं ‘शून्य’ शब्द का व्यावहारिक उल्लेख मिलता है। इसमें ‘बोधि चित्त’ को ‘जीवात्मा’ तथा परम तत्व ‘परमात्मा’ के लिए शून्य का उल्लेख मिलता है। बौद्धवाद योग-साधना के अनुशरण को भी महत्वपूर्ण मानता है। मूलतः बौद्धवाद राजयोग तथा हठयोग से साधना करने का प्रचलन करता है। इसाई धर्म के बाद बौद्ध धर्म विश्व का दूसरा सबसे बड़ा धर्म माना जाता है। बौद्ध धर्म के प्रमुख सम्प्रदाय हैं—(i) हीनयान, (ii) थेरवाद, (iii) महायान, (iv) वज्रयान। दुनिया में लगभग 2 अरब (29% जनसंख्या) लोग बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं जो कि लगभग विश्व के 200 देशों में पाये जाते हैं।

बौद्धवाद के धार्मिक दर्शन के मूलतः चार उद्देश्य प्रचलित हैं—

1. ज्ञान की साधना करें,
2. ध्यान का अभ्यास करें,
3. सामग्री का त्याग करें तथा
4. दया और करूणा का पक्ष लें।

बौद्ध धर्म भारत की क्षमण परम्परा से निकला धार्मिक दर्शन है। इसके प्रति पादक महात्मा बुद्ध शाक्य मुनि (गौतम बुद्ध) का समय 563 ईसा पूर्व से 483 ईसा पूर्व तक रहा। गौतम बुद्ध को "एशिया का ज्योति पुंज" भी कहा जाता है। 563 ई. पूर्व इनका जन्म शाक्य गणराज्य की राजधानी कपिल वस्तु के निकट लुम्बिनी, नेपाल में हुआ। सिद्धार्थ के जन्म के सात दिन बाद ही इनकी माँ मायादेवी का देहान्त हो गया। इनकी सौतेली माँ गौतमी ने इनको पाला था।

युवावस्था में ही सिद्धार्थ को नगर भ्रमण के दौरान चार दृश्यों ने इन्हें विशेष रूप से प्रभावित किया—

(i) एक बूढ़ा व्यक्ति, (2) एक बीमार व्यक्ति, (3) शव तथा (4) संन्यासी।

मात्र 29 वर्ष की अवस्था में संसार को दुःख का कारण मानते हुए संन्यास ग्रहण किया। बिना अन्न-जल ग्रहण किये 6 वर्ष की कठिन तपस्या के पश्चात् 35 वर्ष की अवस्था में वैशाख पूर्णिमा की रात्रि निरंजना नदी के तट पीपल के वृक्ष के नीचे इन्हें आत्म-ज्ञान प्राप्त हुआ। ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् ही सिद्धार्थ 'बुद्ध' तथा वह स्थान बोधगया कहलाया। बुद्ध ने पहला उपदेश सारनाथ में दिया। यद्यपि इनके सर्वाधिक उपदेश कौशल देश की राजधानी 'श्रीवर्स्ती' में दिये गये थे। बुद्ध की मृत्यु 80 वर्ष की अवस्था में हुई जिसे 'महापरि-निर्वाण' कहा गया।

बौद्ध धर्म अनीश्वरवादी है इसमें आत्मा की परिकल्पना ही नहीं यद्यपि इसमें पुनर्जन्म की मान्यता है।

तृष्णा के क्षीण होने की अवस्था को ही बुद्ध ने निर्वाण कहा है। बुद्ध ने अपने अनुयायियों को दो भागों में विभाजित किया—

एक-भिक्षुक <बौद्ध धर्म प्रचार के लिए जो लोग संन्यास लेते हैं> तथा दूसरे—उपासक <गृहस्थ जीवन के साथ बौद्ध धर्म अपनाने वाले>।

बौद्ध धर्म में प्रविष्ट होने को 'उपसम्पदा' कहा जाता है। इस धर्म के मूलतः त्रिरत्न माने गये हैं—

(i) बुद्ध, (ii) धम्म, (iii) संघ।

बौद्ध धर्म को दो भागों में मान्यता है—(1) हीनयान, (2) महायान।

इस धर्म का सबसे प्रसिद्ध त्योहार—वैशाख पूर्णिमा <बुद्ध पूर्णिमा> होती है। बौद्ध धर्म में सांसारिक दुःखों से मुक्ति के लिए बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग के रूप में निम्न आठ साधन बताए हैं—

(1) सम्यक दृष्टि	(2) सम्यक संकल्प	(3) सम्यक वाणी
(4) सम्यक कर्मात	(5) सम्यक आजीवन	(6) सम्यक व्यायाम
(7) सम्यक स्मृति	(8) सम्यक समाधि।	

बुद्ध कहते हैं कि इन अष्टांगिक मार्गों के पालन करने से व्यक्ति भव तृष्णा नष्ट हो जाती है तथा उस व्यक्ति को निर्वाण प्राप्त हो जाता है। बुद्ध ने निर्वाण प्राप्ति के लिए निम्न दस नियम (मर्यादाएँ) बताई हैं—

(i) अहिंसा,	(ii) सत्य,
(iii) चोरी न करना,	(iv) किसी भी प्रकार की सम्पत्ति न रखना,
(v) शराब का सेवन न करना	(vi) असमय भोजन न करना,
(vii) सुखद बिस्तर पर न सोना,	(viii) धन संचय न करना,
(ix) महिलाओं से दूर रहना,	(x) नृत्य-गान आदि से दूर रहना।

अनीश्वरवाद के सन्दर्भ में बौद्धवाद की जैन धर्म से समानता देखी जाती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बौद्ध धर्म दो शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है—

(1) अभ्यास तथा (2) जागृति।

कुछ चिन्तकों ने बौद्ध धर्म की नास्तिकों के धर्म के रूप में व्याख्या की है। इसमें व्यक्ति के कर्म को ही उसके सुख-दुःख का कारण माना गया है। इनके प्रधान तीन सूत्र हैं—

मनोविज्ञान की विधियाँ [METHODS OF PSYCHOLOGY]

प्रयोगात्मक, सहसम्बन्धात्मक, निरीक्षणात्मक, अन्तर्दर्शन,
साक्षात्कार, प्रश्नावली तथा प्रकरण अध्ययन विधि
(Experimental, Correlational, Observational, Introspection,
Interview, Questionnaire and Case Study Method)

मनोविज्ञान की विधियाँ (METHODS OF PSYCHOLOGY)

मनोविज्ञान एक विज्ञान है। किसी भी विषय को विज्ञान की संज्ञा प्राप्त करने के लिए उससे सम्बन्धित सामग्री अथवा तथ्यों (Facts) को संकलित (एकत्रित) करने हेतु कुछ निश्चित प्रविधियों का उपयोग किया जाना आवश्यक है। इन प्रविधियों अथवा प्रक्रियाओं को ही 'विधि' (Method) कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, व्यवहार के अध्ययन हेतु प्रयुक्त पद्धतियाँ अथवा विधियाँ ही मनोविज्ञान की विधियाँ/अध्ययन की विधियाँ हैं। समुचित विधि का उपयोग करके ही वैज्ञानिक सत्य की खोज सम्भव है।

कार्ल पियर्सन (Karl Pearson) ने समुचित ही लिखा है कि, "सत्य तक पहुँचने के लिए कोई संक्षिप्त मार्ग नहीं है। संसार का ज्ञान प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक विधि के द्वारा से ही गुजरना पड़ेगा।"

मार्टिन्डेल तथा मौनेचेसी ने उल्लेख किया है कि "विधि से हमारा आशय उस अध्ययन विधि से है जिससे विज्ञान आनुभविक ज्ञान (Empirical Knowledge) की प्राप्ति के लिए अपनी मूलभूत प्रणालियों को व्यवहार में लाता है और अपने उपकरणों तथा प्रविधियों का उपयोग करता है।"

एटकिन्सन, बर्ने, तथा बुडवर्थ (1988) ने मनोविज्ञान के शब्दकोष (Dictionary of Psychology) में विधि की व्याख्या तथ्यों एवं सम्प्रत्ययों के अन्वेषण में सन्निहित व्यवस्थित प्रक्रियाओं¹ के रूप में की गई है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि विधि का तात्पर्य व्यवस्थित प्रणाली अथवा प्रविधि से है जिसके द्वारा तथ्यों की खोज की जाती है।

1 "The systematic procedures involved in the investigation of facts and concepts ..." —Atkinson, Berne, and Woodworth, 1988

अन्तर्दर्शन/अन्तर्निरीक्षण विधि (INTROSPECTION METHOD)

अन्तर्दर्शन विधि मनोविज्ञान की प्राचीनतम विधि है। इसका प्रतिपादन विलहेम बुण्ट एवं टिचनर द्वारा किया गया। अन्तर्दर्शन का शाब्दिक अर्थ है—‘अन्तः + दर्शन’, अर्थात् अपने अन्दर देखना या जाँकना। इस प्रकार इस विधि द्वारा अध्ययन करने हेतु अध्ययनकर्ता स्वयं अपने अन्दर जाँकता है अथवा स्वयं अपना अवलोकन करता है, इसीलिए प्रस्तुत विधि को ‘आत्म-अवलोकन’ अथवा ‘आत्म-निरीक्षण’ या ‘अन्तर्निरीक्षण’ विधि भी कहा जाता है।

टिचनर (Titchener, 1909) के अनुसार, “अन्तर्दर्शन अन्दर देखना है।”¹

हिलगार्ड एवं एटकिंसन (Hilgard and Atkinson, 1967) के अनुसार, “अन्तर्दर्शन आत्मगत (चेतन) घटनाओं तथा अनुभवों को उल्लेख करने का एक रूप है।”²

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि अन्तर्दर्शन एक ऐसी विधि है जिसमें अध्ययनकर्ता स्वयं अपनी मानसिक क्रियाओं अथवा आत्मपरक अनुभवों का क्रमबद्ध रूप में अध्ययन करता है। वह स्वयं अध्ययनकर्ता तथा प्रयोज्य दोनों होता है।

अन्तर्दर्शन विधि के गुण (Merits of Introspection)

अन्तर्दर्शन विधि के निम्नलिखित गुण उल्लेखित हैं—

1. प्राचीन एवं महत्वपूर्ण विधि—अन्तर्दर्शन विधि मनोविज्ञान की प्राचीनतम विधि है। इसका ऐतिहासिक महत्व वर्णनीय है। ‘मनोविज्ञान’ विषय के प्रारम्भ के साथ ही अन्तर्दर्शन विधि का प्रारम्भ हुआ है।

2. अनुभव के क्रमबद्ध अध्ययन हेतु उपयोगी—चेतन अनुभव (Conscious Experience) के अध्ययन हेतु अन्तर्दर्शन विधि का उपयोग अति आवश्यक है। अन्य विधि द्वारा अनुभव का क्रमबद्ध अध्ययन नहीं किया जा सकता है।

3. मानसिक प्रक्रिया का प्रत्यक्ष (Direct) अध्ययन—अन्तर्दर्शन विधि द्वारा ही मानसिक प्रक्रियाओं का प्रत्यक्ष अध्ययन किया जा सकता है।

4. प्रायोगिक प्रदत्त के सत्यापन में सहायक—बाह्य व्यक्त अनुक्रियाओं के सत्यापन में भी अन्तर्दर्शन विधि का उपयोग किया जाता है। प्रयोगशाला में प्राप्त परिणामों तथा प्रयोज्य के अन्तर्दर्शन विवरण का मिलान (Matching) करके अध्ययन की विश्वसनीयता का सत्यापन सम्भव है।

5. मितव्ययी (कम खर्चीली) विधि—अन्तर्दर्शन विधि द्वारा मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन हेतु प्रयोगशाला अथवा उपकरणों की आवश्यकता नहीं होती है, अतः इस विधि से अध्ययन में व्यय (खर्च) नहीं होता है।

अन्तर्दर्शन विधि की सीमाएँ/कमियाँ (Limitations/Demerits of Introspection)

उपर्युक्त गुणों के बावजूद अन्तर्दर्शन विधि में कमियाँ/सीमाएँ भी हैं, जो निम्नलिखित हैं—

1. आत्मनिष्ठ अध्ययन (Subjective Study)—अन्तर्दर्शन विधि द्वारा प्राप्त सूचना आत्मनिष्ठ एवं वैयक्तिक होती है। यह व्यक्ति विशेष का वैयक्तिक (personal) अनुभव होता है।

2. परिवर्तनशीलता (Changing Feature of Introspection)—अन्तर्दर्शन करते समय व्यक्ति की मानसिक स्थिति क्षण-क्षण बदलती रहती है, अतः मानसिक स्थिति का वास्तविक चित्रण कठिन है।

3. सत्यापनीयता का अभाव (Lack of Verifiability)—अन्तर्दर्शन द्वारा प्राप्त तथ्यों की दुबारा जाँच कठिन है। इस प्रकार प्रस्तुत विधि द्वारा प्राप्त परिणामों का सत्यापन सरलता से सम्भव नहीं है।

1 “Introspection is looking within.”

—Titchener, 1909

2 “Introspection is a form of reporting on subjective (conscious) events or experiences.”

—Hilgard and Atkinson, 1967

4. सामान्यीकरण में कठिनाई (Difficulty in Generalization)—अन्तर्दर्शन विधि द्वारा प्राप्त परिणाम आत्मगत, फलतः भिन्न-भिन्न होते हैं, अतः इनके सामान्यीकरण में कठिनाई होती है।

5. अपूर्ण/विकृत सूचना प्राप्त होने की सम्भावना (Deformed Information)—व्यक्ति अपनी मानसिक प्रक्रिया पर स्वयं ध्यान देते हुए जो विवरण (सूचना) प्रदान करता है, उसकी पूर्ण यथार्थता सम्भव नहीं है।

अन्तर्दर्शन विधि का मूल्यांकन (Evaluation of Introspection Method)

अन्तर्दर्शन विधि की उपर्युक्त विशेषताओं एवं सीमाओं पर दृष्टि डालने से यह विदित होता है कि अन्तर्दर्शन वस्तुतः अनुदर्शन (Retrospection) अर्थात् मानसिक प्रक्रिया के घटित हो जाने के पश्चात् उसका आत्म-अवलोकन है। इसकी महत्वपूर्ण सीमाओं/कमियों, यथा—वस्तुनिष्ठता-अभाव, असत्यापनीयता, सामान्यीकरण में कठिनाई इत्यादि को प्रशिक्षण एवं अभ्यास द्वारा बहुत कुछ सीमा तक दूर किया जा सकता है। पूरक विधि (Supplementary Method) के रूप में इस विधि का उपयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वास्तव में, यह एक अद्वितीय विधि है, जो मनोविज्ञान को अन्य विज्ञानों से पृथक् पहचान बनाने में सहायक है।

ड्रमन्ड एवं मेलोनी (Drummond and Mellone) ने समुचित ही उल्लेख किया है कि अन्तर्दर्शन, मनोदिज्ञान में निरीक्षण की मूलभूत विधि है, जिसके बिना हम कुछ भी प्रारम्भ नहीं कर सकते हैं।¹

निरीक्षण विधि (OBSERVATION METHOD)

निरीक्षण अथवा प्रेक्षण विधि चतुर्दिक जगत् (संसार) के विषय में सूचना प्राप्त करने की मूलभूत (Basic) विधि है। मनोविज्ञान ही नहीं बल्कि सभी विज्ञान निरीक्षण का वैज्ञानिक उपकरण (Scientific Tool) के रूप में प्रयोग करते हैं। गुडे एवं हाट (Goode and Hatt, 1964) ने अपनी पुस्तक 'Methods in Social Research' में उल्लेख किया है कि विज्ञान निरीक्षण से प्रारम्भ होता है तथा अपने तथ्यों की अन्तिम वैधता के लिए पुनः निरीक्षण का ही सहारा लेता है।²

वैज्ञानिक अध्ययन की विभिन्न विधियों में निरीक्षण विधि का महत्वपूर्ण स्थान है। मोजर (1958) ने निरीक्षण को वैज्ञानिक पूछताछ की प्राचीन श्रेष्ठ विधि कहा है।³ निरीक्षण विधि में अन्य ज्ञानेन्द्रियों की अपेक्षा आँख का इस्तेमाल अपेक्षाकृत अधिक किया जाता है। यंग (1954) ने निरूपित किया है कि निरीक्षण, नेत्र द्वारा किया गया स्वाभाविक घटनाओं का ऐसा क्रमबद्ध एवं विचारपूर्ण अध्ययन है, जो कि उनके घटित होने के समय पर किया जाता है। निरीक्षण का उद्देश्य जटिल सामाजिक घटनाओं, सांस्कृतिक प्रतिरूपों अथवा मानव आचरण के अन्तर्गत सार्थक अन्तर सम्बन्धित तत्वों के स्वरूप एवं विस्तार को जानना है।⁴

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि निरीक्षण विधि विज्ञान की प्रारम्भिक विधि है, जिसमें स्वाभाविक परिस्थितियों में घटित होने वाले व्यवहार का अवलोकन, अंकन, विश्लेषण, तथा सामान्यीकरण किया जाता है।

वैज्ञानिक निरीक्षण की विशेषताएँ (Characteristics of Observation)

वैज्ञानिक निरीक्षण की प्रमुख विशेषताएँ अग्रलिखित हैं—

- 1 "Introspection is the fundamental method of observation in Psychology, without which we could not make a beginning." —Drummond and Mellone
- 2 "Science begins with observation and must ultimately return to observation for its final validation." —Goode and Hatt, 1964
- 3 "Observation can fairly be called the classic method of scientific enquiry." —Moser, 1958
- 4 "Observation is a systematic and deliberate study through the eye of spontaneous occurrences at the time they occur. The purpose of observation is to perceive the nature and extent of significant inter-related elements within complex social phenomena, cultural patterns or human conduct." —Yung, 1954

1. निरीक्षण में अन्य ज्ञानेन्द्रियों की अपेक्षा आँख का सर्वाधिक प्रयोग

2. निरीक्षण स्वाभाविक परिस्थिति में घटित

3. सुनियोजित (समय, बारम्बारता, विधि इत्यादि का पूर्व निर्धारण)

4. स्मृति को कम महत्व दिया जाना (घटना का तत्काल अंकन)

5. उद्देश्यपूर्ण (उद्देश्य के अनुसार व्यवहार के विशेष पक्ष पर अधिक बल)

6. बाह्य एवं आन्तरिक दोनों प्रकार के व्यवहार का अध्ययन

7. प्रशिक्षित निरीक्षक द्वारा वैज्ञानिक अध्ययन

निरीक्षण विधि के चरण (Steps of Observation Method)

निरीक्षण सुनियोजित होता है। इसके सामान्य चरण निम्नलिखित हैं—

1. योजना-निर्माण (Planning)—वैज्ञानिक निरीक्षण के लिए योजना बनाना अत्यावश्यक है।

अध्ययन व्यवहार के किन पक्षों से विशेष रूप में सम्बन्धित होगा? समय का वितरण कैसे किया जायेगा तथा व्यवहार के अंकन में किन-किन उपकरणों का उपयोग किया जायेगा? इन सभी का सर्वप्रथम सुनियोजन किया जाता है।

2. योजना का सुचारू क्रियान्वयन (Smooth Implementation of Planning)—निरीक्षण के इस चरण में यह निर्धारित कर लिया जाता है कि पर्यवेक्षण में किन प्रमुख तथ्यों का ध्यान रखा जायेगा।

3. व्यवहार का अंकन (Recording of Events)—उद्देश्य के अनुसार व्यवहार के प्रासंगिक पक्ष सम्बन्धी सूचनाओं का संकलन किया जाता है। सूचनाओं के एकत्रीकरण के लिए आवश्यकतानुसार विभिन्न वैज्ञानिक उपकरणों का उपयोग करके व्यवहार का अंकन किया जाता है।

4. सारणीयन एवं विश्लेषण (Tabulation and Analysis)—प्राप्त प्रदत्तों का सारणीयन किया जाता है तथा आवश्यकता के अनुसार सांख्यिकीय विधियाँ प्रयुक्त करके विश्लेषण किया जाता है।

5. व्याख्या, सामान्यीकरण, तथा निष्कर्ष (Interpretation, Generalization and Conclusion)—विभिन्न प्रशिक्षित निरीक्षकों द्वारा व्यवहार सम्बन्धी प्रदत्तों के संकलन का विश्लेषण एवं व्याख्या करके सामान्यीकरण के आधार पर निष्कर्ष निर्गत किया जाता है।

निरीक्षण विधि के प्रकार (Types of Observation Method)

निरीक्षण विधि का नियन्त्रण (Control), सहभागिता (Participation) इत्यादि के आधार पर विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है—

नियन्त्रण के आधार पर निरीक्षण के दो प्रकार

नियन्त्रित निरीक्षण

अनियन्त्रित निरीक्षण

सहभागी निरीक्षण

अर्द्ध सहभागी निरीक्षण

असहभागी निरीक्षण

सहभागिता के आधार पर निरीक्षण के प्रकार

निरीक्षण विधि के गुण (Merits/Advantages of Observation Method)

मनोविज्ञान की मूलभूत विधि 'निरीक्षण विधि' के उपर्युक्त प्रकारों में पृथक्-पृथक् गुण एवं दोष विद्यमान हैं। सामान्य रूप में निरीक्षण विधि में निम्नलिखित गुण उल्लेखनीय हैं—

आनुभाविक अध्ययन (Empirical Study)—निरीक्षण विधि द्वारा अध्ययन में ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग किया जाता है। निरीक्षित व्यवहार, विशेषतः नेत्रों द्वारा प्राप्त ज्ञान पर आधारित होता है, अतः इस विधि द्वारा अनुभवजन्य अध्ययन किया जाता है।

1. पशु व्यवहार का अध्ययन (Study of Animals, Behaviour)—अन्तर्दर्शन, प्रश्नावली, साक्षात्कार इत्यादि विधियाँ मानव पर तो प्रयुक्त हो सकती हैं परन्तु पशुओं के व्यवहार का अध्ययन करने में सक्षम नहीं हैं, निरीक्षण विधि पशु-व्यवहार के अध्ययन में उपयोगी है।

2. शिशु व्यवहार का अध्ययन (Study of Infants, Behaviour)—शिशु व्यवहार के अध्ययन हेतु अन्तर्दर्शन विधि प्रयुक्त नहीं की जा सकती है। प्रश्नावली, अनुसूची, साक्षात्कार इत्यादि विधि भी शिशुओं के व्यवहार-अध्ययन में प्रयुक्त नहीं की जा सकती है, निरीक्षण विधि द्वारा अधिकाधिक अध्ययन किया जा सकता है।

3. असामान्य व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन (Study of Behaviour of Abnormal Person)—गम्भीर मनोविकार ग्रस्त व्यक्ति अपना आत्म-अवलोकन समुचित रूप में नहीं कर पाता है, परन्तु निरीक्षण विधि द्वारा उसे व्यवहार का अवलोकन करके अध्ययन किया जा सकता है।

4. विभिन्न भाषायी समूह का अध्ययन (Study of Different Language Groups)—निरीक्षण विधि द्वारा अध्ययन में नेत्रों का ही सर्वाधिक प्रयोग किया जाता है, भाषा का बहुत कम उपयोग किया जाता है, अतः भिन्न-भिन्न भाषा वाले व्यक्ति अथवा समूहों का अध्ययन इस विधि द्वारा सम्भव है।

5. प्रारम्भिक अध्ययन के रूप में उपादेयता (Utility in the Form of Pilot-Study)—किसी समस्या के विस्तृत एवं गहन अध्ययन से पूर्व सम्बन्धित विषय में प्रारम्भिक जानकारी के लिए निरीक्षण विधि का प्रयोग किया जाता है। इससे आगामी अध्ययन की व्यवस्थित योजना निर्मित करने में सहायता प्राप्त होती है।

6. वैज्ञानिक परिकल्पनाओं के निर्माण में उपयोगी (Utility in Formulation of Scientific Hypothesis)—निरीक्षण विधि द्वारा किसी भी व्यवहार अथवा घटना के विषय में व्यापक जानकारी प्राप्त होती है। इससे परिकल्पनाओं का निर्माण किया जाता है, जिनका प्रायोगिक विधि द्वारा सत्यापन किया जा सकता है।

7. सांख्यिकीय विश्लेषण में सरल (Easy in Statistical Analysis)—निरीक्षण विधि द्वारा प्राप्त प्रदत्त (data) प्रायः आवृत्ति (frequency), प्रतिशत (percentage), संख्या (number) इत्यादि के रूप में होते हैं, जिनका सांख्यिकीय विश्लेषण सरलता से किया जा सकता है।

8. अपेक्षाकृत वस्तुनिष्ठता (Relatively Objectivity)—निरीक्षण विधि अन्तर्दर्शन की तुलना में अधिक वस्तुनिष्ठ (पक्षपात रहित) होती है। निरीक्षण विधि द्वारा विभिन्न व्यक्ति अध्ययन करके सामान्यीकरण के आधार पर वस्तुनिष्ठ निष्कर्ष निर्गत कर सकते हैं।

9. उच्च स्तरीय विश्वसनीयता एवं वैधता (High level of Reliability and Validity)—निरीक्षण विधि द्वारा सम्बन्धित घटना का निरन्तर अध्ययन किया जा सकता है, अतः इसमें संगतीय/समान (consistent) परिणामों की सुविधा उपलब्ध होती है, जिसके आधार पर प्राप्त परिणामों की विश्वसनीयता का स्तर भी प्रायः उच्च श्रेणी का होता है।

निरीक्षण विधि में अध्ययन प्रायः स्थानीय परिवेश (local setting) में ही सम्पन्न होता है, अतः इससे प्राप्त निष्कर्षों की वैधता प्रायः उच्च स्तरीय होती है।

10. पूर्व कथन/भविष्य कथन की क्षमता (Power of Prediction)—निरीक्षण विधि द्वारा प्राप्त परिणामों में वस्तुनिष्ठता, विश्वसनीयता तथा वैधता होती है, अतः इस विधि द्वारा अध्ययन के आधार पर किया गया पूर्व कथन अधिकांशतः सत्य होता है।

11. प्राकृतिक परिवेश में अध्ययन (Study in Natural Situation)—निरीक्षण विधि द्वारा प्राकृतिक परिवेश में घटित होने वाले व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। यह इस विधि की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता है, जो इसे प्रायोगिक विधि से पृथक् करके इसकी विशिष्ट पहचान बनाती है।

निरीक्षण विधि की सीमाएँ/दोष (Limitations/Demerits of Observation Method)

उपर्युक्त विशेषताओं के साथ ही निरीक्षण विधि की निम्नलिखित महत्वपूर्ण सीमाएँ हैं—

1. कठोर नियन्त्रण का अभाव (Lack of Regorous Control)—निरीक्षण विधि में स्वाभाविक परिस्थिति में होने वाले व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। प्राकृतिक परिवेश में घटना/व्यवहार को विभिन्न कारक प्रभावित करते हैं, जिन पर अध्ययनकर्ता का नियन्त्रण नहीं होता है। कठोर नियन्त्रण के

अभाव में प्राप्त परिणामों की विश्वसनीयता प्रभावित होती है। इसके द्वारा निर्गत निष्कर्षों के आधार पर सर्वमान्य सामान्यीकरण में कठिनाई होती है।

2. कार्य-कारण अथवा कारण-प्रभाव सम्बन्ध की कमी (Lack of Cause-effect Relationship)—इस विधि में सामान्यतः कठोर नियन्त्रण का अभाव होता है। नियन्त्रण न होने की स्थिति में नहीं कहा जा सकता है कि 'अमुक' प्रभाव, 'अमुक' कारण से ही दृष्टिगत है, अतः निरीक्षण विधि कार्य-कारण सम्बन्ध के अध्ययन हेतु अपेक्षाकृत कम उपयोगी है।

3. निरीक्षणकर्ता की मनोवृत्ति का अभाव (Effect of Attitude of Observer)—निरीक्षक की पूर्वग्रहित धारणा एवं मानसिक वृत्ति का भी अध्ययन पर प्रभाव पड़ सकता है। वैज्ञानिक उपकरणों के उपयोग एवं निरीक्षकों के प्रशिक्षण (Training) द्वारा इस आपत्ति को कम किया जा सकता है।

4. निरीक्षक की उपस्थिति का प्रभाव (Effect of Observer's Presence)—निरीक्षक की उपस्थिति से व्यक्ति के स्वाभाविक व्यवहार में परिवर्तन आ सकता है तथा क्रत्रिम व्यवहार का प्रदर्शन हो सकता है। एक-दिशा पर्दा (One-way-screen) इत्यादि का उपयोग करके इस प्रभाव को नियन्त्रित किया जा सकता है।

5. समग्र मानसिक प्रक्रिया के अनुमान में कठिनाई (Difficulty in Estimation of Integrated Mental Process)—निरीक्षण द्वारा व्यक्त व्यवहार का ही अध्ययन हो पाता है। अव्यक्त आन्तरिक अनुभवों की जानकारी के अभाव में व्यवहार का समग्र अध्ययन नहीं हो पाता है, अतः मानसिक स्थिति का सही पता लगाना इस विधि के द्वारा बहुत कठिन है।

6. 'समय' सम्बन्धी कठिनाई (Difficulty Related to Time)—निरीक्षण विधि द्वारा स्वाभाविक परिस्थिति में घटित होने वाले व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। कभी-कभी व्यवहार में घटित होने के समय की लम्बी प्रतीक्षा करनी होती है, अतः इस विधि द्वारा अध्ययन में प्रायः अधिक समय लगता है।

7. सीमित विश्वसनीयता एवं वैधता (Limited Reliability and Validity)—निरीक्षण स्थानीय परिवेश (Local setting) में किया जाता है, विभिन्न स्थानीय कारकों की प्रबलता एवं उपस्थिति में परिवर्तन हो सकता है, अतः इनसे परिणाम के प्रभावित होने की सम्भावना होती है, जो विश्वसनीयता एवं वैधता को कम कर सकते हैं।

सीमित पूर्व कथन (Limited Prediction)—वस्तुनिष्ठता, विश्वसनीयता तथा वैधता की कमी के कारण निरीक्षण विधि को पूर्व कथन क्षमता सीमित होती है।

निरीक्षण विधि की उपर्युक्त सीमाओं को निम्नलिखित प्रविधियों/उपायों द्वारा कम किया जा सकता है—

1. घटनाओं का अंकन/लेखबद्धन (Recording to Events)
2. प्रेक्षित घटनाओं का वर्गीकरण (Categorization of Events)
3. तकनीकी साधनों का उपयोग (Use of Technical Devices)
4. निरीक्षक-प्रशिक्षण (Training to Observers)

5. निरीक्षकों एवं निरीक्षण संख्या में वृद्धि (Increase in the number of observer and Observation)

संक्षेप में कहा जा सकता है कि अन्तर्दर्शन विधि की तुलना में जहाँ निरीक्षण विधि में वस्तुनिष्ठता, अनुभवजन्यता, तथा व्यापकता है, वहीं प्रयोगात्मक विधि की तुलना में इसमें वस्तुनिष्ठता, विश्वसनीयता, वैधता, सार्वभौमिकता, पूर्व कथनशीलता, कार्य-कारण सम्बन्धता इत्यादि की कमी है। इन सीमाओं के होते हुए भी निरीक्षण विधि मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण मूलभूत विधि है, जिसकी प्रयोजनता (Applicability) साक्षात्कार तथा प्रयोगात्मक विधि में प्रतिबिम्बित होती है।

प्रयोगात्मक विधि (EXPERIMENTAL METHOD)

प्रयोगात्मक विधि मनोविज्ञान की सर्वाधिक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि के उपयोग के कारण ही मनोविज्ञान को विज्ञान कहा जाता है। प्रस्तुत विधि 'प्रयोग' (Experiment) पर आधारित होने के कारण 'प्रयोगात्मक' विधि की संज्ञा प्राप्त करती है। प्रयोग भी एक प्रकार का निरीक्षण है। यह नियन्त्रित दशाओं में किया जाता है। वास्तव में, नियन्त्रित दशाओं के अन्तर्गत किया गया निरीक्षण (observation under controlled conditions) ही प्रयोग है। अध्ययनकर्ता/प्रयोगकर्ता (Experimenter) नियन्त्रित दशा में स्वतन्त्र परिवर्त्य/चर (Independent Variable) को प्रहस्ति अर्थात् घटा-बढ़ाकर (Manipulation) आश्रित/परतन्त्र परिवर्त्य (Dependent Variable) पर प्रभाव का निरीक्षण करता है, इसे ही प्रयोग कहा जाता है। फेस्टिंगर एवं काज (Festinger and Katz, 1953) ने उल्लेख किया है कि प्रयोग का मूल आधार स्वतन्त्र परिवर्त्य में परिवर्तन करने से परतन्त्र परिवर्त्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है।

लेफ्रान्कवायस (Lefrancois, 1983) ने लिखा है कि प्रयोग एक ऐसी अनुसन्धान प्रक्रिया है, जहाँ प्रयोगकर्ता परिस्थिति के एक अथवा अधिक परिवर्त्यों का नियन्त्रण करता है तथा इस नियन्त्रण का अन्य परिवर्त्यों पर प्रभाव का निरीक्षण करता है।¹

सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि प्रयोग में अध्ययनकर्ता प्रासंगिक परिवर्त्यों (Relevant Variables) को नियन्त्रित करते हुए स्वतन्त्र परिवर्त्य को घटा-बढ़ाकर (Manipulation) आश्रित परिवर्त्य पर स्वतन्त्र परिवर्त्य के प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। स्वतन्त्र परिवर्त्य का आश्रित परिवर्त्य पर प्रभाव का अध्ययन करके परिकल्पना/उपकल्पना (Hypothesis) का सत्यापन किया जाता है।

जहोदा एवं अन्य (Jahoda and Others, 1959) ने उल्लेख किया है कि प्रयोग परिकल्पना के परीक्षण की एक विधि है।²

प्रयोग-सन्दर्भित उपर्युक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रयोगात्मक विधि मनोविज्ञान की एक वैज्ञानिक विधि है, जिसमें स्वतन्त्र परिवर्त्य को घटा-बढ़ाकर (Manipulation) आश्रित परिवर्त्य पर प्रभाव का व्यवस्थित निरीक्षण करके कारण-प्रभाव (Cause-effect) का अवलोकन करते हुए परिकल्पना का परीक्षण किया जाता है।

प्रयोग की विभिन्न परिभाषाओं के विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित तथ्य प्रकाश में आते हैं—

1. प्रयोग व्यवस्थित निरीक्षण (Systematic Observation) है।
2. यह निरीक्षण नियन्त्रित दशाओं (Observation Under Controlled Conditions) के अन्तर्गत किया जाता।

3. इसमें स्वतन्त्र परिवर्त्य (Independent Variable-I.V.) का प्रहस्तन करके अर्थात् घटा-बढ़ाकर (Manipulation) आश्रित परिवर्त्य (Dependent Variable-D.V.) पर प्रभाव का निरीक्षण किया जाता है।

4. स्वतन्त्र परिवर्त्य—आश्रित परिवर्त्य (IV-DV) सम्बन्ध का अवलोकन करके कारण-प्रभाव (Cause-effect) सम्बन्ध का अध्ययन किया जाता है।

5. कारण-प्रभाव सम्बन्ध के परिणाम के आधार पर परिकल्पना का परीक्षण (Testing of Hypothesis) किया जाता है।

1 ".... an experiment is a research procedure where experimenters control one or more of variables of a situation and observe the effect of this control on other variables in the situation." —G. R. Lefrancois, 1983

2 "Experiment is a method of testing hypothesis." —Jahoda and Others, 1959

प्रयोगों के प्रकार (Types of Experiments) — मनोवैज्ञानिकों ने प्रयोग के स्वरूप/उद्देश्य इत्यादि के आधार पर इन्हें विभिन्न वर्गों में विभक्त किया है, कुछ महत्वपूर्ण वर्गीकरण निम्नलिखित हैं—
अण्डरवुड (Under wood, 1965) ने प्रयोगों को दो प्रकारों में वर्गीकृत किया है—

1. 'मैं आश्चर्य करता हूँ कि क्या होगा' प्रकार
(‘I wonder what-would happen’ Type)
2. 'मैं शर्त करता हूँ कि यही होगा' प्रकार
(‘I'll-best this-would-happen’ Type)

मैक्ग्यूगन/मैक्ग्यून (McGuigan, 1969) ने प्रयोगों के तीन प्रकार का उल्लेख किया है—

1. अन्वेषणात्मक/खोजक प्रयोग (Exploratory Experiment)
2. पुष्टि/सिद्ध प्रयोग (Confirmatory Experiment)
3. निर्णायक प्रयोग (Crucial Experiment)

प्रयोग-स्थल (Place of Experiment) के आधार पर प्रयोगों के दो प्रकार किये गये हैं—

1. प्रयोगशाला-प्रयोग (Laboratory Experiments)
2. क्षेत्र-प्रयोग (Field Experiments)

प्रयोग के प्रमुख सोपान/चरण (Major steps of an Experiment)

1. समस्या (Problem)— प्रयोग का सर्वप्रथम चरण 'समस्या' है। किसी भी विषय/तथ्य सम्बन्धी ज्ञान की अपूर्णता, विरोधी परिणाम अथवा समुचित जानकारी प्राप्त करने की इच्छा के कारण समस्या की उत्पत्ति होती है। व्यवहार या घटना सम्बन्धी परिवर्त्यों के मध्य कारण-प्रभाव सम्बन्ध (Cause-Effect Relationship) अज्ञात रहने की स्थिति में समस्या का उद्भव होता है। अज्ञात सम्बन्ध को निश्चित शब्दों में व्यक्त करना ही समस्या-कथन (Statement of Problem) है।

2. परिकल्पना/उपकल्पना-निर्माण (Formulation of Hypothesis)— किसी समस्या का प्रस्तावित उत्तर (Proposed Answer), जिसका परीक्षण किया जाना है, परिकल्पना कहा जाता है। तकनीकी शब्दों में स्वतन्त्र परिवर्त्य एवं आश्रित परिवर्त्य (IV-DV) सम्बन्ध की दिशा तथा मात्रा के सम्बन्ध में पूर्वानुमान ही परिकल्पना है।

3. परिवर्त्य/चर (Variables)— किसी घटना, वस्तु या प्राणी की प्रहस्तनीय/परिवर्तनीय (Manipulable) एवं मापनीय (Measurable) विशेषता को परिवर्त्य कहते हैं। परिवर्त्यों का विभिन्न रूपों में वर्गीकरण किया गया है। उद्दीपक-प्राणी-अनुक्रिया (Stimulus-Organism-Response : S-O-R) वर्गीकरण तथा स्वतन्त्र-मध्यवर्ती-आश्रित (Independent-Intervening-Dependent) परिवर्त्य वर्गीकरण अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

4. स्वतन्त्र परिवर्त्य (IV)— वह परिवर्त्य जिस पर प्रयोगकर्ता का नियन्त्रण होता है एवं जिसके प्रहस्तन/घटाने-बढ़ाने (Manipulation) का व्यवहार माप/आश्रित परिवर्त्य पर प्रभाव का अवलोकन किया जाता है, स्वतन्त्र परिवर्त्य कहा जाता है।

5. आश्रित/परतन्त्र परिवर्त्य (DV)— वह परिवर्त्य जिस पर स्वतन्त्र परिवर्त्य के प्रहस्तन का प्रभाव देखा जाता है अर्थात् जो स्वतन्त्र परिवर्त्य के प्रहस्तन से (घटाने-बढ़ाने से) प्रभावित हो सकता है, आश्रित परिवर्त्य के नाम से जाना जाता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि स्वतन्त्र परिवर्त्य पर निर्भर होने के कारण इस परिवर्त्य को आश्रित परिवर्त्य कहा जाता है।

6. उदाहरणार्थ— कोलाहल (noise) का निष्पादन (performance) पर प्रभाव के अध्ययन में कोलाहल को घटा-बढ़ाकर इसके प्रभाव का अध्ययन किया जाता है, अतः कोलाहल स्वतन्त्र परिवर्त्य है। कोलाहल को घटा-बढ़ाकर निष्पादन पर प्रभाव का अवलोकन किया जाता है। यह जानने का प्रयास किया जाता है कि प्रयोज्य का निष्पादन कोलाहल के घटाने-बढ़ाने से प्रभावित होता है। इस प्रकार निष्पादन आश्रित/परतन्त्र परिवर्त्य (DV) है।

7. प्रासंगिक परिवर्त्य (Relevant Variable)—स्वतन्त्र परिवर्त्य के अतिरिक्त अन्य परिवर्त्य, जो आश्रित परिवर्त्य को प्रभावित कर सकते हैं, प्रासंगिक या संगतीय परिवर्त्य के नाम से जाने जाते हैं। इनको नियन्त्रित (control) किया जाता है, जिससे यह कहा जा सकता है कि आश्रित परिवर्त्य में दृष्टिगत परिवर्तन केवल स्वतन्त्र परिवर्त्य के कारण है।

8. परिवर्त्यों का नियन्त्रण (Control of Variables)—आश्रित परिवर्त्य पर केवल स्वतन्त्र परिवर्त्य के प्रभाव का अवलोकन करने के लिए आश्रित परिवर्त्य को प्रभावित करने वाले वाह्य परिवर्त्यों में से प्रासंगिक परिवर्त्यों (relevant variables) को नियमित (regulate) करना आवश्यक होता है। प्रायोगिक परिस्थिति, प्रयोज्य, तथा उद्दीपक प्रस्तुतीकरण इत्यादि को नियन्त्रित करने के लिए निष्कासन विधि (method of removal), स्थिरता विधि (method of constancy), सन्तुलन प्रविधि (balancing technique), प्रतिसन्तुलन प्रविधि (counter-balancing technique) तथा यादृक्षीकरण (randomization) इत्यादि प्रविधियों का उपयोग किया जाता है।

9. प्रयोगिक अभिकल्प (Experimental Design)—प्रयोग की योजना (planning) को प्रायोगिक अभिकल्प/डिजाइन कहते हैं। अध्ययन के उद्देश्य के अनुसार विभिन्न-प्रायोगिक अभिकल्पों का उपयोग किया जाता है।

10. प्रयोगकर्ता (Experimenter)—किसी भी अध्ययन में प्रयोग करने वाले व्यक्ति को प्रयोगकर्ता अथवा प्रयोक्ता कहा जाता है। प्रयोगकर्ता ही प्रयोग की योजना के अनुसार परिवर्त्यों में प्रहस्तन करके उनके प्रभाव का अवलोकन करता है।

11. प्रयोज्य (Subject)—प्रयोग जिस व्यक्ति पर किया जाता है, उसे प्रयोज्य कहते हैं। प्रयोज्य को अनुक्रिया/व्यवहार आश्रित परिवर्त्य होता है। प्रयोज्य की संख्या एक या अनेक (समूह प्रयोज्य) हो सकती है।

12. प्रयोगशाला (Laboratory)—प्रयोग करने के लिए जिस व्यवस्थित एवं नियन्त्रित कक्ष का इस्तेमाल किया जाता है, उसे प्रयोगशाला कहा जाता है। प्रयोगशाला में परिस्थितियों को नियन्त्रित करना सरल होता है। वास्तविक परिस्थिति में भी प्रयोग किये जाते हैं, जिन्हें क्षेत्र प्रयोग (Field Experiment) कहा जाता है।

13. उपकरण एवं सामग्री (Apparatus and Materials)—प्रयोगशाला में प्रयोग करने के लिए विशेष उपकरणों एवं सामग्रियों का उपयोग किया जाता है, यथा—टैचिस्टोस्कोप (Tachistoscope), दर्पण चित्रांकन उपकरण (Mirror-drawing apparatus), स्मृति ड्रम (Memory Drum), विराम घड़ी (Stop Watch) इत्यादि।

14. प्रायोगिक प्रक्रिया (Experimental Procedure)—प्रयोग की योजना के अनुसार प्रयोज्य पर प्रयोग प्रतिपादित किया जाता है। प्रयोज्य को आवश्यक निर्देश (Instructions) देते हुए सावधानीपूर्वक प्रदत्त-संकलन (Data Collection) किया जाता है।

15. सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Analysis)—अध्ययन के उद्देश्य एवं परिकल्पना के अनुसार उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाता है।

16. परिणाम, विवेचना तथा निष्कर्ष (Results, Discussion and Conclusion)—सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर प्राप्त परिणामों की व्याख्या (Interpretation) तथा विवेचना (Discussion) की जाती है, तदुपरान्त निष्कर्ष निर्गत किये जाते हैं।

प्रयोगात्मक विधि के गुण (Merits of Experimental Method)

प्रयोगात्मक विधि के निम्नलिखित गुण/लाभ उल्लेखनीय हैं—

1. कारण-प्रभाव सम्बन्ध का अध्ययन (Study of Cause-Effect Relationship)—प्रयोगात्मक विधि में प्रासंगिक परिवर्त्यों को नियन्त्रित करके स्वतन्त्र परिवर्त्य (IV) का आश्रित परिवर्त्य (DV) पर प्रभाव का अध्ययन किया जाता है, अतः कहा जा सकता है कि आश्रित परिवर्त्य में दृष्टिगत परिवर्तन केवल स्वतन्त्र परिवर्त्य के कारण है। इस प्रकार प्रस्तुत विधि द्वारा किये गये अध्ययन के आधार

पर कहा जाता है कि आश्रित परिवर्त्य में परिवर्तन (प्रभाव) स्वतन्त्र परिवर्त्य के प्रहस्तन (कारण) द्वारा घटित है।

2. वस्तुनिष्ठता (Objectivity)—प्रस्तुत विधि द्वारा किये गये अध्ययन में अध्ययनकर्ता की मनोवृत्तियों, रुचियों, पूर्वाग्रह इत्यादि का प्रभाव नहीं पड़ता है, अतः अध्ययन-परिणाम में पर्याप्त वस्तुनिष्ठता होती है।

3. गुणात्मक एवं परिमाणात्मक दोनों प्रदत्त प्राप्ति (Qualitative and Quantitative Data)—प्रयोगात्मक विधि द्वारा अध्ययन में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार के प्रदत्त प्राप्ति होते हैं, अतः परिणाम व्यापक होते हैं।

4. सत्यापनीयता/पुनरावृत्तिशीलता (Verifiability)—अध्ययन-प्रक्रिया नियन्त्रित एवं सुनियोजित होने के कारण प्रयोगात्मक विधि द्वारा किये गये अध्ययन की पूर्ववत् पुनरावृत्ति करके परिणामों की वारम्बार जाँच की जा सकती है।

5. व्यापक क्षेत्र (Wide Scope)—प्रयोगात्मक विधि द्वारा मानव के साथ-साथ पशुओं पर भी अध्ययन किया जाता है। वयस्क के साथ-साथ बच्चों एवं वृद्धों तथा असामान्य व्यक्तियों पर भी प्रायोगिक अध्ययन प्रतिपादित किया जा सकता है। इस प्रकार प्रस्तुत विधि का क्षेत्र व्यापक है।

6. मूर्त एवं विशुद्ध अध्ययन (Concrete and Precise Study)—प्रस्तुत विधि द्वारा किया गया अध्ययन अन्तर्दर्शन की तरह अमूर्त एवं निरीक्षण विधि की तरह निरीक्षक के पूर्वाग्रहों से प्रभावित न होकर मूर्त (प्रत्यक्ष) तथा विशुद्ध होता है।

7. घटना की प्रतीक्षा की आवश्यकता नहीं (No Need of Waiting for Event's Happening)—अन्तर्दर्शन एवं निरीक्षण विधि द्वारा अध्ययन में घटना के घटित होने की प्रतीक्षा करनी पड़ती है परन्तु प्रयोगात्मक विधि में स्वतन्त्र परिवर्त्य में घटना-बढ़ाना (Manipulation) अध्ययनकर्ता द्वारा किया जाता है, अतः इसमें घटना की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती है।

8. उच्च विश्वसनीयता एवं वैधता (High Reliability and Validity)—वस्तुनिष्ठता, नियन्त्रण, तथा सुनियोजन के कारण प्रयोगात्मक विधि द्वारा प्राप्त परिणामों की विश्वसनीयता एवं वैधता उच्चस्तरीय होती है।

9. पूर्व कथन/भविष्य कथन की क्षमता (Power of Predication)—कठोर नियन्त्रण के अन्तर्गत अध्ययन किये जाने के कारण प्रयोगात्मक विधि में पूर्व कथन की उल्लेखनीय क्षमता होती है।

10. सार्वभौमिकता (Universality)—वस्तुनिष्ठता, सत्यापनीयता, विश्वसनीयता तथा वैधता इत्यादि की विशेषताओं से युक्त होने के कारण प्रयोगात्मक विधि द्वारा प्राप्त परिणाम सार्वभौमिक अर्थात् हर जगह सत्य होने वाले होते हैं।

प्रयोगात्मक विधि की सीमाएँ/दोष (Limitations/Demerits of Experimental Method)

प्रयोगात्मक विधि की निम्नलिखित प्रमुख सीमाएँ हैं—

1. कृत्रिम अध्ययन/स्वाभाविक परिस्थिति का अभाव (Artificial Study/Lack of Natural Setting)—प्रयोगात्मक विधि द्वारा प्रयोगशाला में स्वतन्त्र परिवर्त्य को प्रस्तुत करके व्यवहार (आश्रित परिवर्त्य) पर प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार घटना की उपस्थिति एवं प्रयोज्य के व्यवहार में कृत्रिमता अथवा बनावटीपन की सम्भावना हो सकती है।

2. सीमित अध्ययन-क्षेत्र (Limited Scope of Study)—सभी प्रकार के व्यवहार का अध्ययन प्रयोगशाला में नहीं किया जाता है विभिन्न मानसिक स्थितियों एवं घटनाओं (स्वज्ञ इत्यादि) का प्रयोगशाला में अध्ययन सम्भव नहीं है।

3. परिस्थिति सृजन में कठिनाई (Difficulty in Creating Certain Situations)—प्रयोगशाला में प्रत्येक परिस्थिति का सृजन सरलता एवं स्वाभाविक रूप में नहीं किया जा सकता है, यथा—दंगों (Riots) के समय व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन अथवा आग लगाने पर व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन इत्यादि।

4. खर्चीली विधि (Expensive Method)—प्रयोगशाला सम्बन्धित कुछ उपकरण बहुत महं होते हैं, अतः इस विधि का व्यवस्थित रूप में उपयोग सभी के द्वारा नहीं किया जा सकता है।

5. प्रशिक्षित प्रयोगकर्ताओं की आवश्यकता (Need of Trained Experimenters)—प्रयोगात्मक विधि अत्यन्त वैज्ञानिक होती है, अतः अध्ययनकर्ता को तकनीकी रूप से निपुण/कुशल होना आवश्यक है। प्रशिक्षित अध्ययनकर्ताओं की कमी के कारण अध्ययन में कठिनाई होती है।

6. प्रयोगात्मक विधि का मूल्यांकन (Evaluation of Experimenters)—प्रयोगात्मक विधि-सन्दर्भित उपर्युक्त विवरण से विदित होता है कि इसमें कृत्रिम एवं सीमित अध्ययन क्षेत्र के साथ ही व्ययता (खर्चीलापन) का दोष है, फिर भी कारण-प्रभाव सम्बन्धिता, कठोर नियन्त्रण, विश्वसनीयता, वैधता, पूर्व कथनशीलता तथा सार्वभौमिकता इत्यादि गुणों से विभूषित होने के कारण प्रयोगात्मक विधि मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण विधि है, जो इसे विज्ञान की संज्ञा प्रदान कराने में उल्लेखनीय भूमिका का निर्वाह करती है।

अन्तर्दर्शन, निरीक्षण तथा प्रयोगात्मक विधि (Introspection Observation and Experimental Method)

उपर्युक्त विवरण के आधार पर संक्षेप में कहा जा सकता है कि अन्तर्दर्शन में अध्ययनकर्ता स्वयं अपना निरीक्षण करता है, निरीक्षण में प्राकृतिक परिस्थिति में घटित होने वाले व्यवहार का निरीक्षण तथा प्रयोगात्मक विधि में नियन्त्रित दशाओं के अन्तर्गत स्वतन्त्र परिवर्त्य का आश्रित परिवर्त्य पर प्रभाव का निरीक्षण किया जाता है। इस प्रकार तीनों विधियाँ किसी-न-किसी प्रकार निरीक्षण हैं।

साक्षात्कार विधि (INTERVIEW METHOD)

साक्षात्कार विधि मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण विधि है। साक्षात्कार हेतु अंग्रेजी में 'Interview' शब्द प्रयुक्त किया जाता है। 'Interview' में Inter (अन्तर अर्थात् कम-से-कम दो व्यक्ति) तथा View (विचार या वार्तालाप) दो शब्द हैं। इनके आधार पर कहा जा सकता है कि साक्षात्कार दो अथवा अधिक व्यक्तियों के मध्य परस्पर वार्तालाप है। यह वार्तालाप आमने-सामने (Face to face) उद्देश्यपूर्ण होता है। इसमें कम-से-कम एक व्यक्ति साक्षात्कार कर्ता (Interviewer) तथा दूसरा व्यक्ति उत्तरदाता (Respondent) होता है। साक्षात्कार कर्ता प्रश्न प्रस्तुत करता है तथा उत्तरदाता उत्तर देता है। उत्तरों के आधार पर उत्तरदाता के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। बिंगम एवं मूर (Bingham and Moore, 1924) ने उल्लेख किया है कि साक्षात्कार में अध्ययनकर्ता प्रश्नों को प्रस्तुत करता है और उत्तरदाता उनके प्रति अपना विचार व्यक्त करता है। इस प्रकार साक्षात्कार पारस्परिक वार्तालाप से सम्बन्धित है। यंग (Young, 1954) ने समुचित ही लिखा है—जैसा कि सम्प्रत्यय से बोध होता है, साक्षात्कार एवं अन्तर्क्रियात्मक प्रक्रिया है, यह दो व्यक्तियों का पारस्परिक विचार है।¹

गुडे एवं हाट (Goode and Hatt, 1964) के शब्दों में, "साक्षात्कार, मूलभूत रूप में सामाजिक अन्तर्क्रिया की प्रक्रिया है।"²

उपर्युक्त परिभाषाओं एवं विवरण के आधार पर साक्षात्कार के स्वरूप के सन्दर्भ में निम्नलिखित तथ्य उल्लेखनीय हैं—

1. 'साक्षात्कार' उत्तरदाता एवं साक्षात्कारकर्ता के मध्य वार्तालाप है।
2. वार्तालाप आमने-सामने होता है।
3. वार्तालाप के द्वारा साक्षात्कारकर्ता उत्तरदाता से यथासम्भव सूचना प्राप्त करता है।
4. वार्तालाप उद्देश्यपूर्ण होता है।

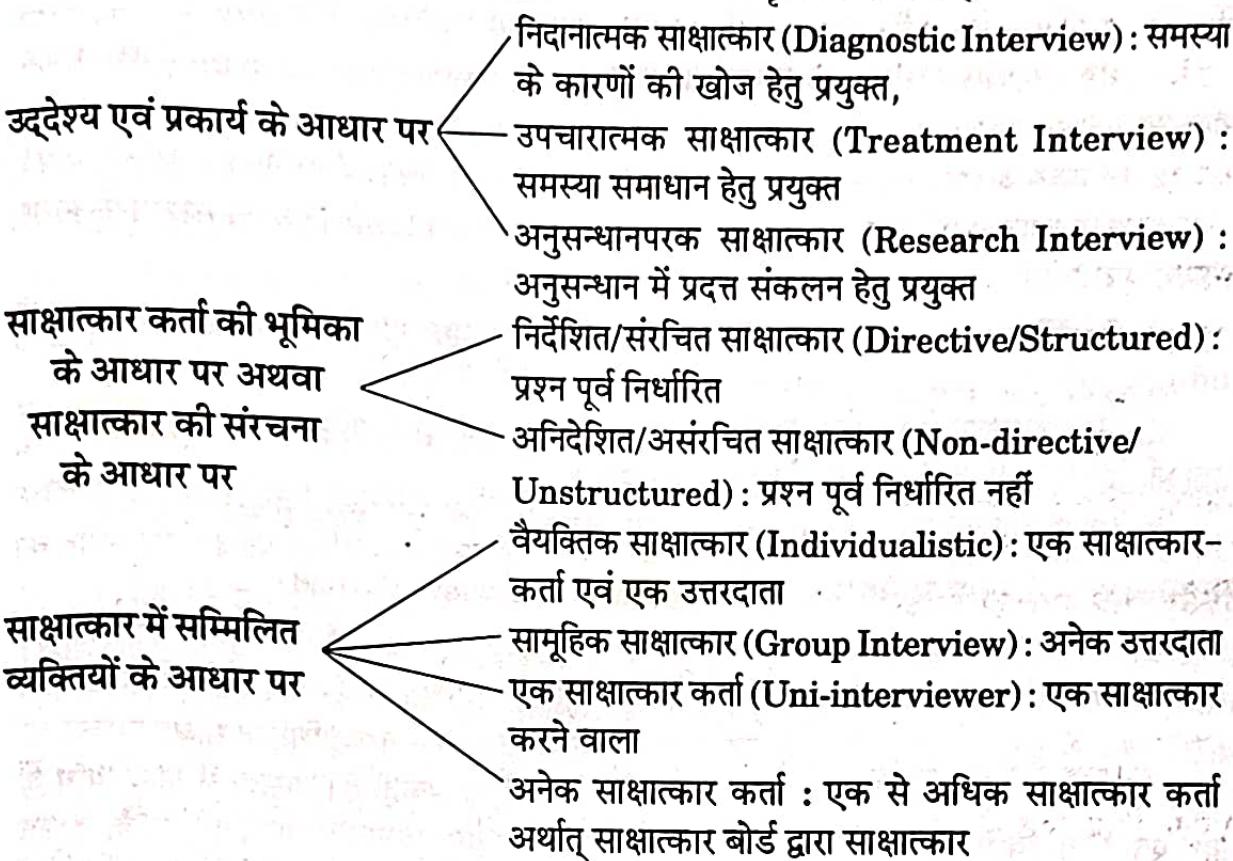
1 "As the very term implies, interviewing is an interactional process, it is a mutual view of each other." —P. V. Young, 1954

2 "Interviewing is fundamentally a process of social interaction." —Goode and Hatt, 1964

5. साक्षात्कार एक प्रकार की सामाजिक अन्तर्क्रिया (Social Interaction) है, अतः जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इसकी उपयोगिता है।

साक्षात्कार के प्रकार (Types of Interview)

साक्षात्कारकर्ता के उद्देश्य, भूमिका, तथा साक्षात्कार में सम्मिलित उत्तरदाताओं की संख्या इत्यादि के आधार पर साक्षात्कार को निम्नांकित प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है—



साक्षात्कार विधि के सोपान/चरण (Steps in Interviewing)

साक्षात्कार के विभिन्न प्रकारों के आधार पर साक्षात्कार-प्रक्रिया में कुछ अन्तर होता है, परन्तु सामान्य रूप में निम्नलिखित सोपान/चरण उल्लेखनीय हैं—

1. साक्षात्कार की योजना निर्मित करना।
2. उद्देश्य के अनुसार प्रश्नों को तैयार करना।
3. आमने-सामने उत्तर प्राप्त करना।
4. उत्तरों (अनुक्रियाओं) का अंकन (Recording) करना।
5. उत्तरों को मात्रात्मक अथवा वर्णनात्मक स्वरूप देना।
6. उत्तरों का वर्गीकरण।
7. परिणाम, व्याख्या तथा निष्कर्ष।

साक्षात्कार विधि के गुण/लाभ (Merits/Advantages of Interview Method)

साक्षात्कार की विभिन्न विधियों में भिन्न-भिन्न गुण एवं दोष हैं। सामान्य रूप में साक्षात्कार विधि में निम्नलिखित गुण/लाभ हैं—

1. अमूर्त (अदृश्य) घटनाओं का अध्ययन (Study of Abstract Events) (अनुभूतियों, अभिवृत्तियों, मूल्य आदि का अध्ययन)
2. गहन अध्ययन (Depth Study) (व्यवहार के विभिन्न पक्षों का गहन अध्ययन)
3. व्यापक अध्ययन (Wide Study) (अनिरीक्षणीय व्यवहारों का अध्ययन)
4. अतीत की घटनाओं का अध्ययन (Study of Past Events) (व्यक्ति के पूर्व अनुभवों/घटनाओं का अध्ययन)

५. अंकन में सुगमतापूर्ण (Facility in Recording) (अनुक्रिया के अंकन में साहाता)
६. घटना घटित होने की अप्रतीक्षा (No waiting for occurring events) (निरीक्षण विधि की तरह घटना-घटने की प्रतीक्षा नहीं)
७. उच्च विश्वसनीयता (High Reliability) (संरचित एवं वस्तुनिष्ठ साक्षात्कार की उच्च विश्वसनीयता)

साक्षात्कार विधि की सीमाएँ/कमियाँ (Limitations of Interview Method)

१. सौहार्द सम्बन्ध स्थापन में कठिनाई (Difficulty in establishing rapport) (प्रायः मैत्रिक भाव-स्थापना में कठिनता)
२. निष्क्रिय अध्ययन (Passive Study) (कुछ साक्षात्कार-प्रकारों में साक्षात्कारकर्ता निष्क्रिय)
३. कृत्रिम एवं सतही उत्तर (Artificial and Super ficial answer) (मानव स्वभाव के कारण बनावटी एवं ऊपरी उत्तर की बहुशः सम्भावना)
४. व्यक्ति के मत का समुचित प्रतिनिधित्व नहीं (No appropriate representation of individual's opinion) (विशेषतः संरचित साक्षात्कार में ऐसी कठिनाई)
५. उत्तर-व्याख्या में मतभेद (Difference in interpretation of responses) (साक्षात्कार कर्ताओं द्वारा एक ही अनुक्रिया की विभिन्न व्याख्या)
६. समय-साध्य (Time consuming) (प्रश्नावली इत्यादि की तुलना में समय अधिक)

साक्षात्कार विधि का मूल्यांकन (Evaluation of Interview Method)

साक्षात्कार विधि की उपर्युक्त सीमाएँ/कमियाँ सभी साक्षात्कार-प्रकारों में विद्यमान नहीं होती है। विभिन्न प्रकार के साक्षात्कार में कुछ गुण तथा कुछ दोष हैं। मिश्रित साक्षात्कार विधियों का उपयोग करके बहुत-से दोषों को कम किया जा सकता है। वैज्ञानिक साक्षात्कार तथा प्रशिक्षित साक्षात्कारकर्ताओं का उपयोग करके साक्षात्कार विधि की गुणवत्ता में वृद्धि की जा सकती है। वास्तव में अन्य विधि के साथ एक पूरक विधि के रूप में साक्षात्कार का सर्वाधिक उपयोग वर्तमान में किया जा रहा है, जो कि इसकी सम्बद्धि सर्वमान्यता का संकेत है।

प्रश्नावली विधि (QUESTIONNAIRE METHOD)

प्रश्नावली विधि समाज-विज्ञानों में सर्वाधिक प्रचलित विधि है। 'प्रश्नावली' शब्द—'प्रश्न' (Question) तथा 'आवली' अर्थात् पंक्ति या शृंखला (Series) से निर्मित है। इस प्रकार प्रश्नों की कतार या शृंखला को ही प्रश्नावली की संज्ञा दी जाती है।

एंडरसन (Anderson, 1954) ने उल्लेख किया है कि "प्रश्नों की ऐसी शृंखला है, जो किसी मुख्य विषय के बारे में अपेक्षाकृत क्रमबद्ध एवं समूहबद्ध रूप में व्यवस्थित होती है, प्रश्नावली कही जाती है।"¹

प्रश्नावली के प्रश्न शिक्षित व्यक्तियों के लिए उद्दीपक का कार्य करते हैं। प्रश्नों को पढ़कर वे उत्तर देते हैं। उत्तरों (अनुक्रियाओं) के आधार पर व्यक्ति (प्रयोज्य) के व्यक्तित्व एवं व्यवहार का मापन किया जाता है।

लुण्डबर्ग (Lundberg, 1951) ने लिखा है कि "मूलभूत रूप में प्रश्नावली उद्दीपकों का एक समुच्चय है, जिनके प्रति शिक्षित व्यक्ति उत्तेजित किये जाते हैं एवं इन उत्तेजनाओं के अन्तर्गत वे अपने व्यवहार का वर्णन करते हैं।"²

1 "A series of questions arranged more or less systematically and grouped about a main topic is called a questionnaire." —Anderson, 1954

2 "Fundamentally, the questionnaire is a set of stimuli to which literate people are exposed in order to observe their verbal behaviour under these stimuli." —Lundbergen, 1951

उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से निम्नलिखित तथ्य प्रकाश में आते हैं—

1. प्रश्नावली प्रश्नों की कतार/समूह या शृंखला है।
2. 'प्रश्न' समस्या/विषय के अनुसार पूर्व नियोजित होते हैं।
3. प्रश्न उत्तेजना/प्रेरणा का कार्य करते हैं।
4. प्रश्नावली के प्रश्नों से उद्दीप्त/प्रेरित होकर उत्तरदाता अपने व्यवहार का स्वयं वर्णन करते हैं।

उत्तम प्रश्नावली की विशेषताएँ (Characteristics of a Good Questionnaire)

उत्तम प्रश्नावली में सामान्यतः निम्नलिखित विशेषताओं का होना आवश्यक है—

1. दर्शनीय, सुव्यवस्थित तथा आकर्षक मुद्रण,
2. छोटी, सन्तुलित तथा मिश्रित प्रश्न युक्त,
3. सरल एवं स्पष्ट भाषा,
4. आपत्तिजनक, भ्रामक, द्वि-अर्थक शब्दों,
5. तार्किक/यथोचित प्रश्न-अनुक्रम (सरल से कठिन/सामान्य से विशिष्ट की ओर),
6. स्पष्ट निर्देश एवं फलांकन विधि,
7. उच्च विश्वसनीयता एवं वैधता।

प्रश्नावली के प्रकार (Types of Questionnaire)

प्रश्नों की प्रकृति एवं संरचना के आधार पर प्रश्नावली के निम्नलिखित प्रकार हैं—

1. मुक्त (खुले सिरों वाली) प्रश्नावली/अप्रतिबन्धित/असंरचित प्रश्नावली (Open-ended Questionnaire/Unstructured Questionnaire)—इसमें प्रयोज्य उत्तर देने के लिए स्वतन्त्र होता है। वह खुलकर विचार व्यक्त कर सकता है।
2. बन्द सिरों वाली प्रश्नावली/प्रतिबन्धित संरचित प्रश्नावली (Close-ended Questionnaire/Structured Questionnaire)—इसमें प्रयोज्य की अनुक्रियाएँ दिये गये विकल्पों (Alternatives) तक सीमित रहती हैं।

प्रयुक्त सामग्री के आधार पर प्रश्नावली के दो प्रकार होते हैं—

1. शाब्दिक प्रश्नावली (Verbal Questionnaire)
2. चित्रात्मक प्रश्नावली (Pictorial Questionnaire)

प्रश्नावली के गुण/लाभ (Merits/Advantages of Questionnaire)

प्रश्नावली के विभिन्न प्रकारों में पृथक्-पृथक् गुण हैं। प्रश्नावली विधि में सामान्य रूप से निम्नलिखित गुण उल्लेखनीय हैं—

1. विस्तृत उपादेयता (Wide Utility)
2. अपेक्षाकृत निष्पक्ष अध्ययन (Relatively Unbiased Study)
3. विविधता/प्रश्न-स्वरूप सन्दर्भित (Variety of Questions)
4. स्वाभाविक अनुक्रिया/उत्तर-प्राप्ति (Natural Responses)
5. गुप्तता/गोपनीयता (Confidentiality)
6. विशिष्ट प्रशिक्षण आवश्यक नहीं (No need of specific training)
7. मितव्ययी विधि (Economical Method) अर्थात् कम खर्चीली विधि

प्रश्नावली विधि की सीमाएँ (Limitations of Questionnaire Method)

1. मिथ्या/झूठ उत्तर की सम्भावना (Faking)
2. सामाजिक वांछनीय उत्तर की सम्भावना (Social Desirability)
3. सीमित क्षेत्र (Limited Scope)
4. अपूर्ण एवं लापरवाही पूर्ण उत्तर (Incomplete and Careless Answers)

५. गहन अध्ययन हेतु अनुपयुक्त (Inappropriate for Intensive Study)

६. विश्वसनीयता की कमी (Lack of Reliability)

प्रश्नावली विधि का मूल्यांकन (Evaluation of Questionnaire Method)

प्रश्नावली विधि के सम्बन्ध में प्रस्तुत उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि उत्तरदाता झूठे एवं अपूर्ण उत्तर दे सकता है, तथा केवल शिक्षित एवं सामान्य व्यक्तियों पर ही यह प्रयुक्त की जा सकती है। गहन अध्ययनों हेतु इसकी उपयोगिता सीमित है। इन सीमाओं के होते हुए भी सरलता, व्यापकता, मितव्यिता इत्यादि के कारण प्रश्नावली विधि अत्यन्त प्रचलित विधि है।

व्यक्ति-अध्ययन/व्यक्ति-इतिहास विधि (CASE STUDY METHOD)

व्यक्ति अध्ययन विधि, मनोविज्ञान की ऐसी विधि है जिसमें एक व्यक्ति विशेष (case) का गहनता से अध्ययन किया जाता है। इस विधि का उपयोग विशिष्ट व्यक्तियों (प्रतिभाशाली/ मनोग्रस्त/ समस्याग्रस्त) के अध्ययन हेतु किया जाता है।

बीसेंज (Biesanz, 1954) ने उल्लेख किया है कि व्यक्ति अध्ययन विधि गुणात्मक विश्लेषण का एक रूप है, जिसमें एक व्यक्ति, एक परिस्थिति अथवा एक संस्था का सतर्कतापूर्ण एवं समग्र निरीक्षण किया जाता है।¹

पी. वी. यंग (P. V. Young)—के अनुसार, व्यक्ति अध्ययन-पद्धति किसी एक सामाजिक इकाई, चाहे वह एक व्यक्ति, एक परिवार, एक संस्था, एक सांस्कृतिक समूह अथवा सम्पूर्ण समुदाय क्यों न हो, के जीवन की खोज तथा विश्लेषण की पद्धति है।²

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि व्यक्ति-अध्ययन विधि के अन्तर्गत किसी एक व्यक्ति, समूह, संस्था, समुदाय, राष्ट्र अथवा परिस्थिति के सभी पक्षों का व्यापक, सूक्ष्म तथा गहन अध्ययन किया जाता है।

व्यक्ति अध्ययन विधि द्वारा किसी व्यवहार अथवा घटना के अध्ययन हेतु उसकी पृष्ठभूमि के विभिन्न पक्षों का विस्तृत विवरण प्राप्त करके कारकों का पता लगाने का प्रयास किया जाता है। केस (case) विशिष्ट गुणों वाला एक व्यक्ति, छोटा समूह, संस्था अथवा विशिष्ट घटना हो सकती है। इस विधि में व्यक्ति, परिवार, पास-पड़ोस, विद्यालय, डायरी, लेख, अन्य संस्था इत्यादि से प्राप्त प्रदत्त को संकलित करके विश्लेषण के आधार पर अध्ययन किया जाता है।

पियाजे (Piaget) ने तीन बच्चों के निरीक्षण के आधार पर सुप्रसिद्ध संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त को प्रस्तुत किया। फ्रायड (Freud) ने भी व्यक्ति अभिलेख तैयार करके मनोविश्लेषण के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। समाजीकरण, आक्रामकता, पूर्वाग्रह विकास इत्यादि के अध्ययन में व्यक्ति अध्ययन विधि का व्यापक उपयोग किया गया है।

व्यक्ति अध्ययन विधि के गुण/लाभ (Merits Advantages of Case Study Method)

व्यक्ति अध्ययन विधि के निम्नलिखित गुण उल्लेखनीय हैं—

१. व्यक्ति के जीवन की गहनता का विस्तृत चित्रण

२. सामान्यीकरण की विशेषता

३. परिकल्पना-निर्माण एवं सत्यापन में सहयोगी

४. विशिष्ट व्यक्ति एवं व्यवहार हेतु विशेषतः उपयोगी

५. सहायक विधि के रूप में उपयोगी

1 "The case study is a form of qualitative analysis involving the careful and complete observation of a person, a situation or an institution." —Biesanz, 1954

2 "Case study is a method of exploring and analysing the life of a social unit, be that unit a person, a family, an institution, a cultural group or even entire community."—P.V. Young

व्यक्ति अध्ययन विधि की सीमाएँ (Limitations of Case Study Method)

व्यक्ति अध्ययन विधि की निम्नलिखित उल्लेखनीय सीमाएँ हैं—

1. विश्वसनीयता एवं वैधता चुनौतीपूर्ण (जाँच अत्यन्त कठिन)
2. सामान्यीकरण में कठिनाई (सामान्यीकरण सीमित)
3. मितव्ययता (विशेषतः समय-सन्दर्भित) का अभाव
4. सीमित अध्ययन (सीमित इन गइयों पर अध्ययन के कारण)
5. अध्ययनकर्ता का पक्षपात (भावात्मक झुकाव एवं पूर्वाग्रह के प्रभाव के कारण)

व्यक्ति अध्ययन विधि का मूल्यांकन (Evaluation of Case Study Method)

व्यक्ति अध्ययन विधि के सन्दर्भित उपर्युक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रस्तुत विधि के कुछ गुण तथा दोष हैं। दोषों/सीमाओं को प्रशिक्षण द्वारा कम किया जा सकता है। अध्ययन की वैधता बढ़ाने के लिए अनेक अध्ययनकर्ताओं द्वारा विभिन्न माध्यमों/स्रोतों से सूचनाओं को एकत्रित करना चाहिए। प्रदत्त संग्रह से सम्बन्धित साक्ष्यों को संभालकर रखना चाहिए। सतर्कतापूर्ण एवं सुव्यवस्थित रूप में इस विधि का प्रयोग उपादेय है। वस्तुतः, व्यक्ति अध्ययन विधि का उपयोग एक सहायक विधि के रूप में किया जा सकता है।